श्री
निजानन्द
स्वामी

चित्रकथा

जागो जागो

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
नकुड़ रोड, जि. सहारनपुर, उ.प्र.

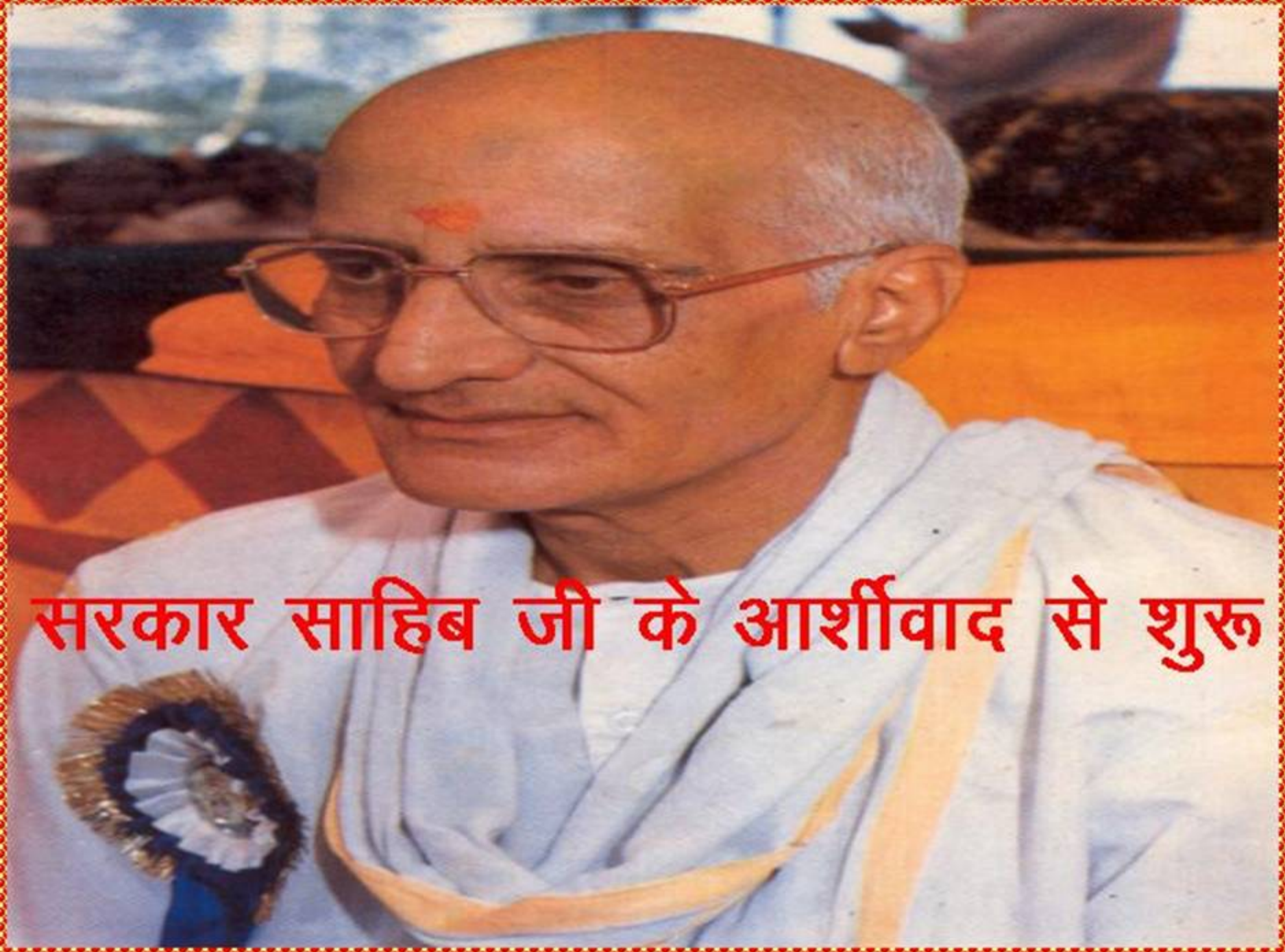
सरकार साहिब जी के आर्शीवाद से शुरू

द्वापर युग में हस्तिनापुर में चन्द्रवंशी राजा प्रतीप के दो पुत्र थे, देवापि और शान्तनु। बड़ा भाई होने पर भी देवापि को रूग्ण होने के कारण राज सिंहासन नहीं मिला और शान्तनु का राज्याभिषेक हो गया।

देवापि ने तप करने का फैसला किया और राज्य छोड़ कर तप करने के लिए हिमालय की कन्दराओं की ओर रवाना हो गए।

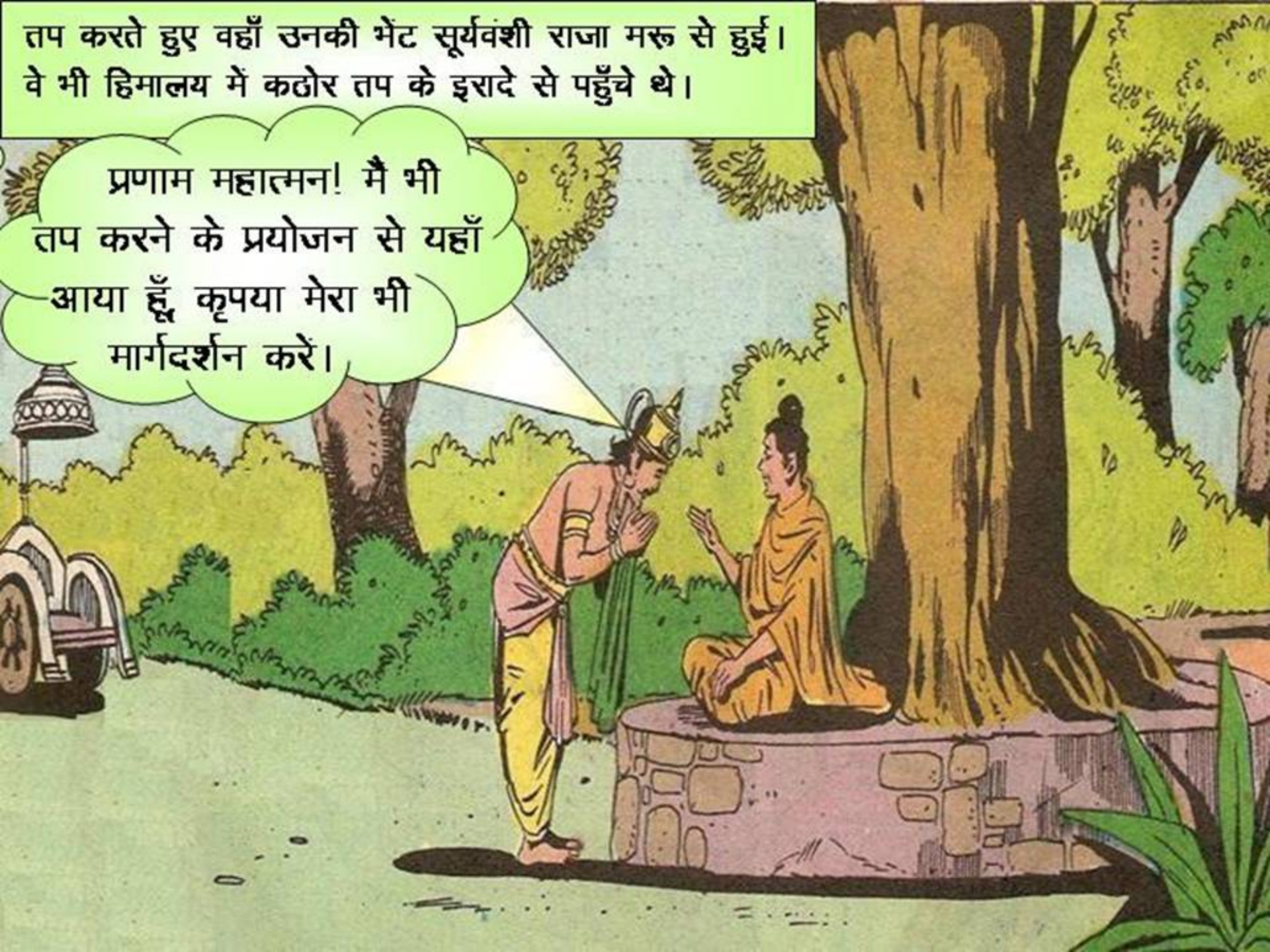
तप करते हुए वहाँ उनकी भेंट सूर्यवंशी राजा मरू से हुई। वे भी हिमालय में कठोर तप के इरादे से पहुँचे थे।
प्रणाम महात्मन! मै भी तप करने के प्रयोजन से यहाँ आया हूँ, कृपया मेरा भी मार्गदर्शन करें।

तप करते करते दोनों ही समाधिस्थ हो गए। समाधि अवस्था में ही उन्हें अनुभव हुआ कि आने वाले इस 28वें कलियुग में सच्चिदानन्द परब्रह्म दो तनों में विराजमान होकर लीला करेंगे। दोनों के मन में यहीं इच्छा उत्पन्न हुई कि परब्रह्म हम दोनों के द्वारा धारण किए हुए तनों में ही लीला करें।

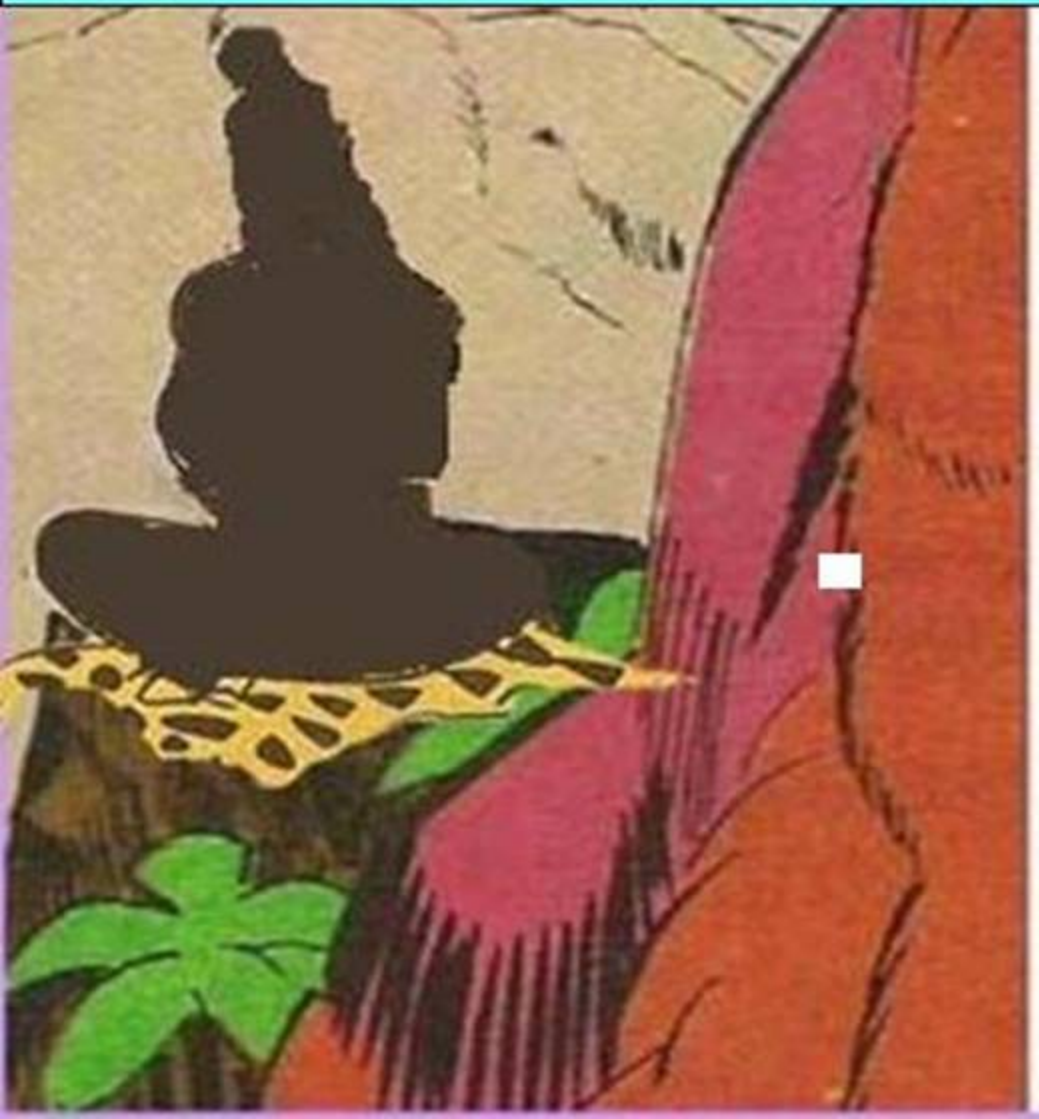

तपस्या से खुश होकर विष्णु भगवान ने देवापि को दर्शन दिया

'तथास्तु'

बोलो वत्स! क्या चाहिए ?

हे भगवन् ! मुझे 28वें कलियुग में दुबारा मनुष्य तन की प्राप्ति हो और परब्रह्म मेरे तन में ही बैठ कर अपनी लीला करें, आपसे बस यहीं प्रार्थना है।

तपस्या से खुश होकर विष्णु भगवान ने मरु को भी दर्शन दिया ।

'तथास्तु'

बोलो वत्स! क्या चाहिए ?

हे भगवन् ! मुझे 28वें कलियुग मे दुबारा मनुष्य तन की प्राप्ति हो और परब्रह्म मेरे तन मे ही बैठ कर लीला करें। आपसे बस यहीं प्रार्थना है,कृपया मुझे यहीं वरदान दीजिए।

अब उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। कलाप गाँव में रह कर वे 28वें कलियुग में मानव तन धारण करने के लिए उचित समय की प्रतिक्षा करने लगे।

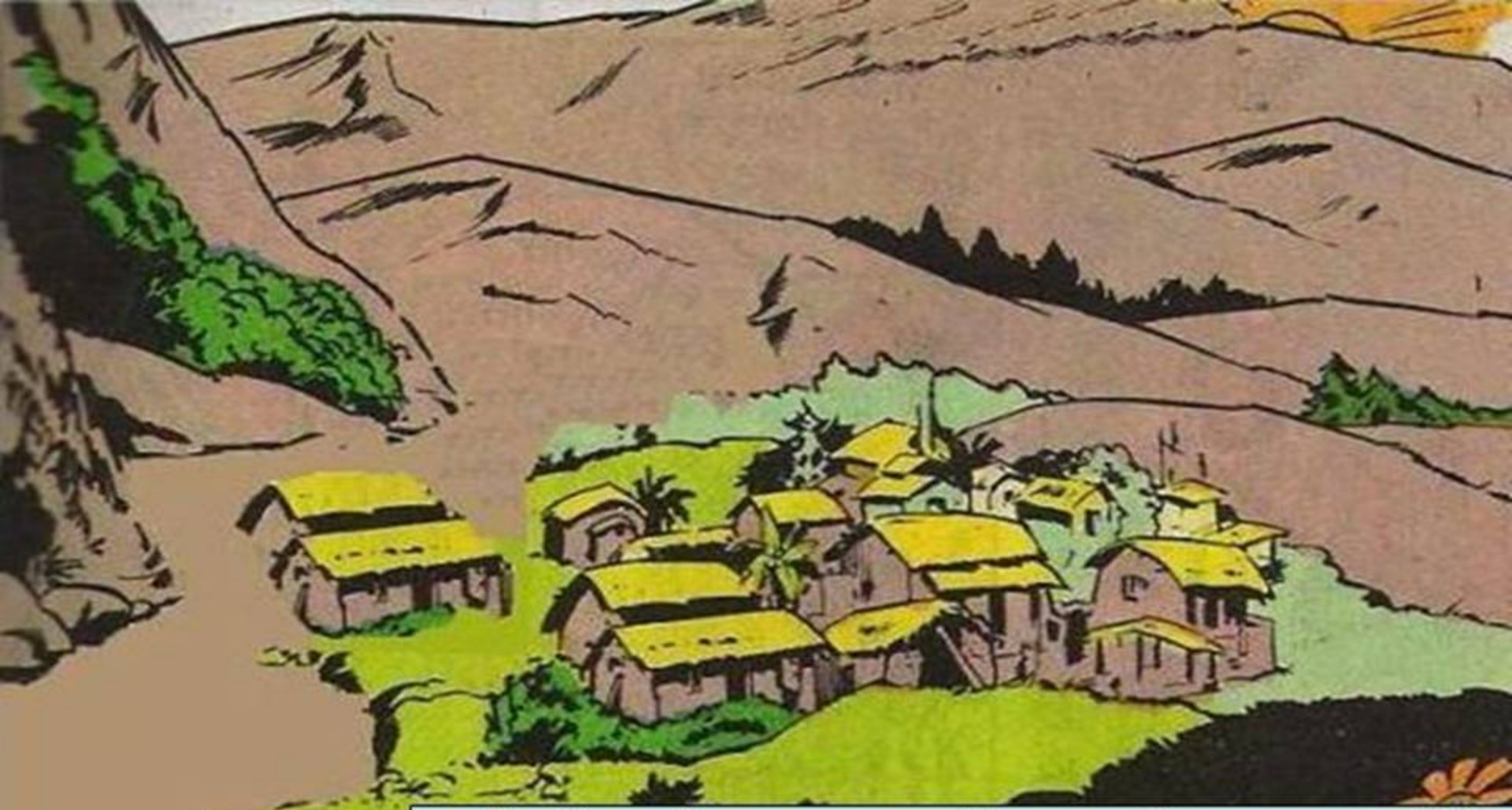

28वें कलियुग में सम्वत् 1638 आश्विन मास में शुक्ल पक्ष चतुर्दशी को मारवाड़ के रेतीले प्रदेश उमरकोट नामक गाँव में देवापि ने एक अति सुन्दर बालक के रूप में जन्म लिया। फिर, इसके अन्दर सच्चिदानन्द परब्रह्म की आनन्द शक्ति श्री श्यामा जी की आत्मा ने प्रवेश किया।

मत्तू मेहता जी के घर माता कुँवरबाई की कोख से जन्मे (देवापि) बालक के मुख पर बहुत तेज झलक रहा था।

परिवार के पुरोहित को घर पर बुलाया गया

देवचन्द्रजी को सब बहुत प्यार करते थे

जब 11वां वर्ष लगा तो देवचन्द्र जी सोचने लगे कि

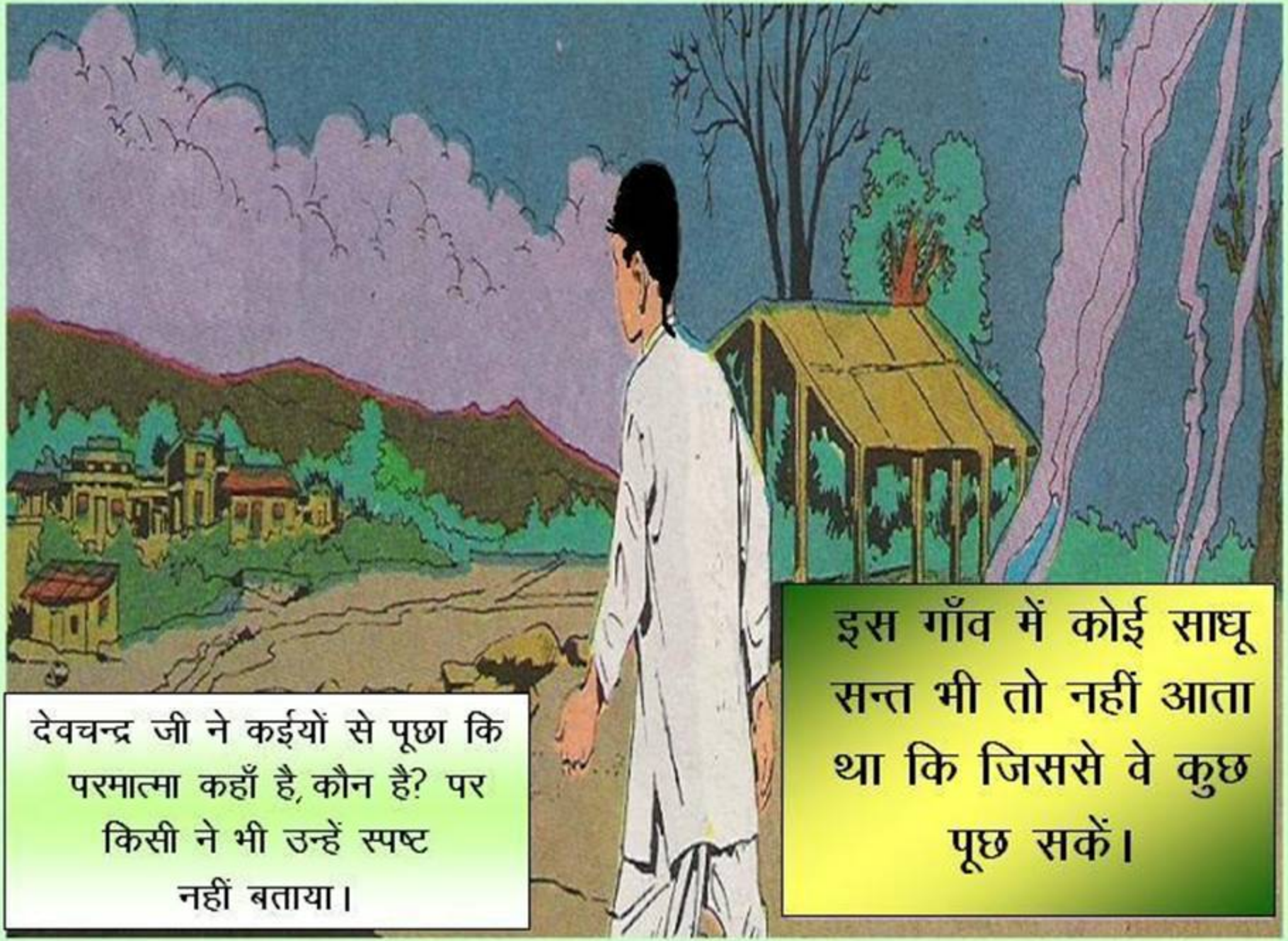
देवचन्द्र जी ने कईयों से पूछा कि परमात्मा कहाँ है, कौन है? पर किसी ने भी उन्हें स्पष्ट नहीं बताया।
इस गाँव में कोई साधू सन्त भी तो नहीं आता था कि जिससे वे कुछ पूछ सकें।

सभी की बातें सुन.....बड़े परेशान से होकर

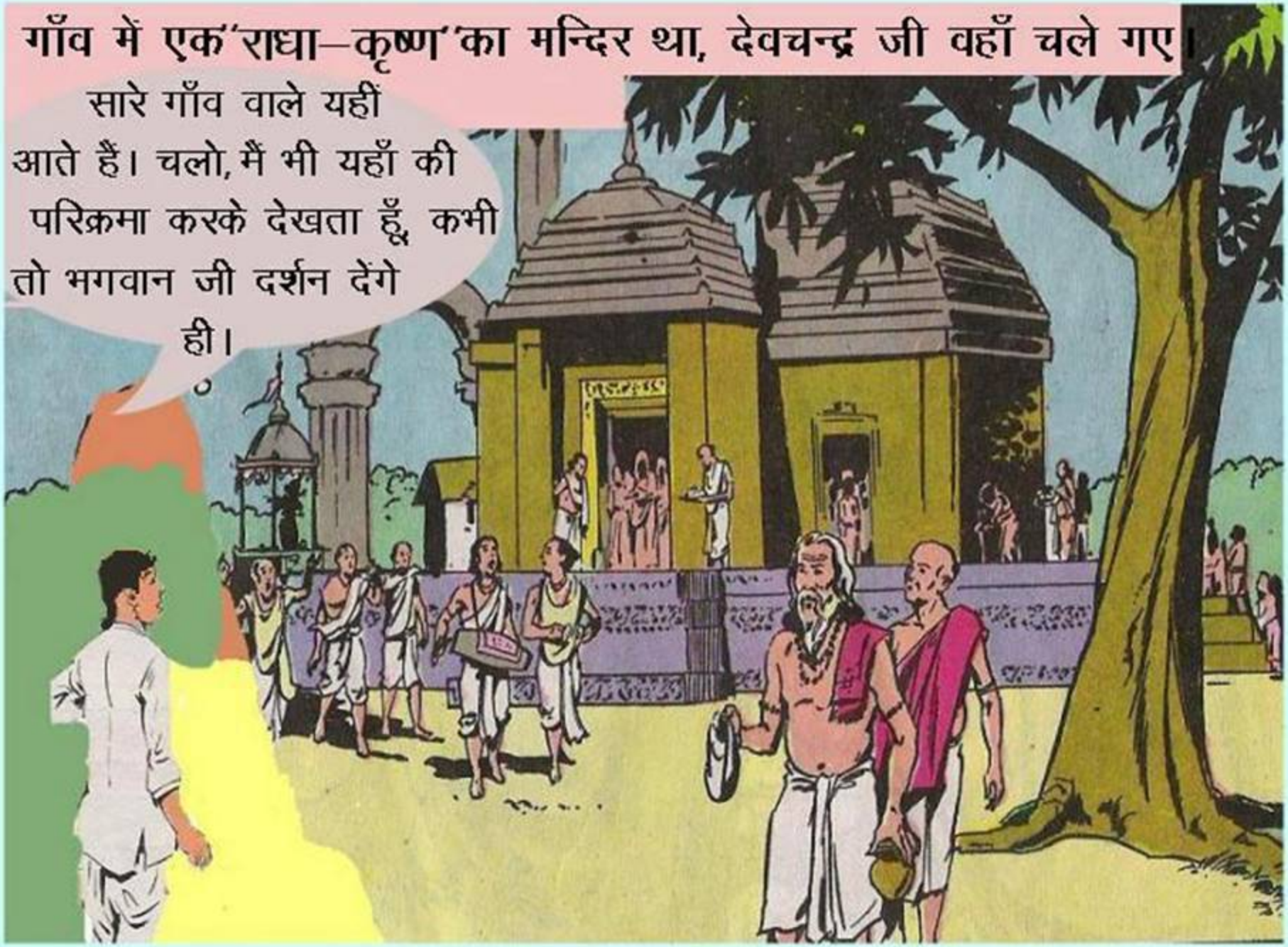
गाँव में एक 'राधा–कृष्ण' का मन्दिर था, देवचन्द्र जी वहाँ चले गए।
सारे गाँव वाले यहीं आते हैं। चलो, मैं भी यहाँ की परिक्रमा करके देखता हूँ, कभी तो भगवान जी दर्शन देंगे ही।

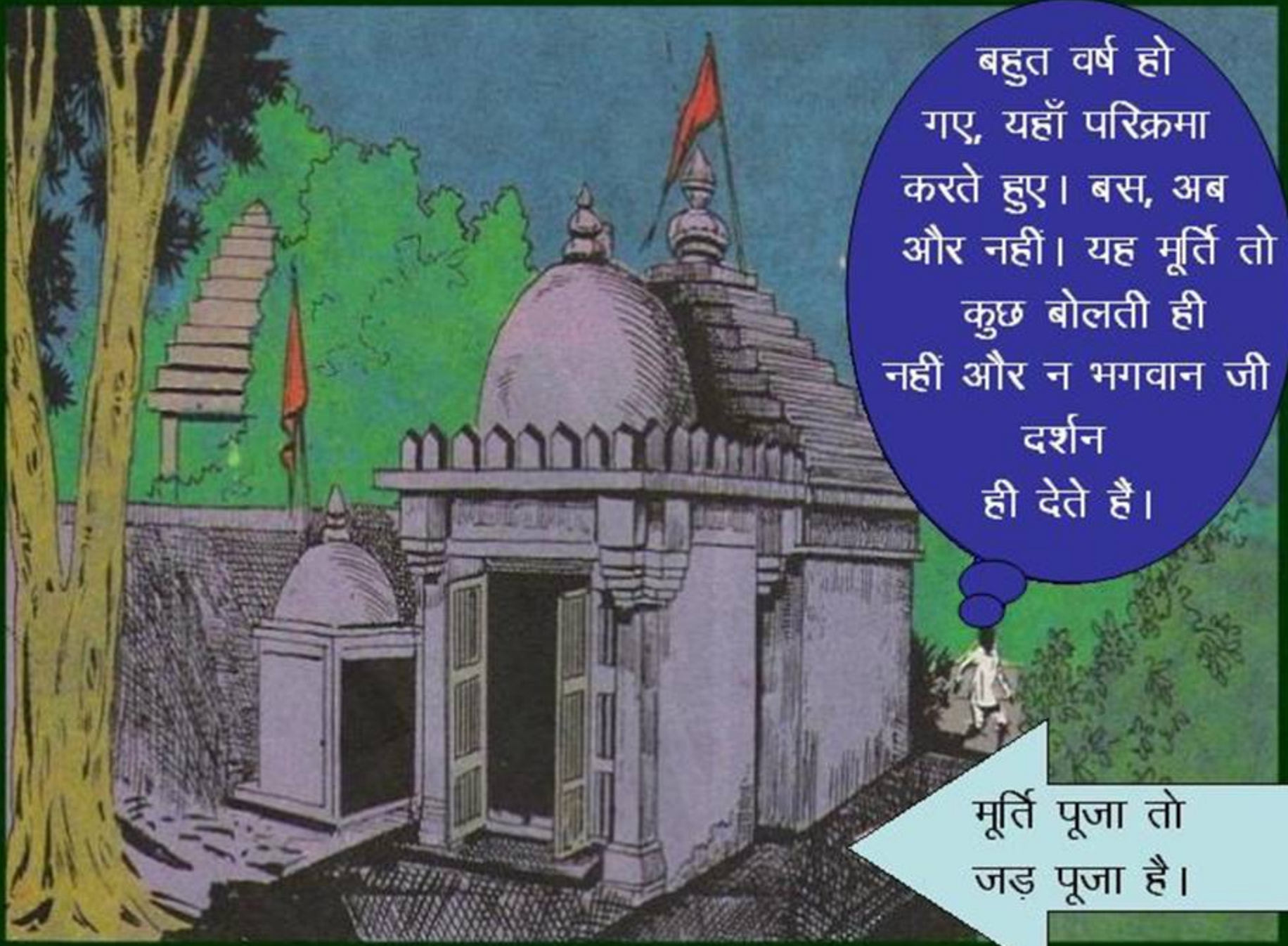
बहुत वर्ष हो गए, यहाँ परिक्रमा करते हुए। बस, अब और नहीं। यह मूर्ति तो कुछ बोलती ही नहीं और न भगवान जी दर्शन ही देते हैं।
मूर्ति पूजा तो जड़ पूजा है।

एक बार पिता जी मुझे कच्छ ले गए थे। वहाँ बहुत सारे साधू सन्त भी थे और मन्दिर भी थे। वहाँ परमेश्वर की प्राप्ति अवश्य ही हो सकती है।

देवचन्द्र जी अपने पिता जी से फिर नित्य ही कच्छ जाने की बात कहने लगे।

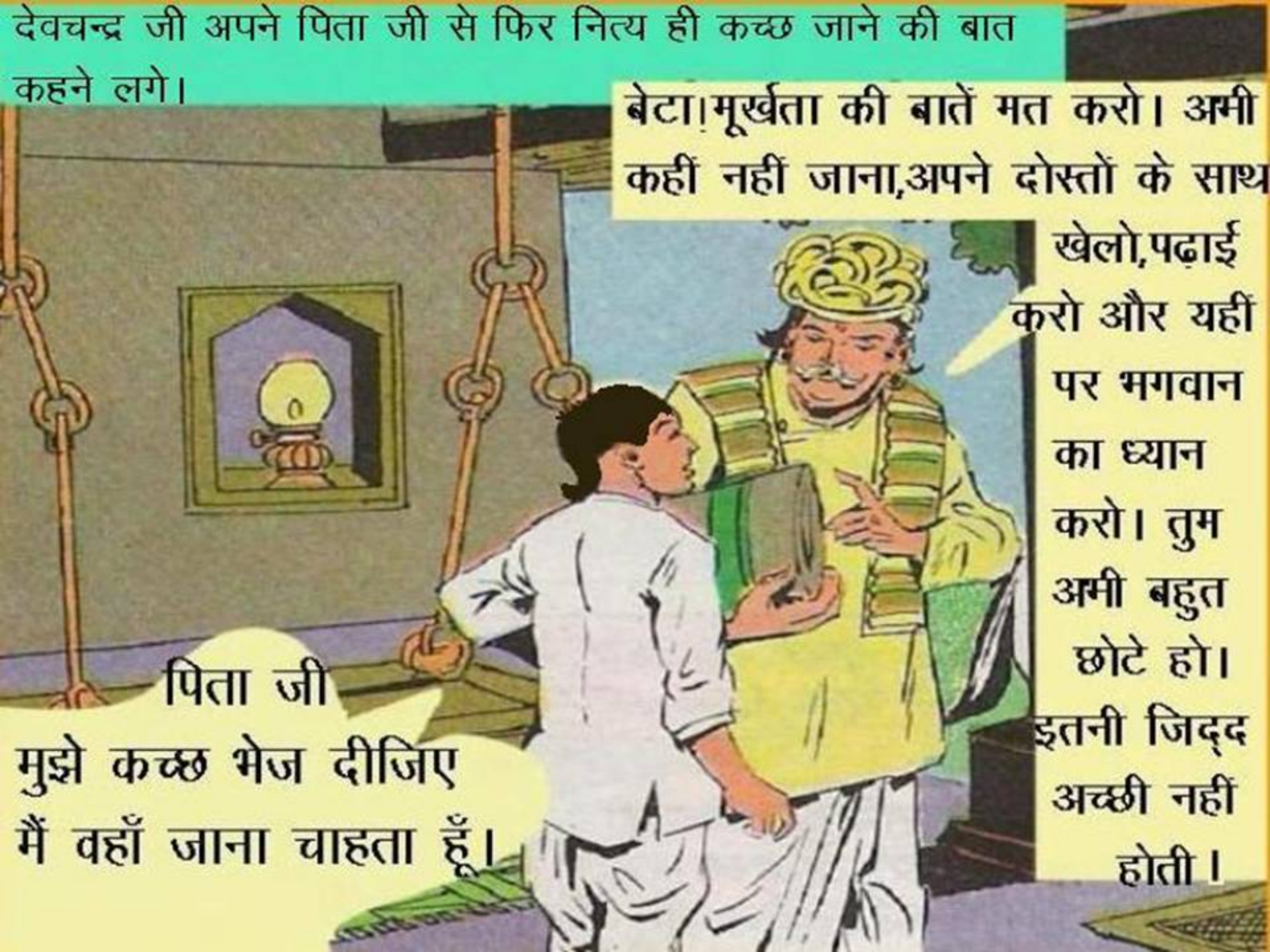

पर देवचन्द्र जी के मन को शान्ति कहाँ.....?

तभी देवचन्द्र जी ने सुना कि उमरकोट के राजा का मन्त्री राजकुमार की शादी के लिए 200 सवार लेकर कच्छ जा रहा है, तो तुरन्त वे मन्त्री से बात करने के लिए वहाँ पहुँच गए।

जी ! मेरे पास तो कोई भी सवारी नहीं है।
तो, फिर तुम हमारे साथ नहीं चल सकते बेटा..।
तब देवचन्द्र जी सोच में पड़ गए कि मैं भला इनसे क्यों पुछूँ ? बस इनके पीछे–पीछे दौड़ते हुए चला जाऊँगा.....

घर आकर देवचन्द्र जी ने रास्ते के लिए सामान बांधना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने पास जल का लोटा, पैसे, गठड़ी में कुछ कपड़े, खाने का सामान और एक कटार भी रख ली, क्योंकि रास्तें में डाकुओं का भी डर था।

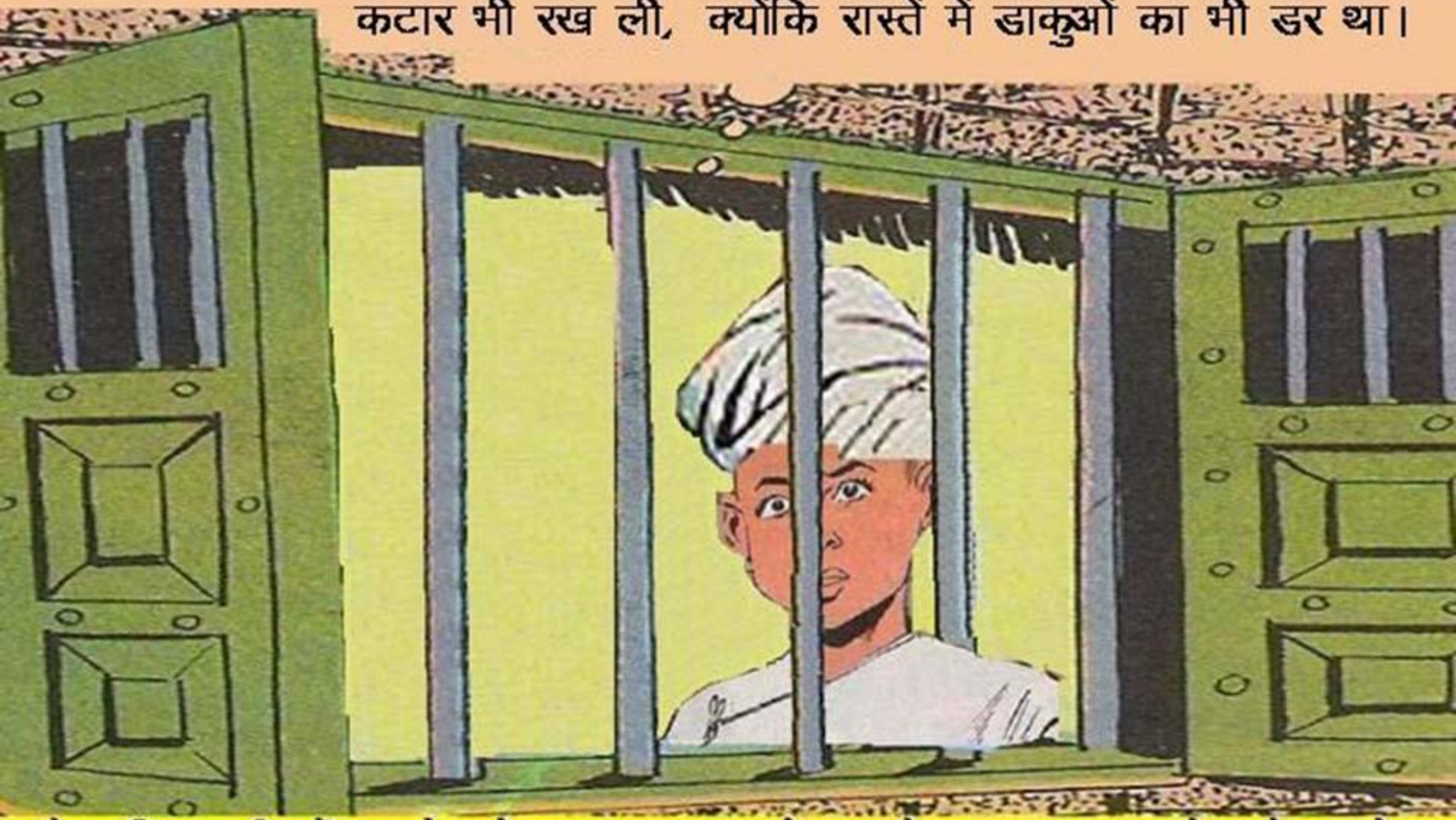

और खिड़की में खड़े होकर बारात के जाने का रास्ता देखने लगे।

जल्दी ही बारात निकलने का शोर सुनाई देने लगा।

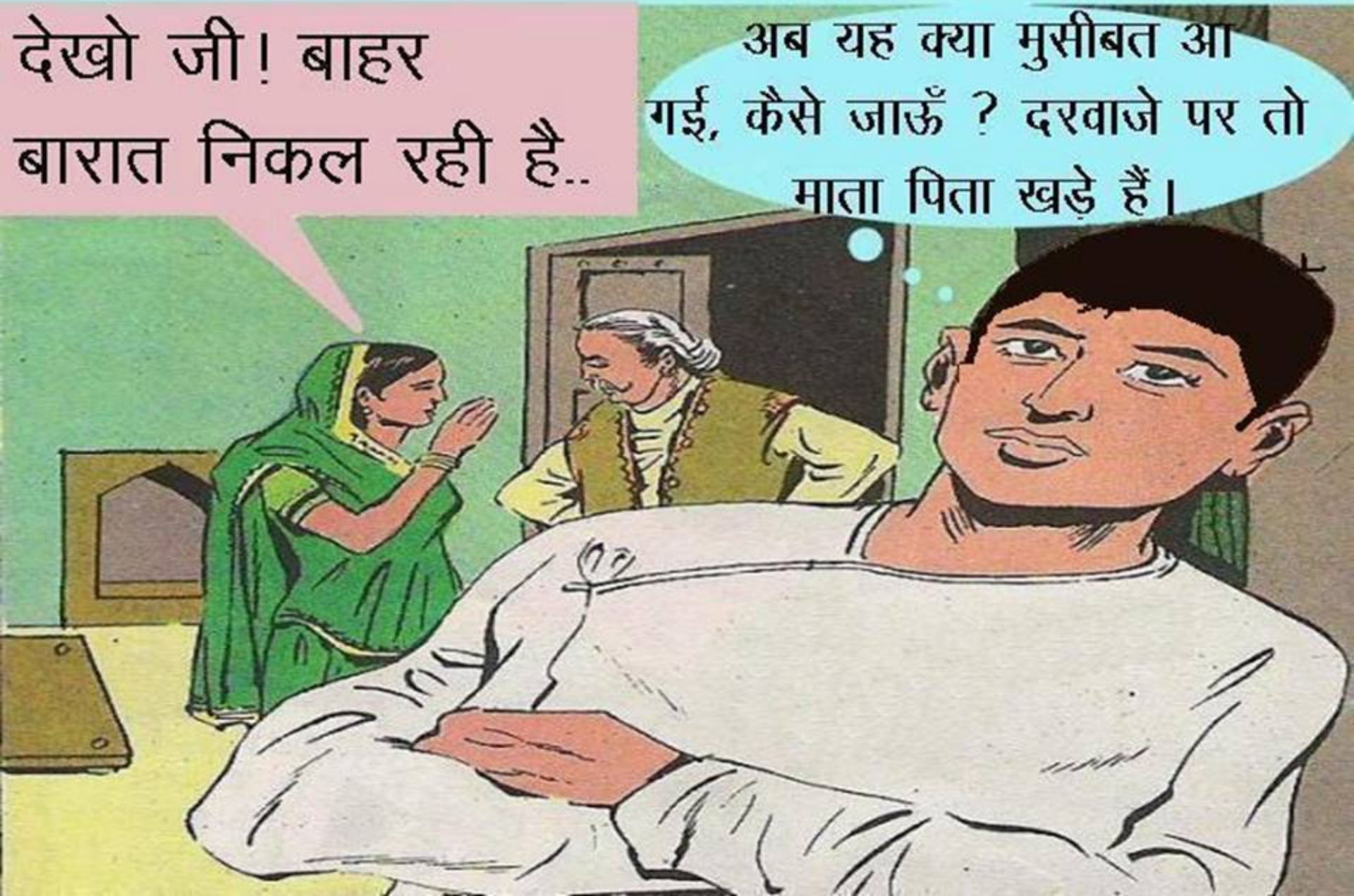

मुझे सड़क छोड़ कर पगडंडी से जाना चाहिए।
कहीं किसी ने देख लिया तो पिता जी से कह देगा।

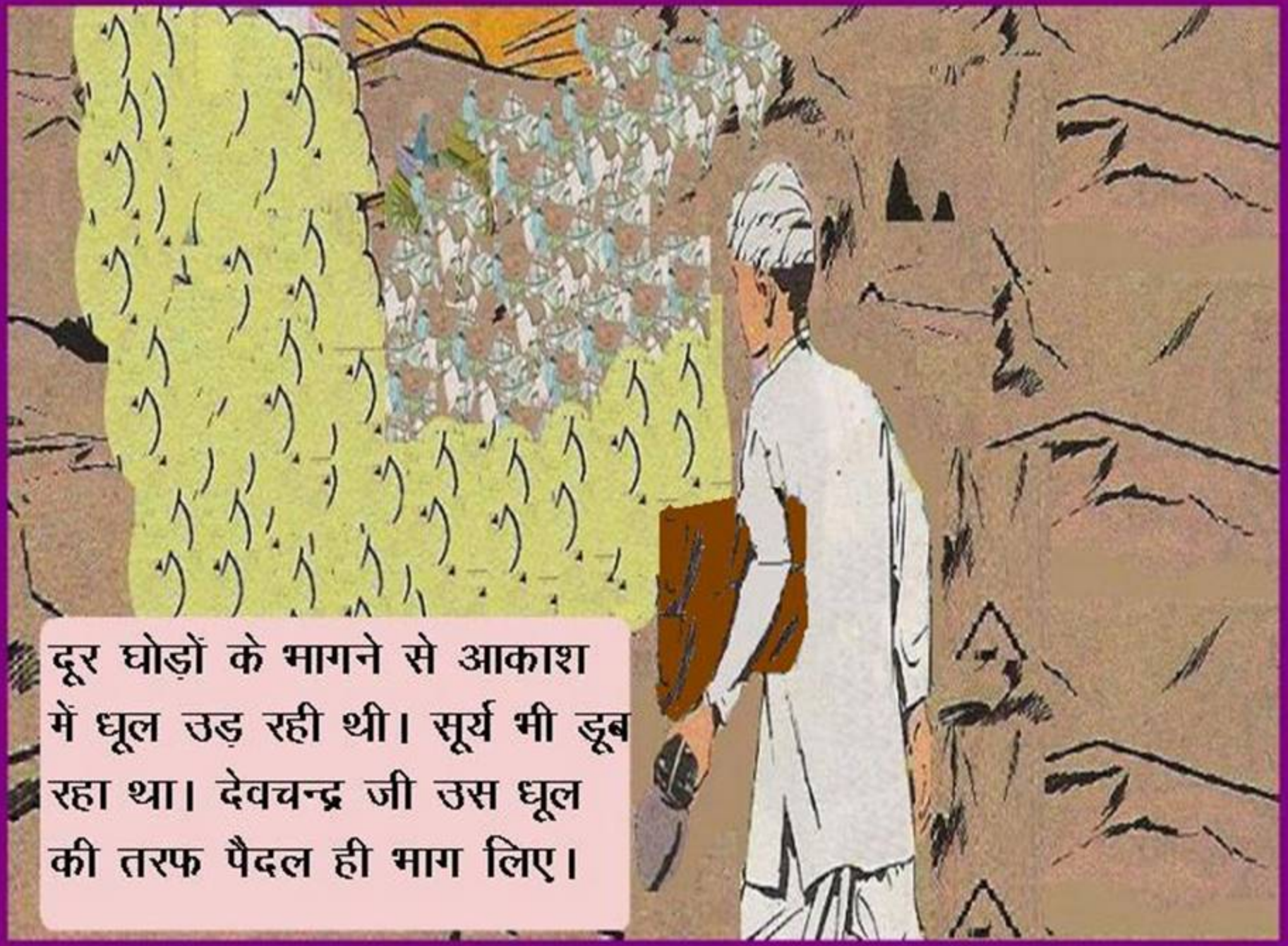
दूर घोड़ों के भागने से आकाश
में धूल उड़ रही थी। सूर्य भी डूब
रहा था। देवचन्द्र जी उस धूल
की तरफ पैदल ही भाग लिए।

चलते चलते रात हो गई थी, रेत उड़ने के कारण कुछ नजर भी नहीं आ रहा था और घुड़सवार भी काफी आगे निकल चुके थे।छोटी उमर होने के कारण देवचन्द्रजी को डर भी लग रहा था। भागते भागते उनके पेट में दर्द शुरु हो गया। तभी किसी ने आवाज दी...

श्री राज जी महाराज खुद एक पठान का रूप धर कर आए और बोले....
ठहरो
ए बालक! इतनी रात को कहाँ जा रहे हो...?

देवचन्द्र जी बहुत डर गए
ए बालक! चलो, यह कमर से कटार निकाल कर मुझे दे दो और अपनी यह गढड़ी भी उतार कर नीचे रख दो। चलो, जल्दी से जमीन पर लेट जाओ।
श्री राज जी महाराज ने अपना नूरी पटुका जमीन पर बिछा दिया और देवचन्द्र जी को उस पर लिटा दिया।
अवश्य ही यह कोई चोर डाकू है जो मुझे मार डालेगा।

श्री राज जी ने देवचन्द्र जी की एक जाँघ पर अपने पाँव का बोझ देकर पूछा...।
जी, थोड़ा सा है।
ए बालक! क्या तुम्हारा दर्द अब कुछ कम हुआ ?
लगता है, यह मारेगा तो नहीं।

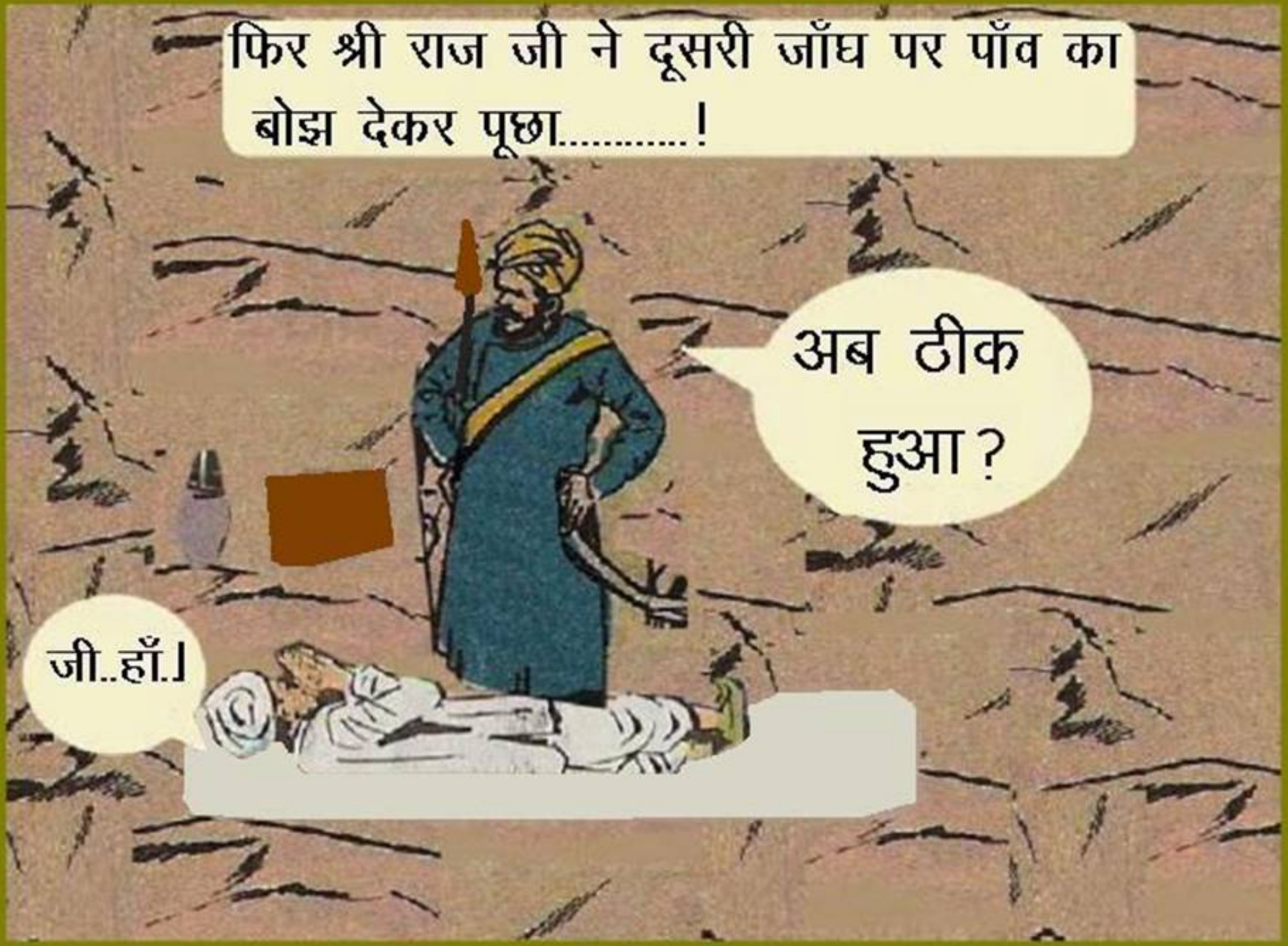
फिर श्री राज जी ने दूसरी जाँघ पर पाँव का बोझ देकर पूछा.....!
अब ठीक हुआ?
जी..हाँ.।

श्री राज जी ने फिर अपनी पिछौरी देवचन्द्र जी की कमर पर बाँध दी और सामान की गठड़ी खुद अपनी पीठ पर उठाकर चल दिए।
अब पता चला कि इसने मुझे क्यों नहीं मारा? यह मुझे अपना गुलाम बनाकर मुझसे अपना काम करवाएगा।

रास्ते में पठान रुपी श्री राज जी ने देवचन्द्र जी से उनके कुटुम्ब के बारे में पूछना शुरु कर दिया
तुम्हारे माता पिता का क्या नाम है,क्या काम करते हैं..? कौन सा गाँव है

एक जगह खड़े होकर
श्री राज जी ने गठड़ी
देवचन्द्र जी को दे दी और पिछौरी
वापस लेकर कहने लगे कि.....
इतने में रास्ता
कैसे कट
गया, पता ही
नहीं चला।
वह ...देखो ! कहीं
तुम्हारे साथी वे तो
नहीं है।
हाँ ...!
वे हीं हैं।

देवचन्द्र जी इतना कहकर जैसे ही पीछे मुड़े तो पठान गायब...., तब वे उन्हें याद कर विलाप करने लगे।
निश्चय ही ये मेरे खाविंद थे, अब ये कहाँ जायेंगे? इन्हें तो मैं खोज कर ही रहूँगा।

फिर देवचन्द्र जी जहाँ बरात रूकी थी, वहाँ पहुँच कर वज़ीर से मुलाकात करते हैं।

जैसे ही देवचन्द्र जी मन्त्री के पास गए तो उसे बहुत हैरानी हुई।

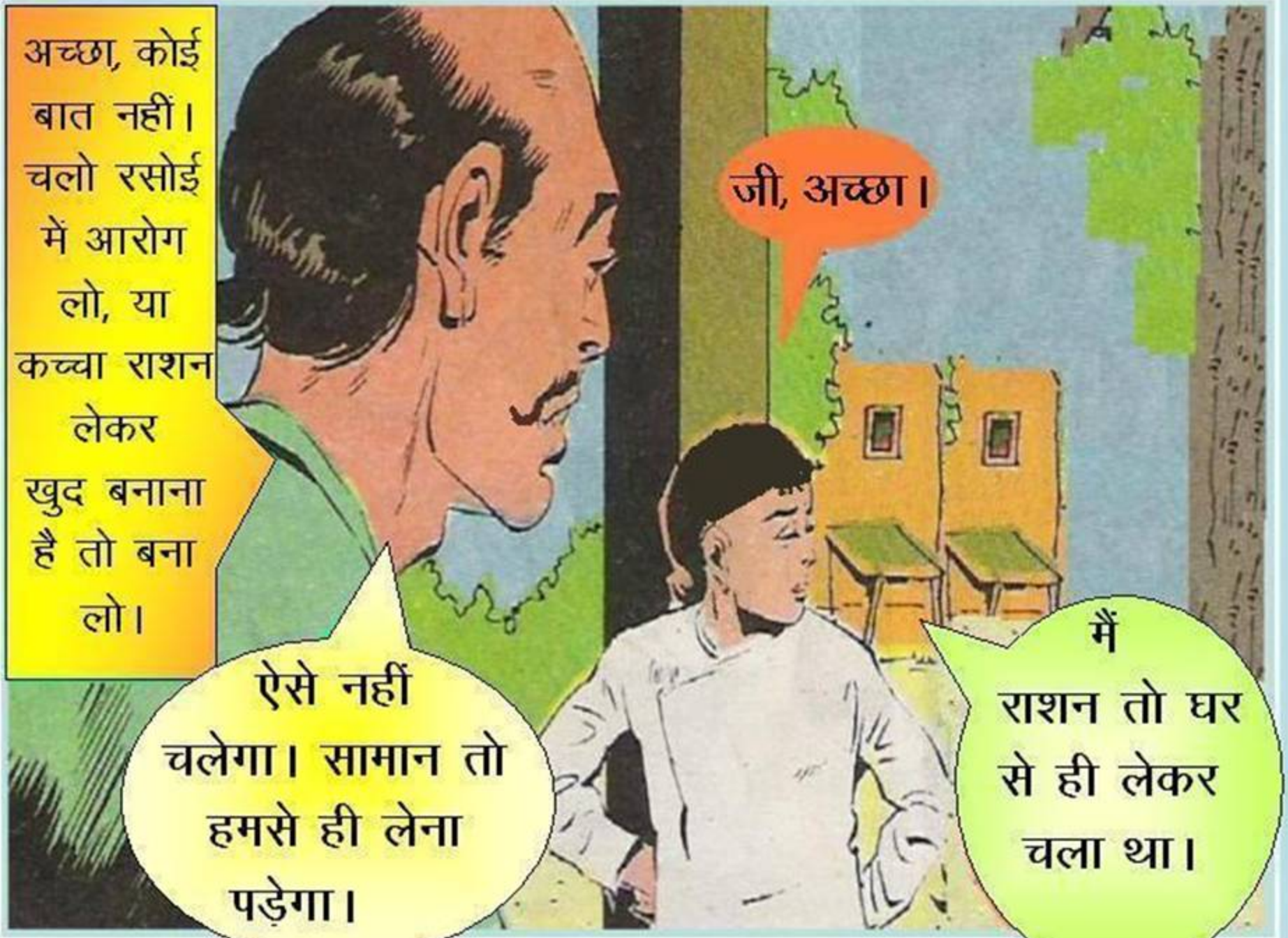
अच्छा, कोई बात नहीं। चलो रसोई में आरोग लो, या कच्चा राशन लेकर खुद बनाना है तो बना लो।
जी, अच्छा।
ऐसे नहीं चलेगा। सामान तो हमसे ही लेना पड़ेगा।
मैं राशन तो घर से ही लेकर चला था।

रसोई घर से सामान लेकर देवचन्द्र जी ने अपनी अलग से रसोई बनाई और.....

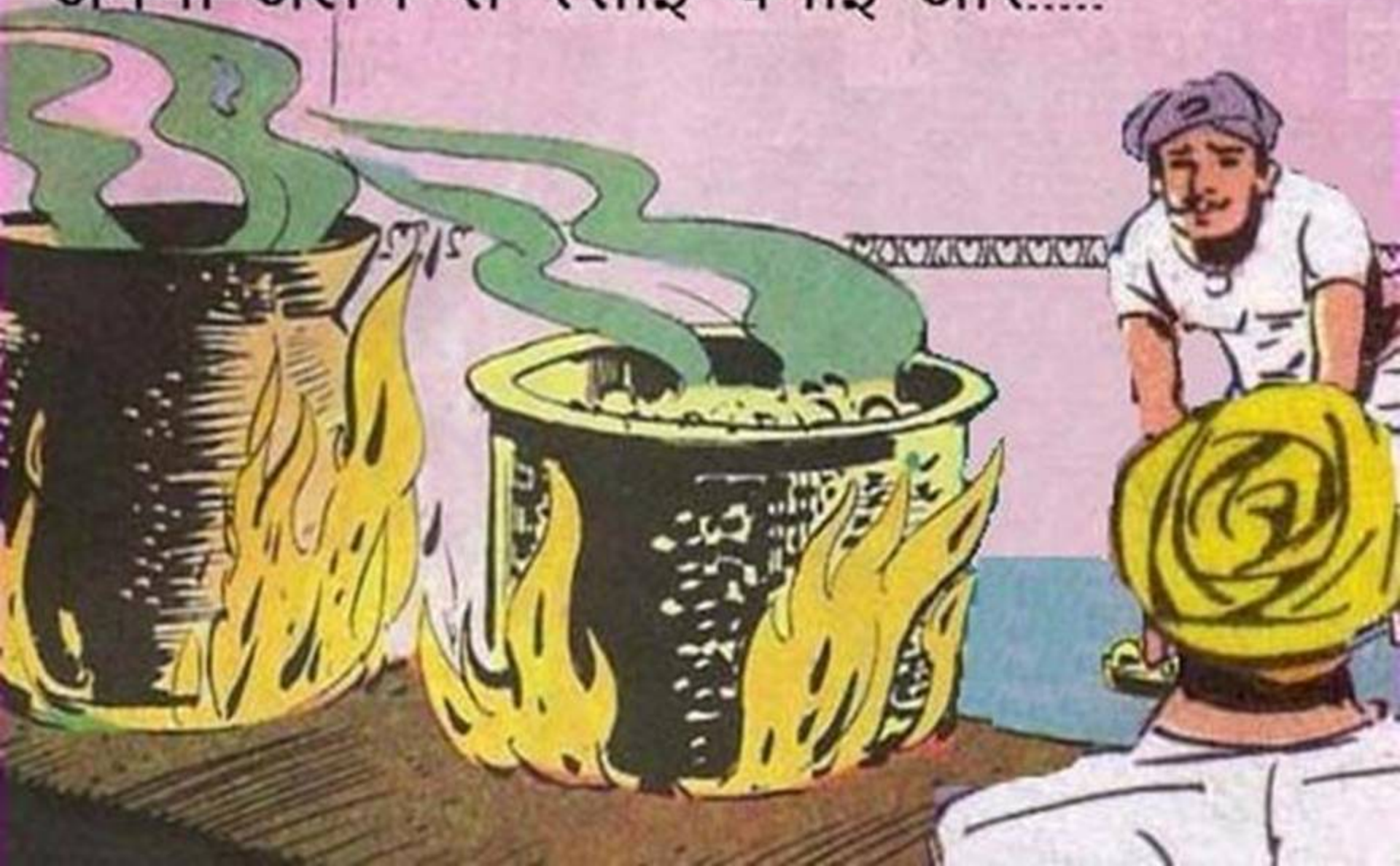

खाना पका कर देवचन्द्र जी अपने इष्ट (पठान) को भोग लगाने लगे।

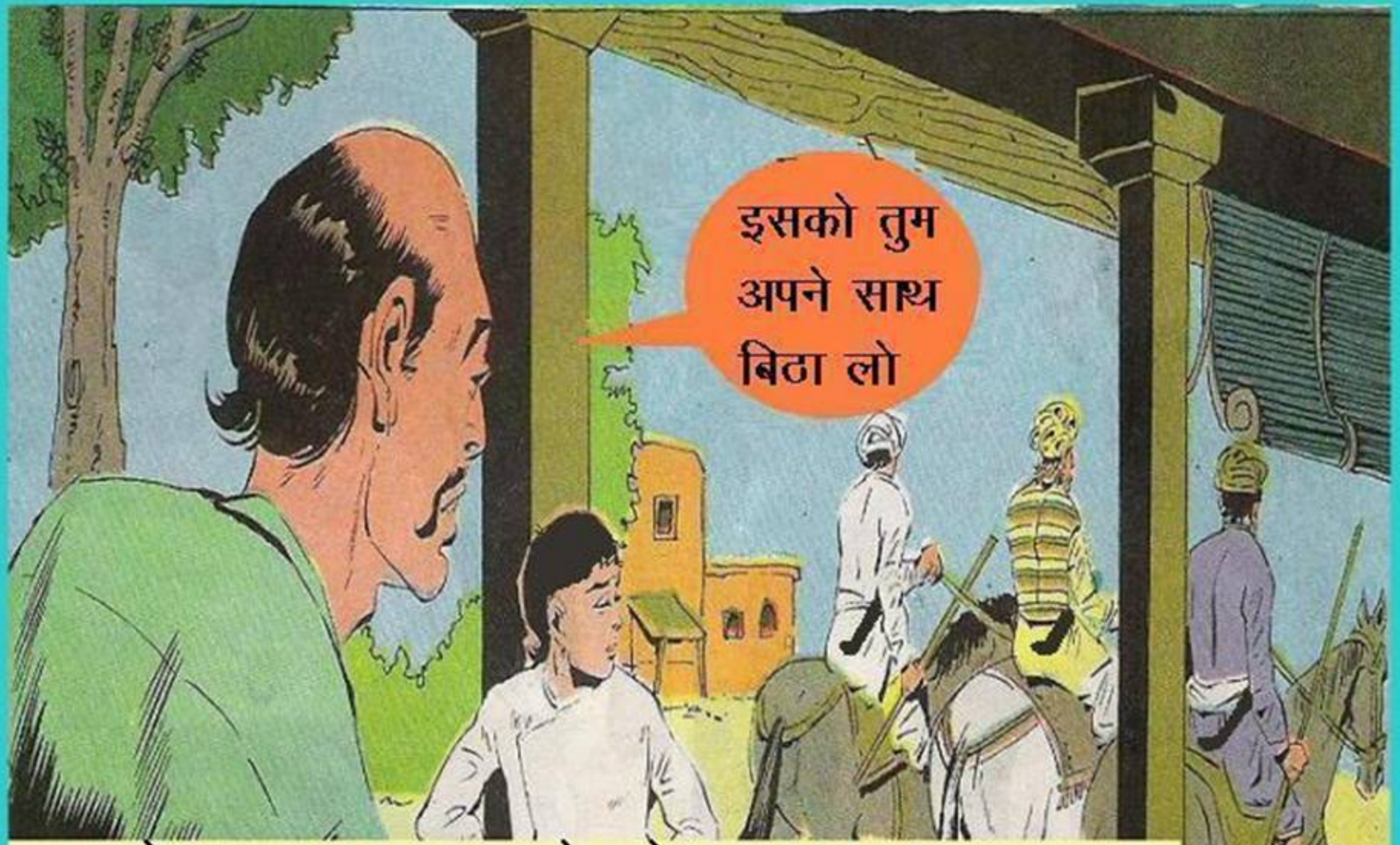

थोड़ा आराम करने के बाद सब
कच्छ के लिए रवाना होते हैं।

कच्छ पहुँच कर देवचन्द्रजी
खोज के लिए मन्दिरों में
जाते हैं और सबसे पूछते है।

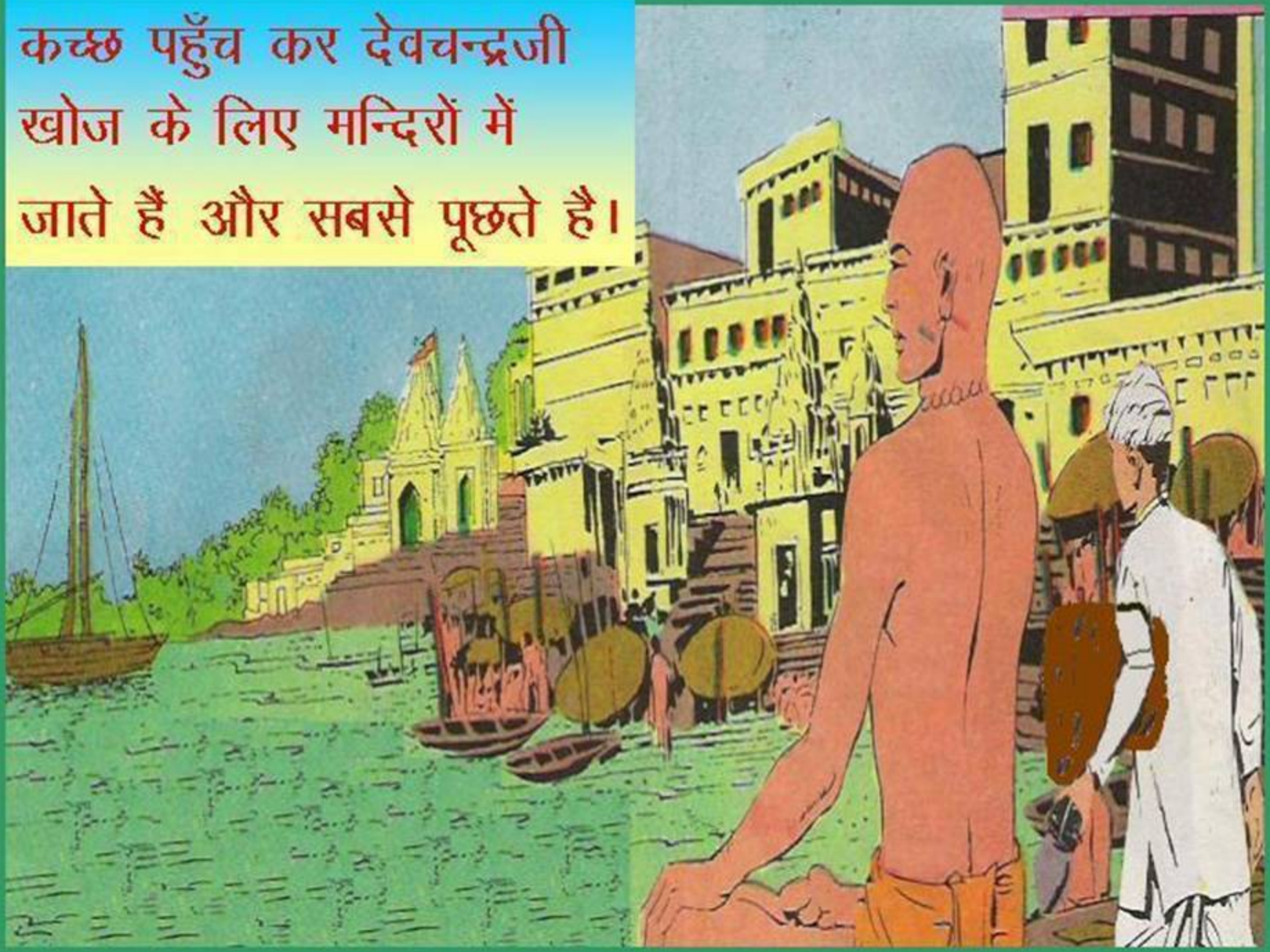

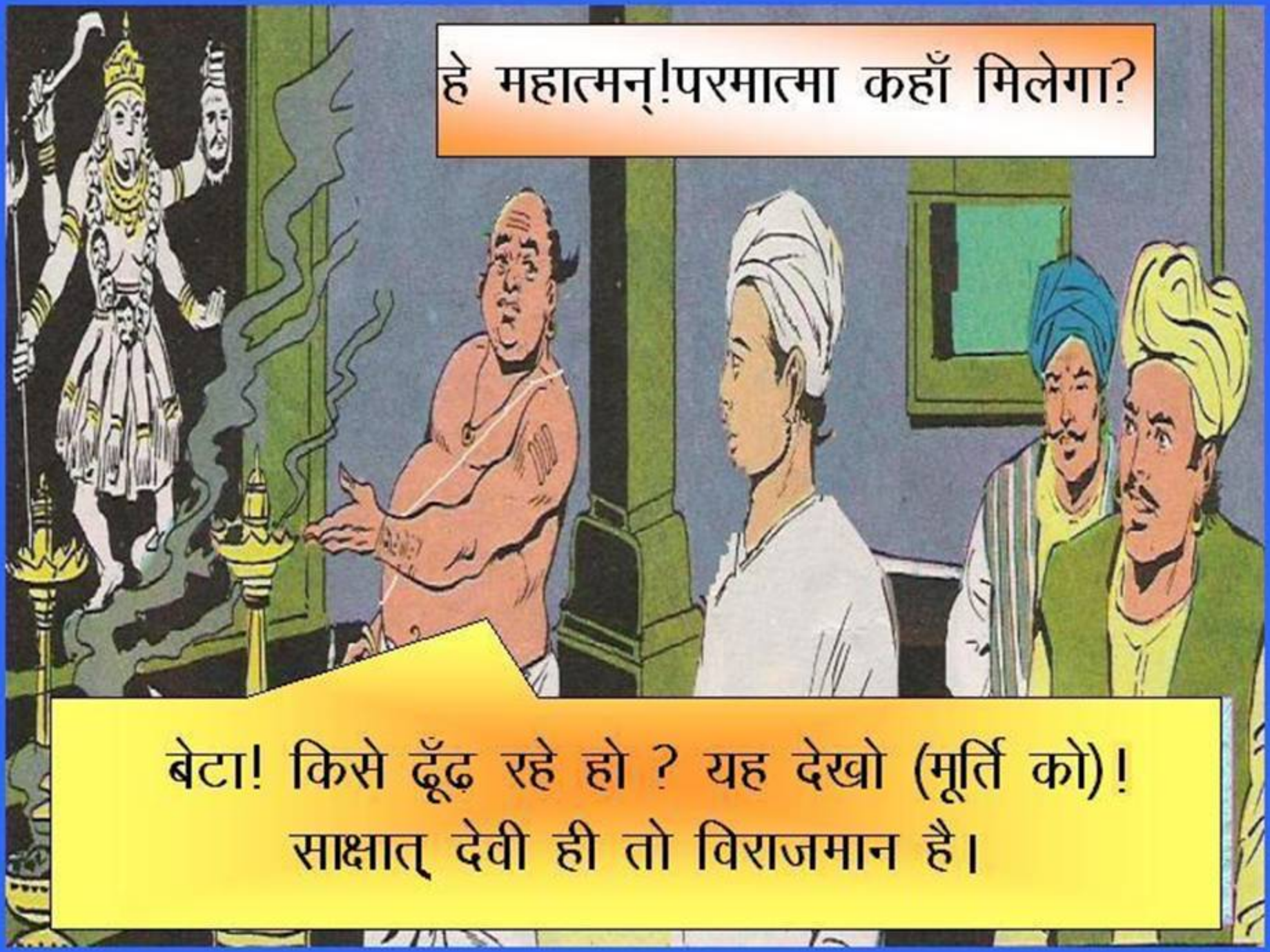
हे महात्मन्!परमात्मा कहाँ मिलेगा?
बेटा! किसे ढूँढ रहे हो ? यह देखो (मूर्ति को)!
साक्षात् देवी ही तो विराजमान है।

देवचन्द्र जी जान चुके थे कि मूर्ति पूजा जड़ पूजा है,इससे परमात्मा नहीं मिलते, इसलिए वे सन्यासियों के पास खोज के लिए चल पड़े।

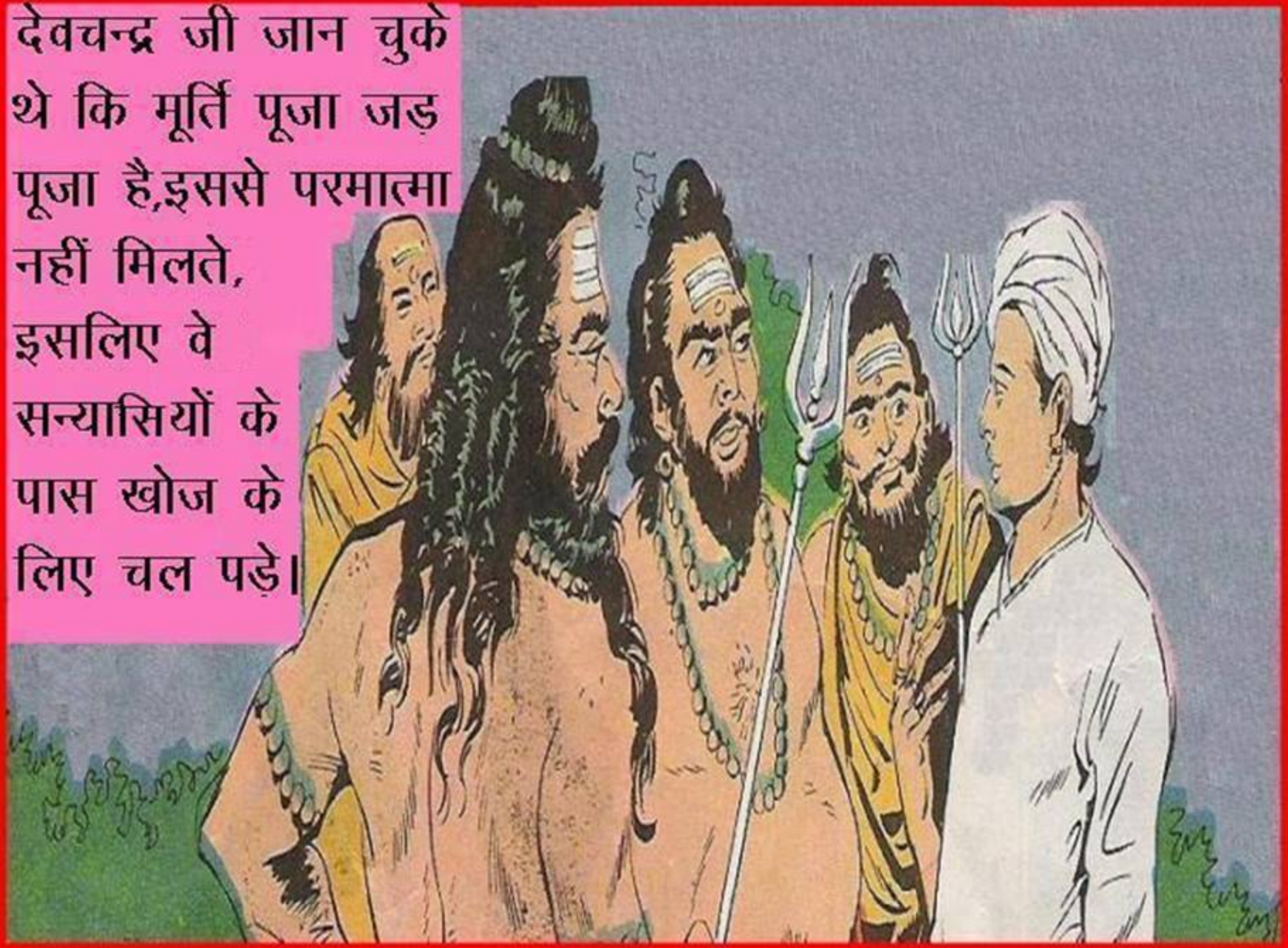

फिर राजा के राजगुरू के पास गए, जो नाथ सम्प्रदाय के चमत्कारी महात्मा थे। वहाँ उन्हें हठयोग की चमत्कारिक सिद्धियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला।

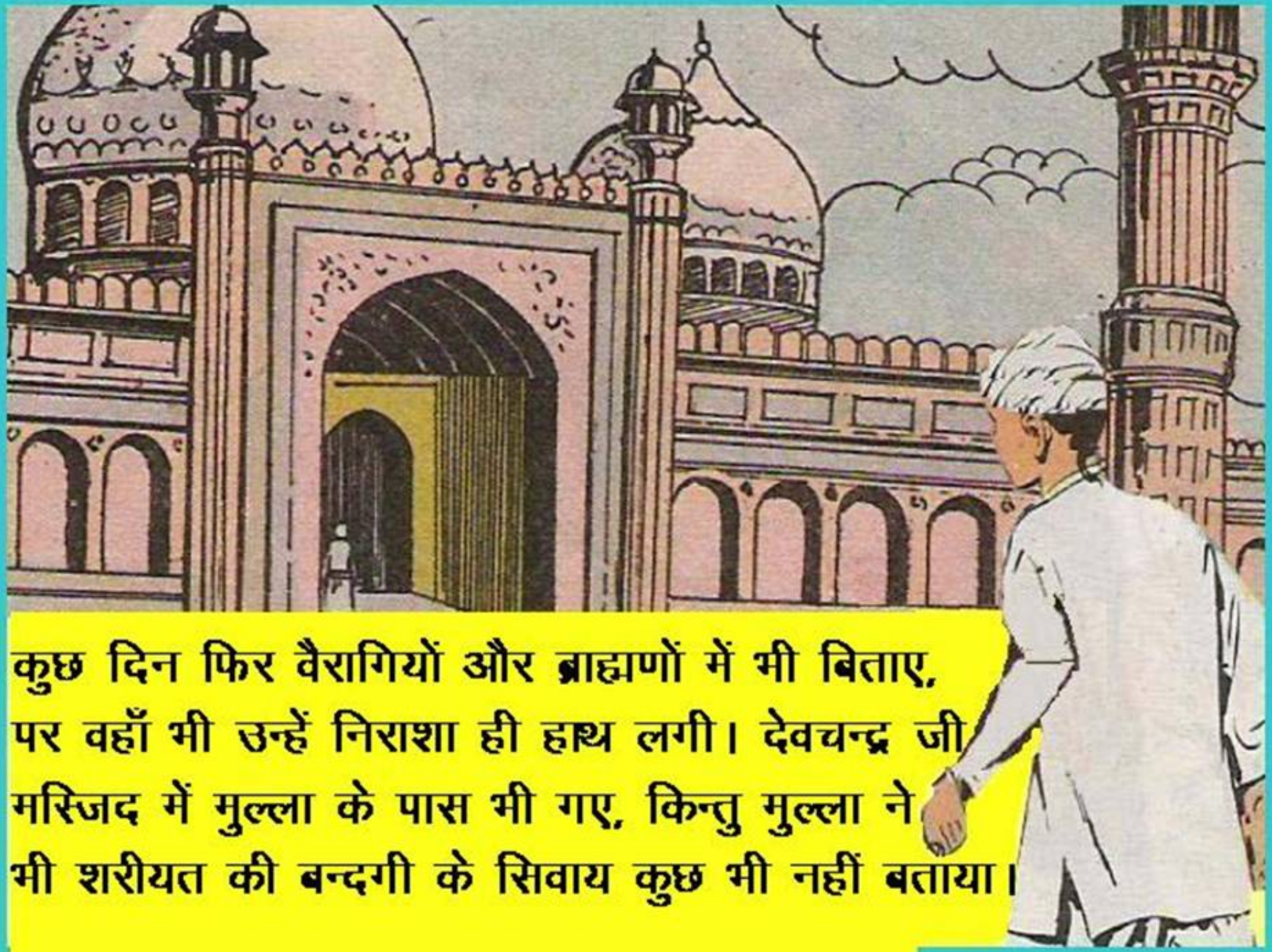

कुछ दिन फिर वैरागियों और ब्राह्मणों में भी बिताए, पर वहाँ भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी। देवचन्द्र जी मस्जिद में मुल्ला के पास भी गए, किन्तु मुल्ला ने भी शरीयत की बन्दगी के सिवाय कुछ भी नहीं बताया।

छोटी उम्र में ही बहुत अधिक कसनी करके श्री देवचन्द्र जी सब जगह से निराश हो गये। अन्त में वे भोजनगर, जहाँ हरिदास जी रहते थे, आ गए। हरिदास जी राधावल्लभी मार्ग के अनुयायी थे।

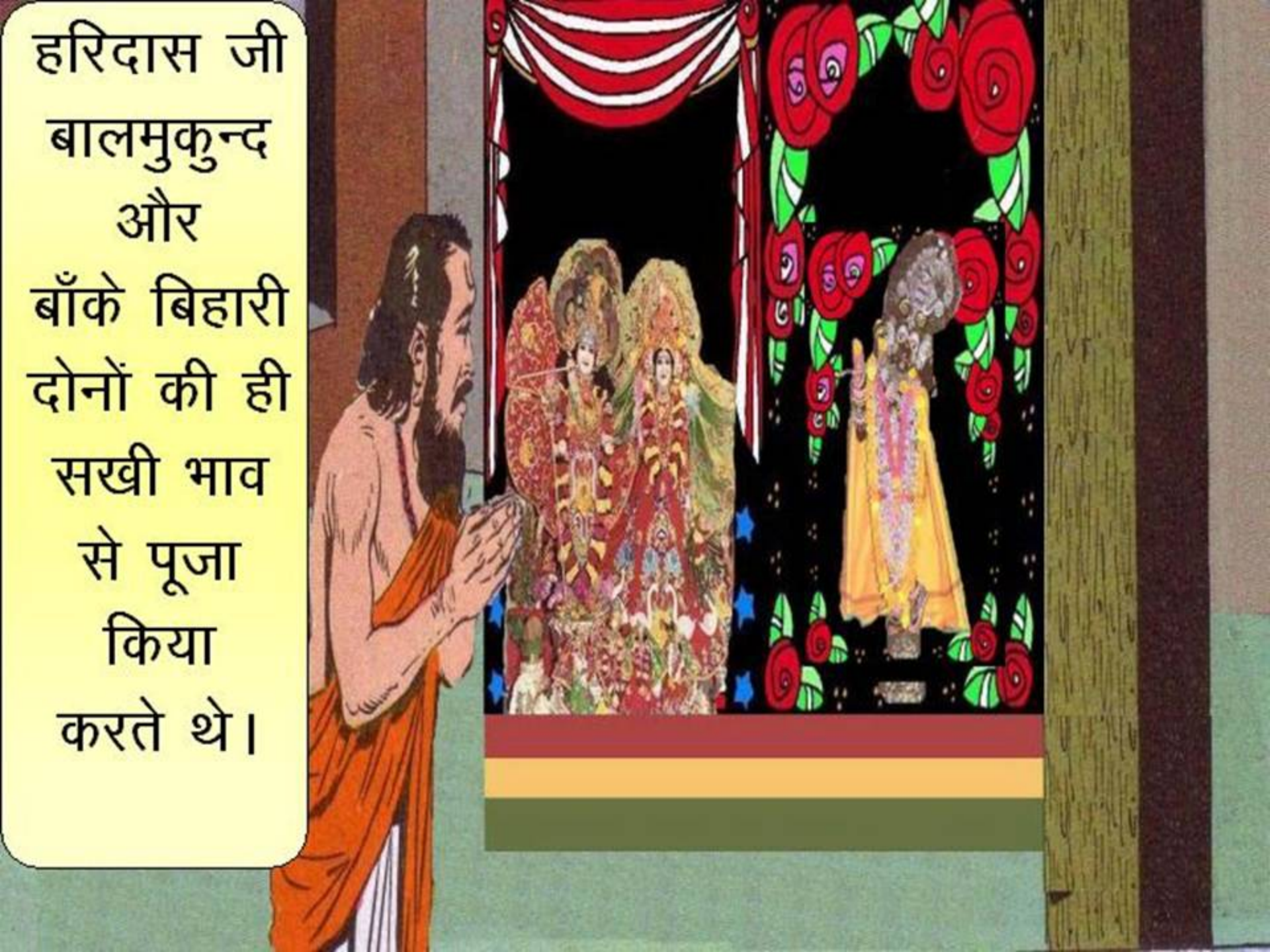
हरिदास जी
बालमुकुन्द
और
बाँके बिहारी
दोनों की ही
सखी भाव
से पूजा
किया
करते थे।

मुझे तुरन्त मत्तू मेहता जी को
कच्छ में खबर भेजनी होगी।
वे बहुत चिन्ता कर
रहे होंगे।

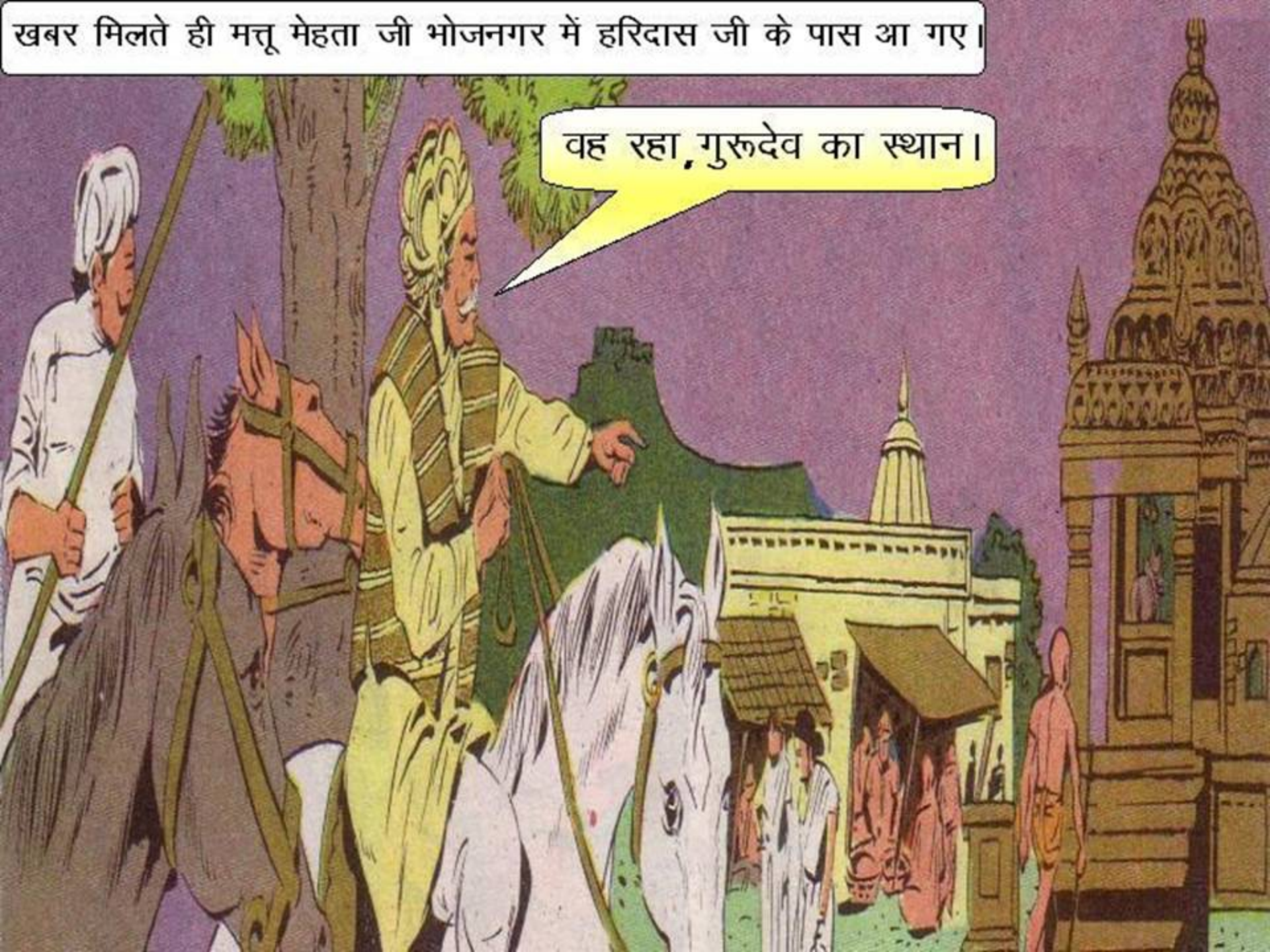
खबर मिलते ही मत्तू मेहता जी भोजनगर में हरिदास जी के पास आ गए।
वह रहा, गुरूदेव का स्थान।

मतू मेहता जी ने देवचन्द्र जी को बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन.....

मत्तू मेहता जी ने फिर कुँवरबाई जी को समझाया।

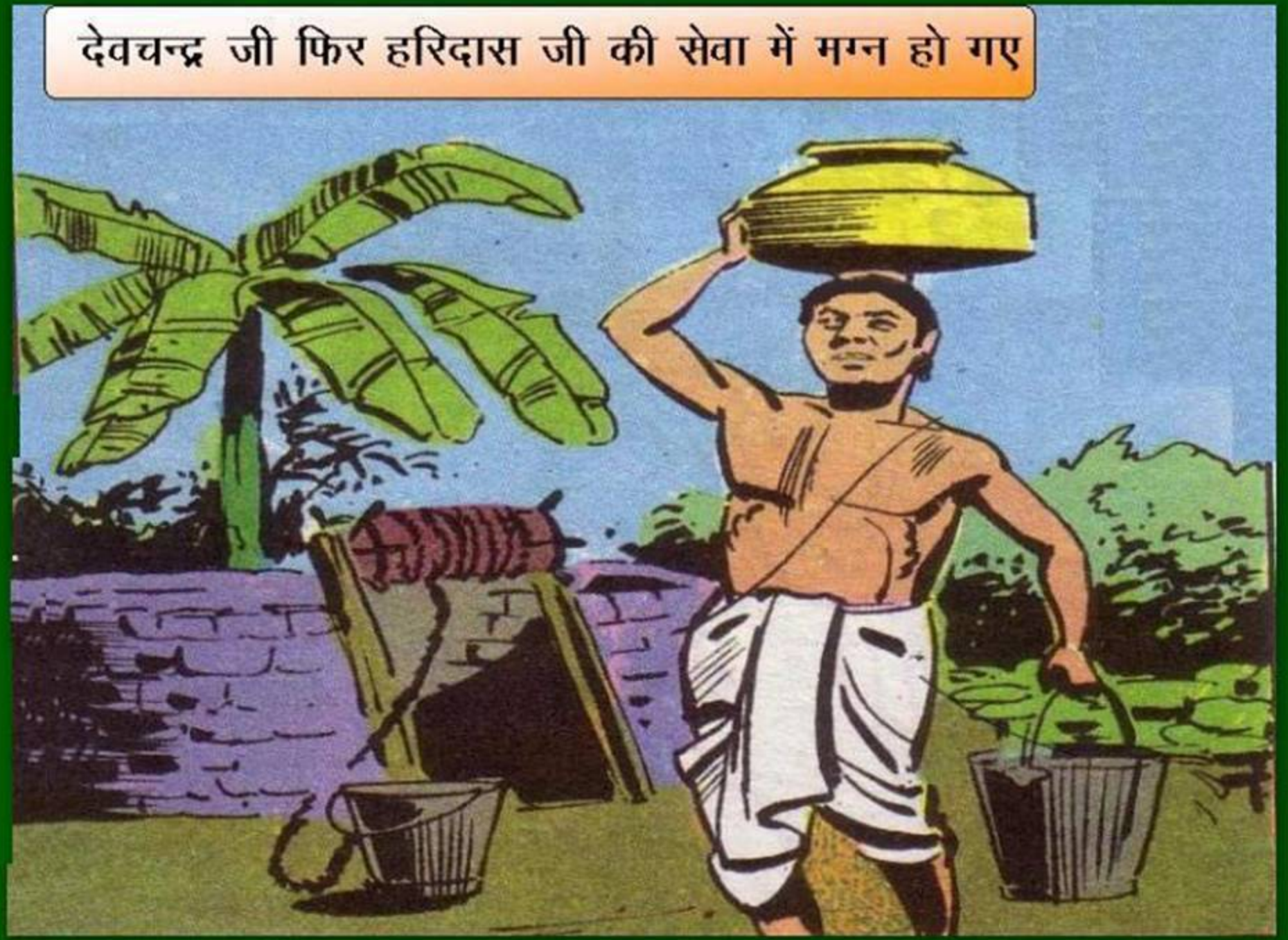
देवचन्द्र जी फिर हरिदास जी की सेवा में मग्न हो गए

देवचन्द्र जी हरिदास जी की सारी सेवा बड़े ही निर्मल भाव और श्रद्धा से किया करते।

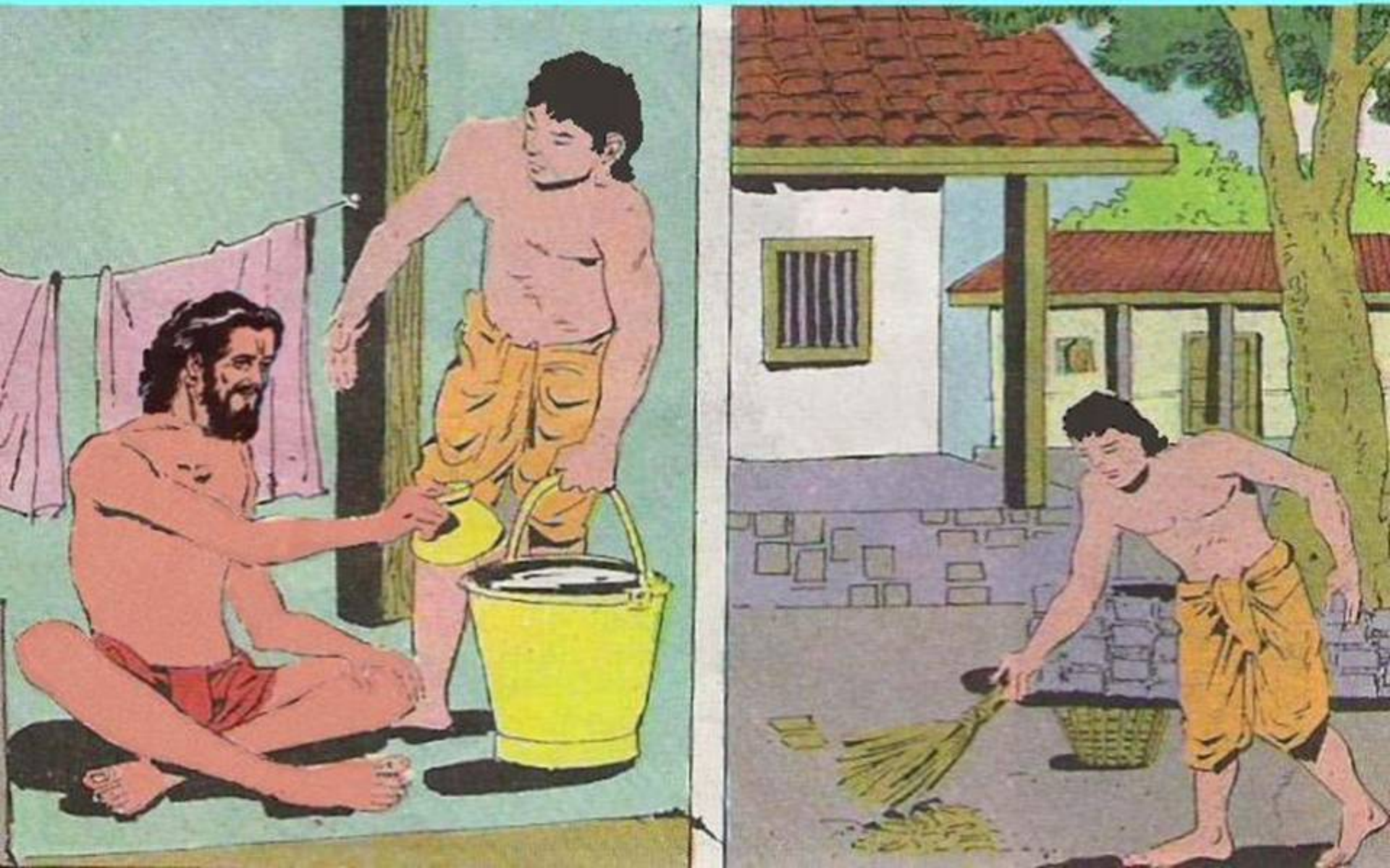

हरिदास जी देवचन्द्र जी की निःस्वार्थ सेवा से बहुत प्रसन्न हुए और उनसे बोले..
जैसी आपकी आज्ञा गुरूदेव
देवचन्द्र! मैं तुम्हारी सेवा से बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिए तुम आने वाले गुरूवार को भद्र भेख होकर (सिर मुंड़ा कर) सुबह आ जाना। मैं तुम्हें राधावल्लभी मार्ग का मंत्र दूँगा।

उधर मत्तू मेहता जी देवचन्द्र जी की शादी की तिथि उसी दिन की ही तय कर आए।
हे भाग्यवान! आने वाले गुरूवार को तेरे बेटे की शादी पक्की कर आया हूँ। थोड़ा गृहस्थ में रहेगा तो अपने आप काम धन्धा भी शुरू कर लेगा।
यह तो आपने बहुत अच्छा किया जी।

देवचन्द्र जी निधार्रित
दिन को सिर मुंड़ा कर
स्नान करके
हरिदास जी के पास
पहुँचते हैं।

हरिदास जी देवचन्द्र जी से कहते है कि....
देवचन्द्र!
यदि तुमने पहले किसी से मंत्र लिया है, तो उसे छोटे से कागज पर लिख कर गुंथे हुए आटे में मिलाकर रोटी बनाओ और उसके किसी अनुयायी को दे दो, ताकि उसका मंत्र उसके पास वापस चला जाए।

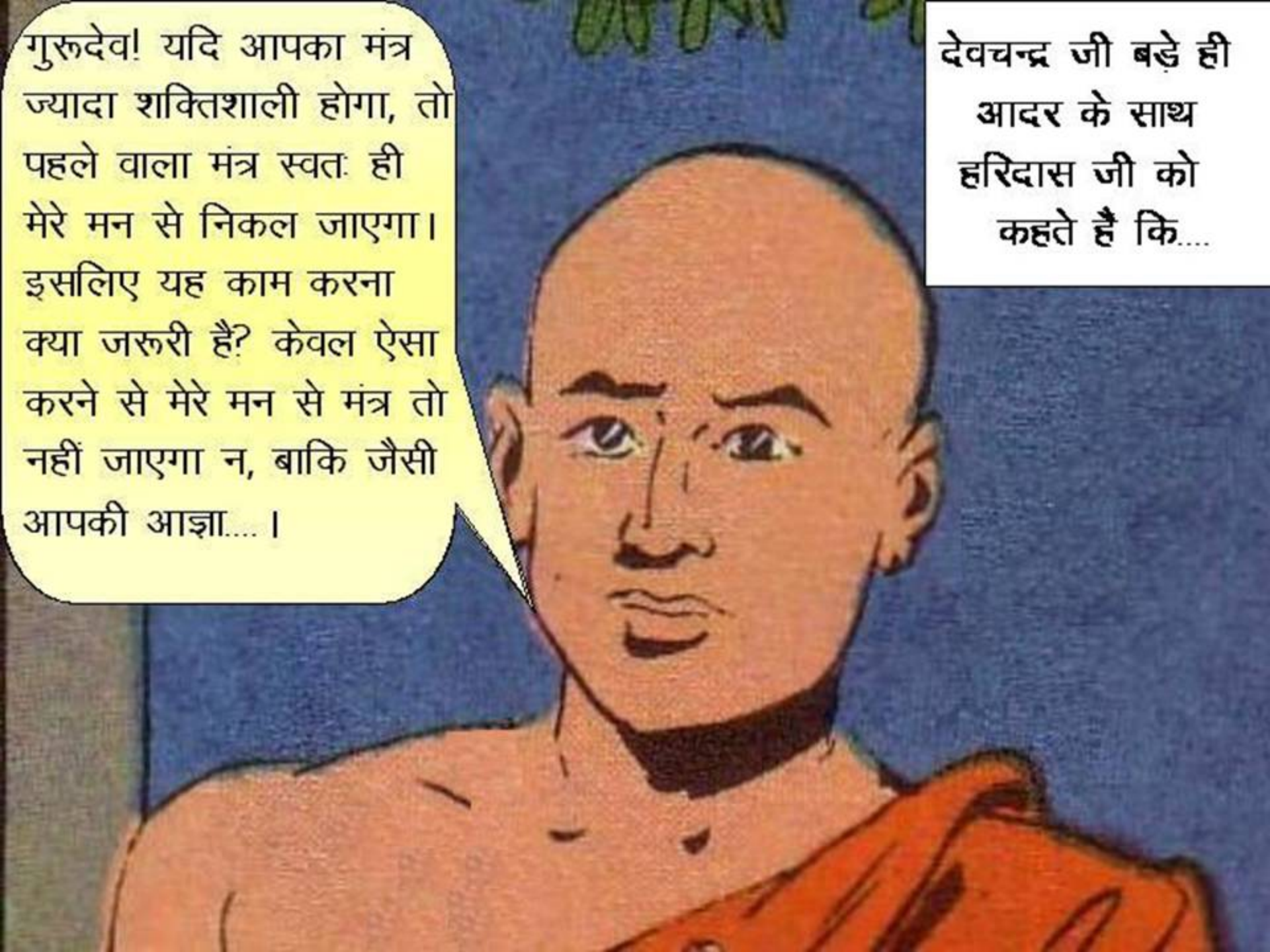
देवचन्द्र जी बड़े ही आदर के साथ हरिदास जी को कहते हैं कि....
गुरूदेव! यदि आपका मंत्र ज्यादा शक्तिशाली होगा, तो पहले वाला मंत्र स्वतः ही मेरे मन से निकल जाएगा। इसलिए यह काम करना क्या जरूरी है? केवल ऐसा करने से मेरे मन से मंत्र तो नहीं जाएगा न, बाकि जैसी आपकी आज्ञा....।

हरिदास जी देवचन्द्र जी की इस बात पर बहुत हैरान हुए।तब हरिदास जी ने मंत्र दिया।
"भज मन श्री वृन्दावन कुंज बिहारी नित्य विलास"

मंत्र–दीक्षा लेने के बाद गुरू से आशीर्वाद लेकर देवचन्द्र जी जैसे ही घर पहुँचे....

पिता जी उनका यह भेष देख कर भड़क उठे

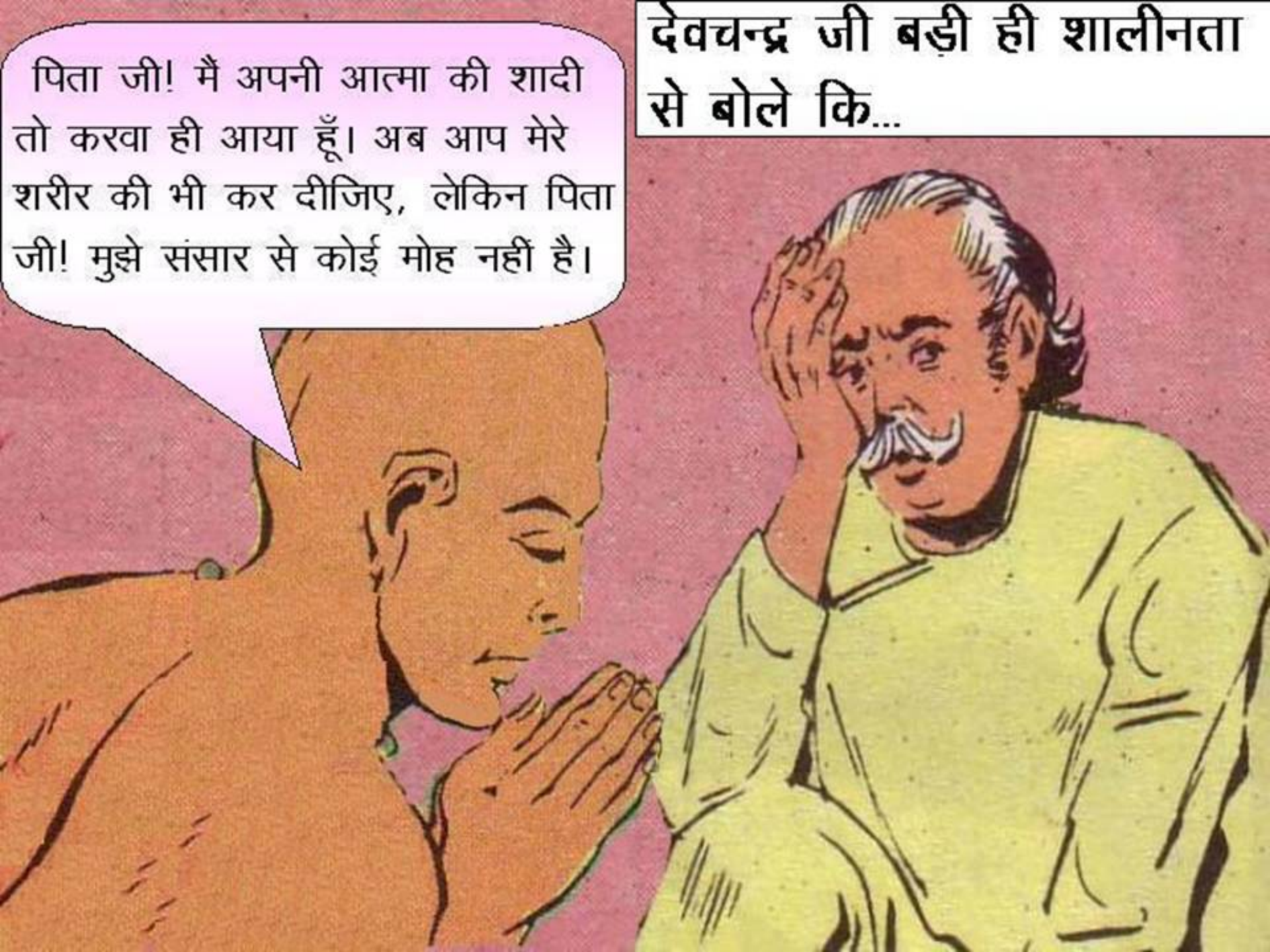
देवचन्द्र जी बड़ी ही शालीनता से बोले कि...
पिता जी! मैं अपनी आत्मा की शादी तो करवा ही आया हूँ। अब आप मेरे शरीर की भी कर दीजिए, लेकिन पिता जी! मुझे संसार से कोई मोह नहीं है।

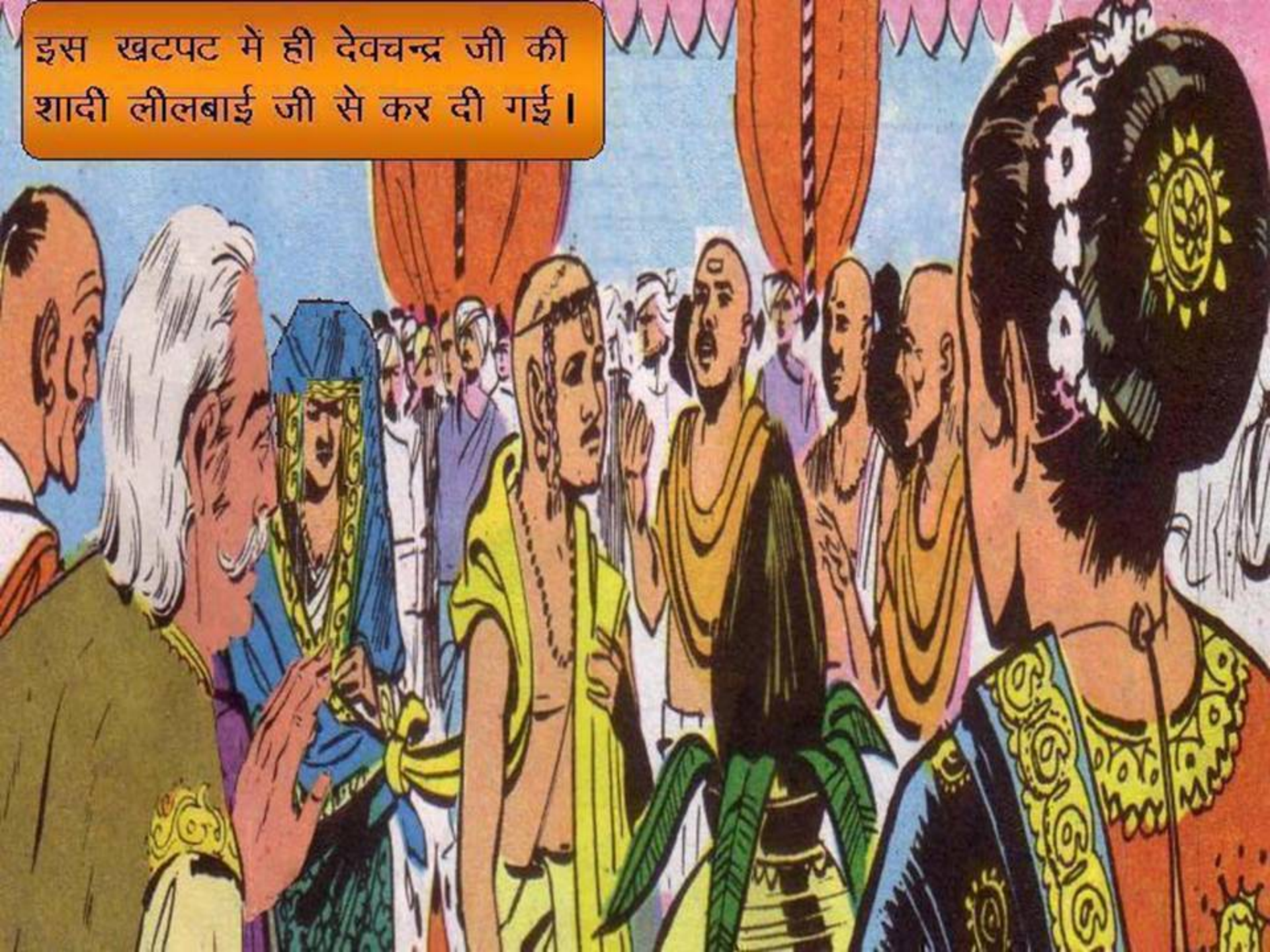
इस खटपट में ही देवचन्द्र जी की
शादी लीलबाई जी से कर दी गई।

एक दिन देवचन्द्र जी सेवा कर ही रहे थे कि कुछ लोग किसी लड़के को उठा कर हरिदास जी के पास लाए और गुहार लगाने लगे...
हे महाराज! इसको बिच्छू ने काट लिया है। कृपया आप इसका जहर उतार कर इसे जीवनदान दें।
ठीक है, इसे जमीन पर लिटा दो

उन्होंने उसे तुरन्त जमीन पर लिटा दिया।
देवचन्द्र जी खड़े सब देख रहे थे।

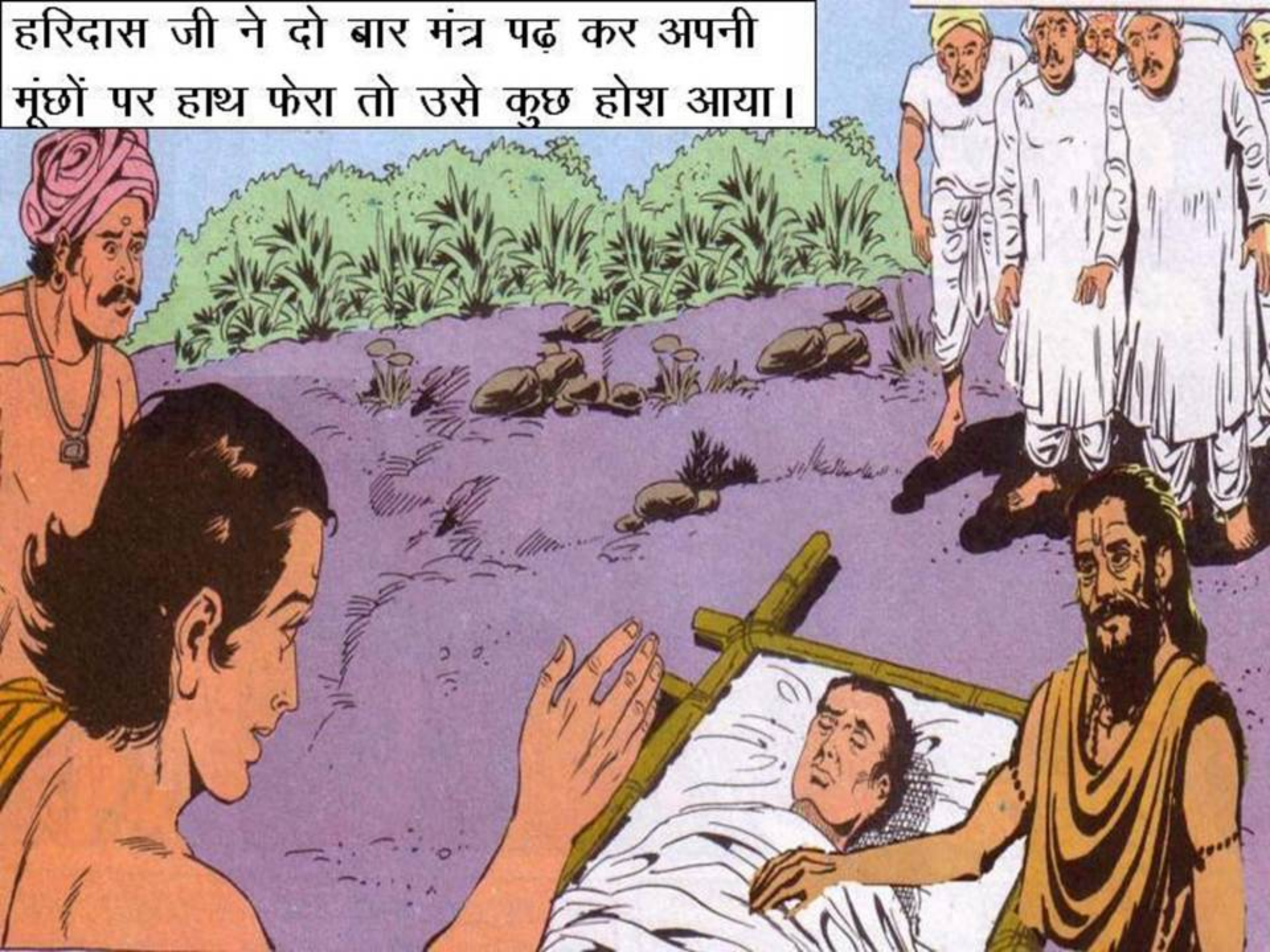
हरिदास जी ने दो बार मंत्र पढ़ कर अपनी मूंछों पर हाथ फेरा तो उसे कुछ होश आया।

जब तीसरी बार हरिदास जी ने ऐसे ही किया तो वह आदमी उठ कर बैठ गया।
देखो भाई! चमत्कार..
सबने हरिदास जी की बहुत जय–जयकार की और वापस चले गए।

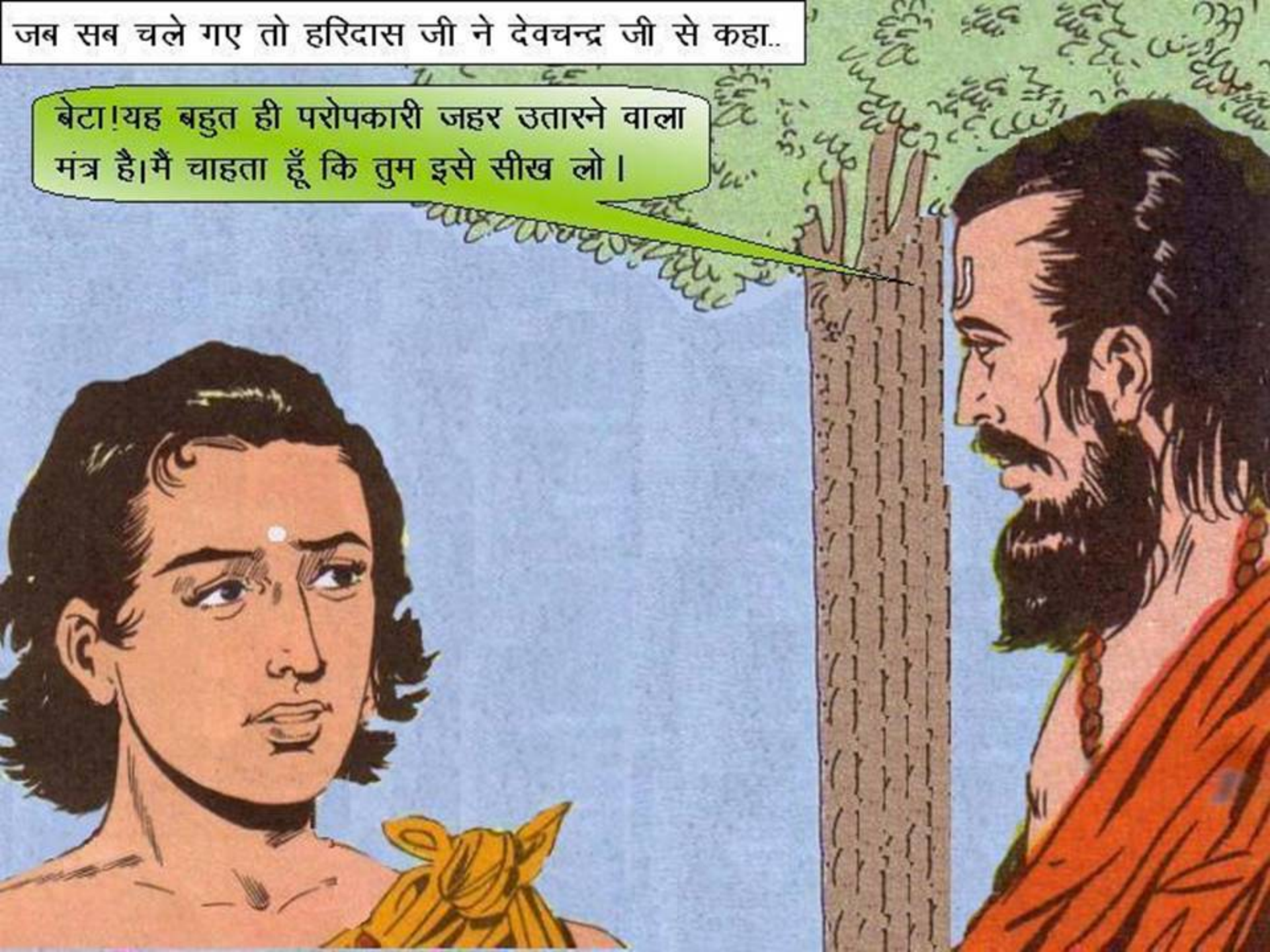
जब सब चले गए तो हरिदास जी ने देवचन्द्र जी से कहा..
बेटा!यह बहुत ही परोपकारी जहर उतारने वाला मंत्र है।मैं चाहता हूँ कि तुम इसे सीख लो।

तब देवचन्द्र जी ने कहा-

गुरूदेव! आपने जो मंत्र मुझे पहले दिया है,वह तो जन्म मरण के समय लाखों बिच्छुओं का जहर उतार कर भवसागर से पार करने वाला है। उसके आगे यह मंत्र किस काम का है ?

हरिदास जी यह सुनकर
स्तब्ध रह गये।

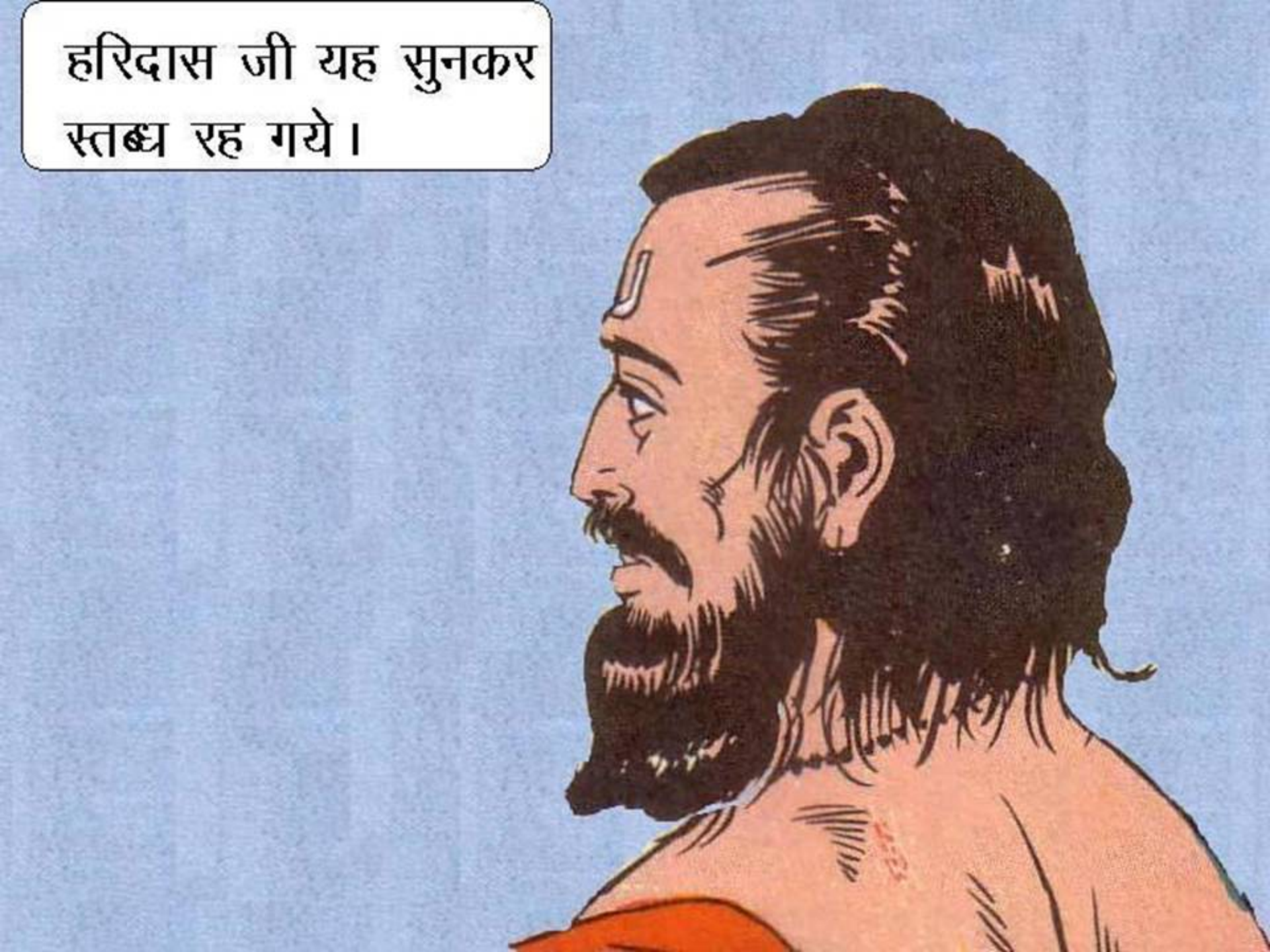

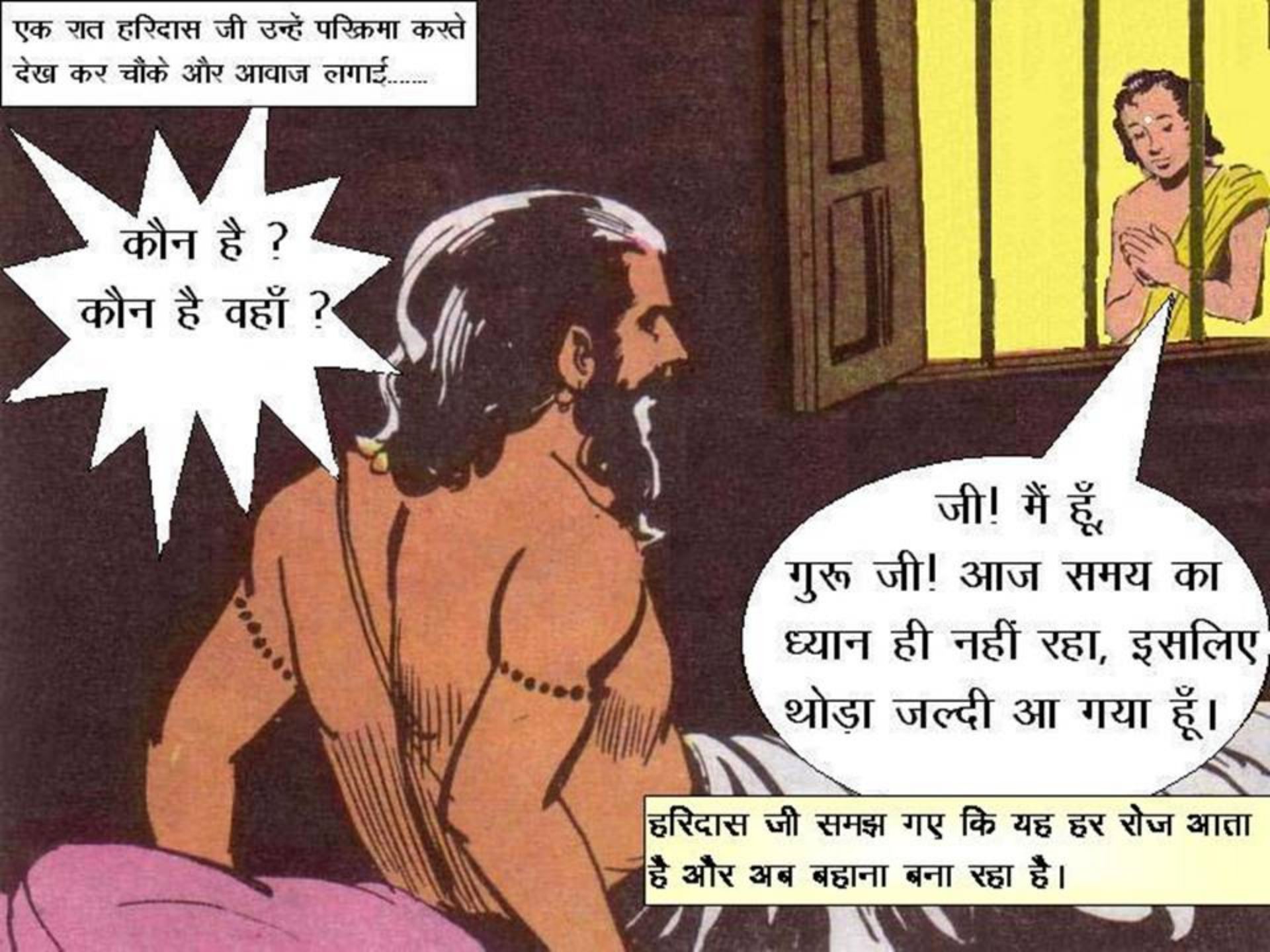
एक रात हरिदास जी उन्हें परिक्रमा करते देख कर चौंके और आवाज लगाई.....
कौन है ?
कौन है वहाँ ?
जी! मैं हूँ,
गुरू जी! आज समय का ध्यान ही नहीं रहा, इसलिए थोड़ा जल्दी आ गया हूँ।
हरिदास जी समझ गए कि यह हर रोज आता है और अब बहाना बना रहा है।

सब सेवा निपटा कर हरिदास जी ने देवचन्द्र जी से कहा—
मैं तुम्हारी इस परिक्रमा का भार सहन नहीं कर सकता। आखिर मुझसे तुम क्या चाहते हो ? मेरे पास दो भगवान की मूर्तियां हैं। मैं बालमुकुन्द जी को तुम्हें दे दूँगा, तुम उन्हें अपने घर पधरा कर उनकी सेवा करो और चाहे, जितनी इच्छा हो उतनी परिक्रमा करो।
जैसी आपकी आज्ञा गुरूदेव।

अगले दिन हरिदास जी जब सेवा करने आए तो देखा कि बालमुकुन्द जी की मूर्ति वहां से गायब है। सारे मन्दिर में उन्हें ढूँढा पर मूर्ति कहीं भी नही मिली।
अरे...अरे! मेरे मगवान कहां चले गए ? रात को ही तो मैं सेवा करके गया था।

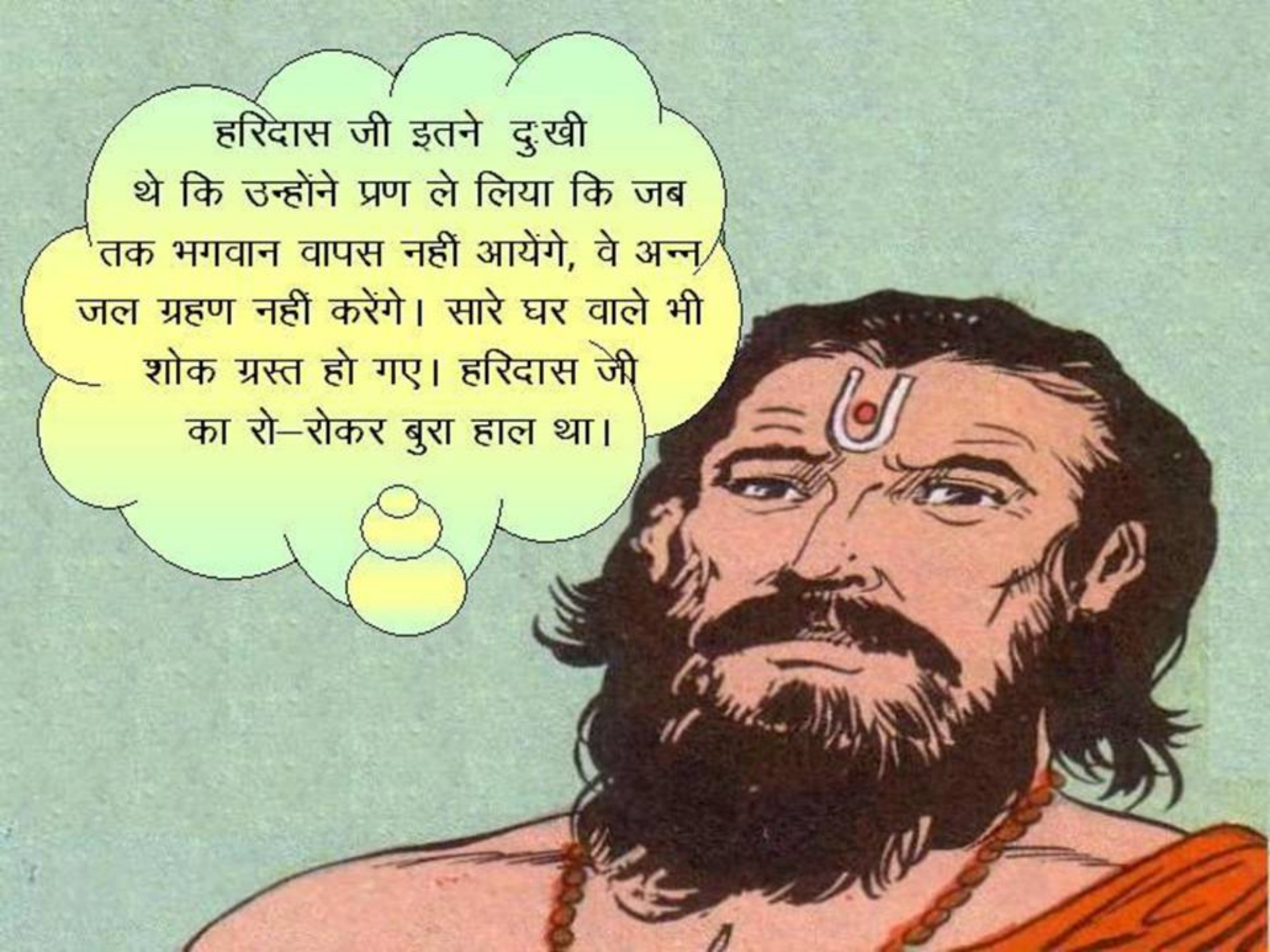
हरिदास जी इतने दुःखी
थे कि उन्होंने प्रण ले लिया कि जब
तक भगवान वापस नहीं आयेंगे, वे अन्न
जल ग्रहण नहीं करेंगे। सारे घर वाले भी
शोक ग्रस्त हो गए। हरिदास जी
का रो–रोकर बुरा हाल था।

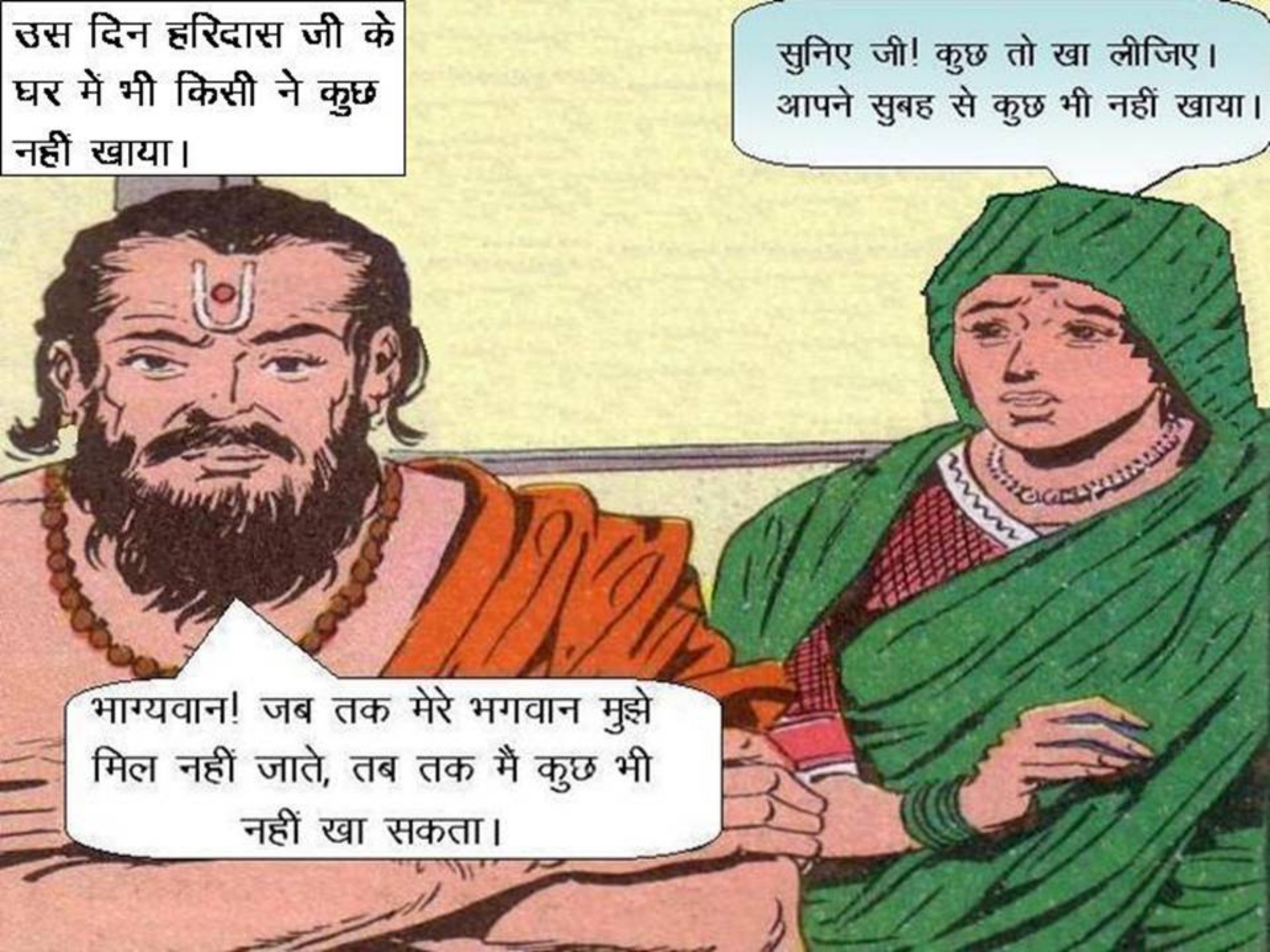
उस दिन हरिदास जी के घर में भी किसी ने कुछ नहीं खाया।
सुनिए जी! कुछ तो खा लीजिए। आपने सुबह से कुछ भी नहीं खाया।
भाग्यवान! जब तक मेरे भगवान मुझे मिल नहीं जाते, तब तक मैं कुछ भी नहीं खा सकता।

रात्रि हो गई, मध्य रात्रि में गोलोक से साक्षात
बालमुकुन्द जी ने हरिदास जी को दर्शन दिया।
तब हरिदास जी चौंक कर बोले कि.....
अहो! प्रभो !
आप कहाँ चले
गए थे ?

तब बालमुकुन्द जी बोले कि
तुम मुझको देवचन्द्र जी के घर पधरा रहे थे, इस कारण से मैं अदृश्य हो गया था। तुमने अभी उनके स्वरूप की पहचान नहीं की है। यह श्री अक्षरातीत की आनन्द अंग श्री श्यामा जी हैं। इन्होंने ही मुझे गोलोक में अखण्ड किया था। मैं जब इनके अहसानों का बदला भी नहीं चुका सकता तो इनकी सेवा को कैसे सहन कर सकता हूँ ? इसलिए, तुम मेरी मूर्ति इन्हें न देना। यदि इस बात को सुनकर श्री देवचन्द्र जी दुःखी हों तो श्री बाँके बिहारी जी के वस्त्रों की सेवा इन्हें दे देना।

सुबह सामने से देवचन्द्र जी आते हुए दिखाई दिए तो हरिदास जी दौड़ कर उनके चरणों में गिर पड़े। देवचन्द्र जी ने अपने हाथों से उन्हें उठाया और कहा कि.....
गुरुदेव !अरे,,,,अरे,,, आप यह क्या कर रहें हैं ?

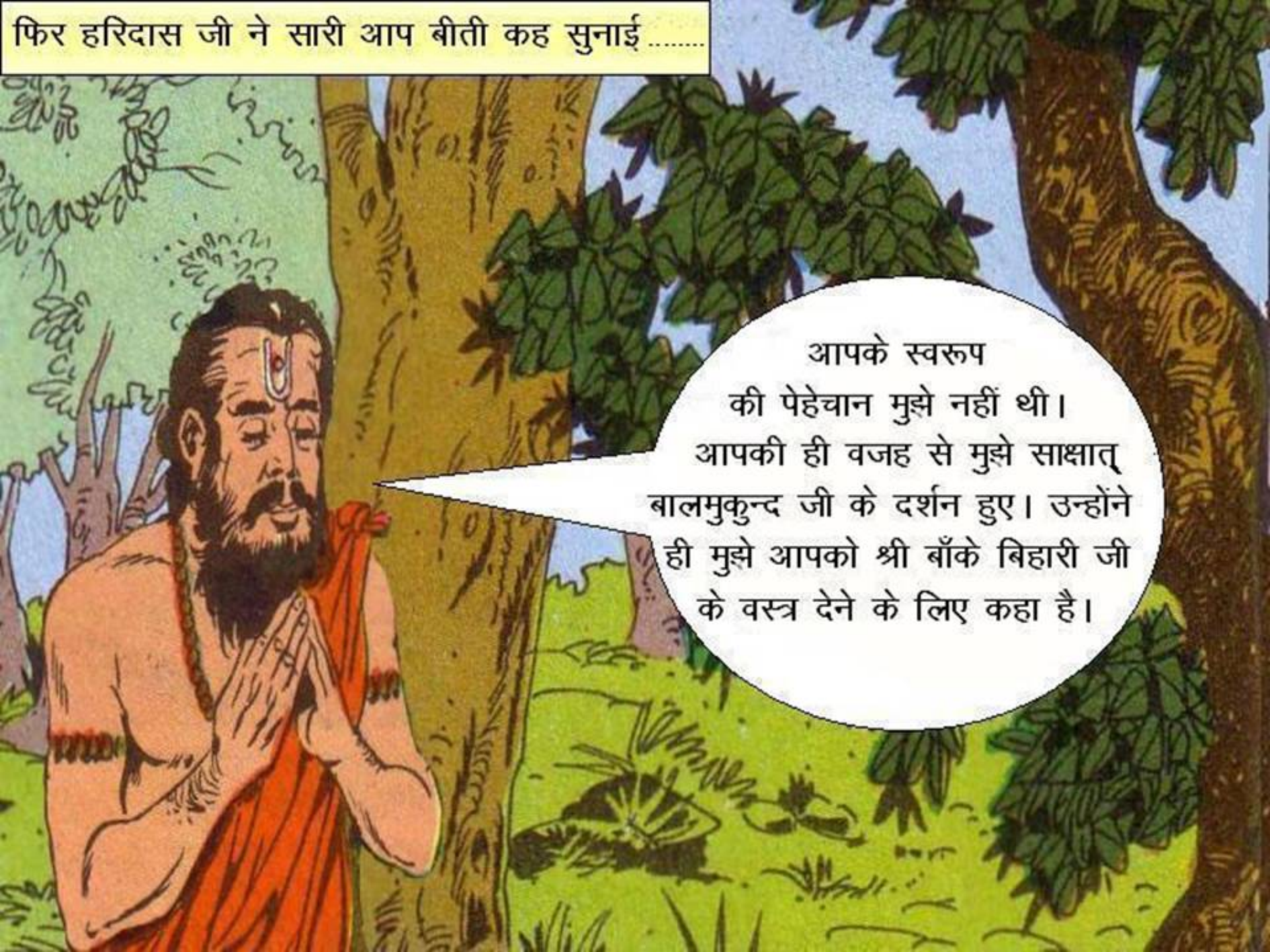
फिर हरिदास जी ने सारी आप बीती कह सुनाई.....
आपके स्वरूप की पेहेचान मुझे नहीं थी। आपकी ही वजह से मुझे साक्षात् बालमुकुन्द जी के दर्शन हुए। उन्होंने ही मुझे आपको श्री बाँके बिहारी जी के वस्त्र देने के लिए कहा है।

ठीक है, जैसी आपकी आज्ञा गुरूदेव!

इसके पश्चात् हरिदास जी ने देवचन्द्र जी को बाँके बिहारी जी के वस्त्रों की सेवा दे दी और देवचन्द्र जी उसे पालकी में पधरा कर घर ले आए। देवचन्द्र जी ने अपने घर में अति सुन्दर ढंग से सिहाँसन को सजा कर सेवा पधराई और गोपी भाव से सेवा करने लगे।

एक बार भोग लगा रहे थे कि उनकी चितवनि लग गई। उन्होंने देखा कि वे राधिका के रूप में अखण्ड ब्रज में पहुँच गए हैं।

अखण्ड लीला को समझने का भाव लेकर देवचन्द्र जी हरिदास जी के पास गए। हरिदास जी ने कहा कि

शादी के बाद उनके घर में एक पुत्र बिहारी जी
और एक पुत्री यमुनाबाई का जन्म हुआ।

देवचन्द्र जी नौतनपुरी में कान्ह जी भट्ट के पास चले आये।
ठीक है बेटा, तुम रोज मन्दिर में सुबह आ जाया करो, क्योंकि सुबह वहीं हम कथा किया करते हैं।
हे आचार्य जी! मुझे हरिदास जी ने आपके पास श्रीमद् भागवत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा है।

अगर देवचन्द्र जी कभी देरी से पहुँचते, तो वह बाद में कान्ह जी से उन श्लोकों की दुबारा से कथा सुनते थे, जो उनके आने से पहले निकल गए होते थे।

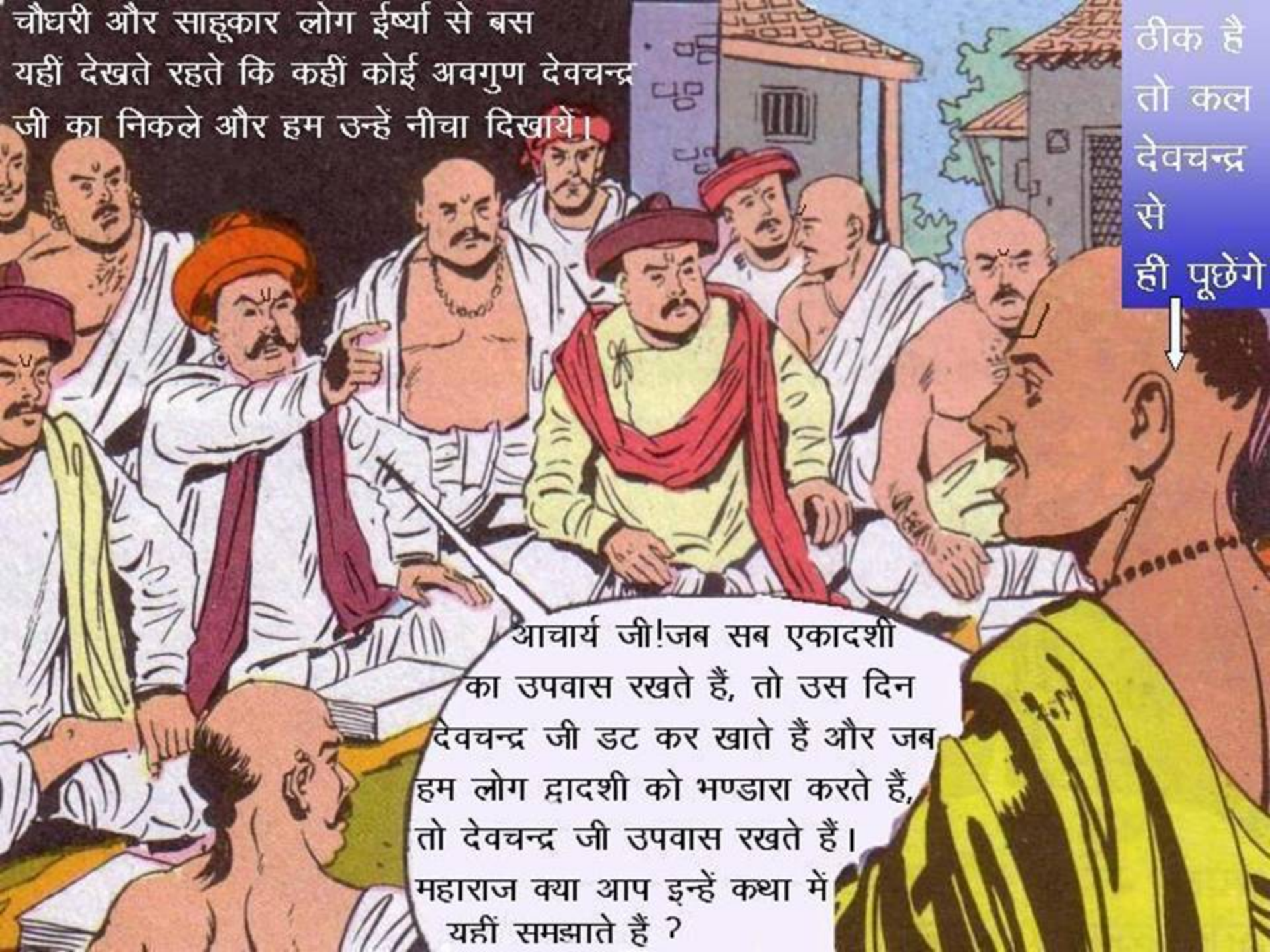
चौधरी और साहूकार लोग ईर्ष्या से बस यहीं देखते रहते कि कहीं कोई अवगुण देवचन्द्र जी का निकले और हम उन्हें नीचा दिखायें।
ठीक है तो कल देवचन्द्र से ही पूछेंगे
आचार्य जी! जब सब एकादशी का उपवास रखते हैं, तो उस दिन देवचन्द्र जी डट कर खाते हैं और जब हम लोग द्वादशी को भण्डारा करते हैं, तो देवचन्द्र जी उपवास रखते हैं। महाराज क्या आप इन्हें कथा में यहीं समझाते हैं ?

देवचन्द्र जी से पूछने पर उन्होंने बताया

श्रीमद्भागवत् के अनुसार आत्मा सत्य है। भगवद् कथा को मैं आत्मा का आहार मानता हूँ। आप द्वादशी को कथा नहीं करते है, इसलिए जब आत्मा को आहार नही मिलता है, तो मै अपने शरीर को भी आहार नहीं देता। एकादशी को खूब कथा सुनने को मिलती है, इसलिए मैं अपने शरीर को भी पूरा आहार देता हूँ। अब आप ही बताइए कि क्या यह श्रीमद्भागवत के अनुसार सही नही है ?

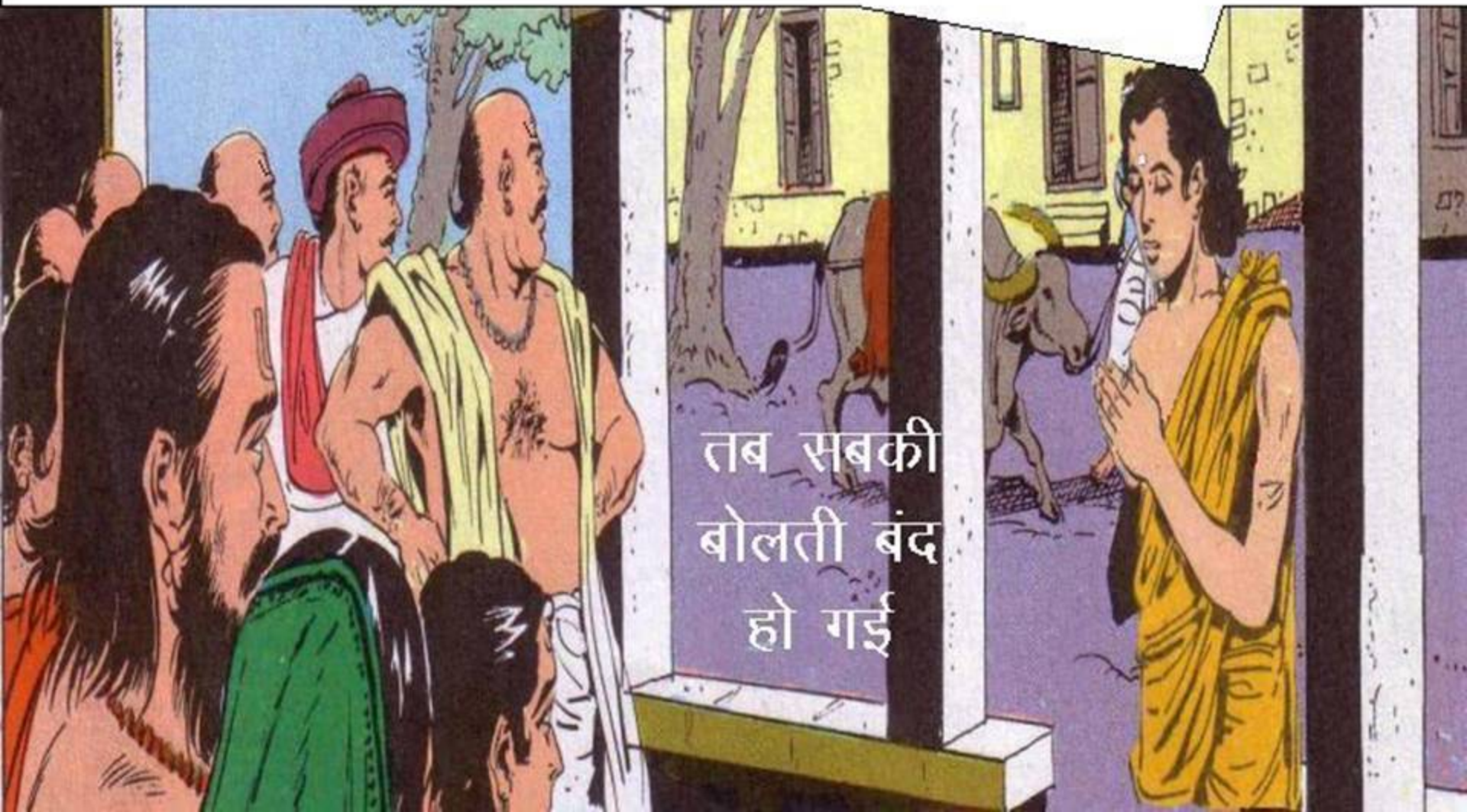

फिर चौदह बरस तक श्री देवचन्द्र जी इस प्रकार कथा सुनते थे कि सुनते–सुनते आखों से आँसू बहने लगते थे।

अभी देवचन्द्र जी की कसनी पूरी नही हूई थी। उनकी अन्तिम कसनी की बारी भी आ गई। देवचन्द्र जी को बहुत तेज बुखार हो गया,वैद्य को बुलाया गया।
देवचन्द्र जी को अगर थोड़ी सी भी हवा लग गई तो जान जाने का भी खतरा हो सकता है।
पिता जी! मैं मरने वाला नहीं हूँ। आप कृपया मुझे कथा में जाने दीजिए मेरे शरीर को तो आप रोक लेंगे, पर मेरी आत्मा वहाँ जरूर जाएगी।
ऐसा कहते कहते वे बेहोश हो गए।

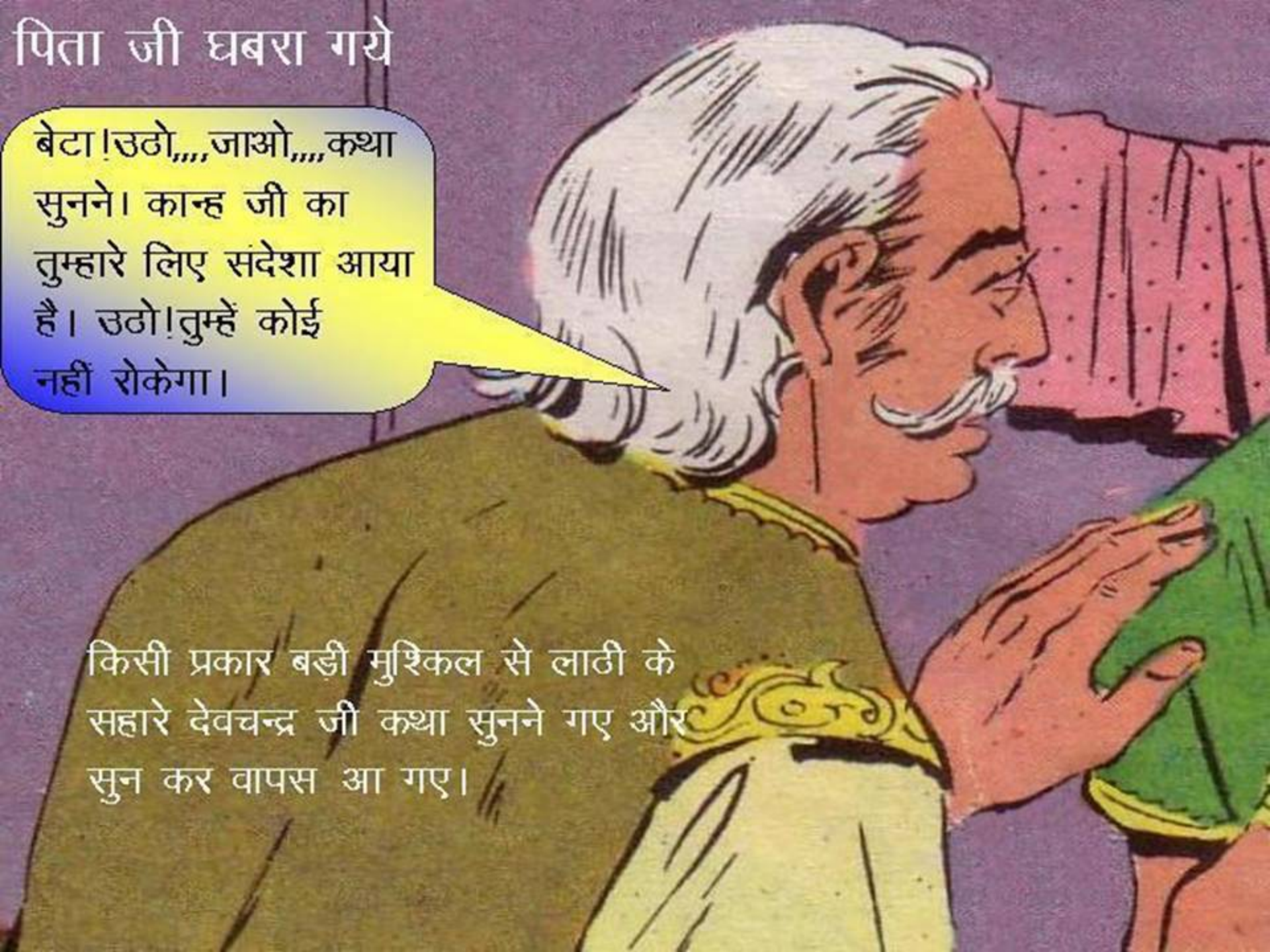

पिता जी घबरा गये
बेटा!उठो,,,,जाओ,,,,कथा सुनने। कान्ह जी का तुम्हारे लिए संदेशा आया है। उठो!तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।
किसी प्रकार बड़ी मुश्किल से लाठी के सहारे देवचन्द्र जी कथा सुनने गए और सुन कर वापस आ गए।

जब एक दिन देवचन्द्र जी मन्दिर में कथा सुनने बैठे हुए थे तो एक अति सुन्दर मनमोहक स्वरूप ने उन्हें दर्शन दिए। वह और कोई नही खुद श्री राज जी महाराज जी का आवेश का स्वरूप ही था। श्री देवचन्द्र जी तो उस स्वरूप को देख कर हैरान हो गए। उनमें कुछ बातें भी हुई।

देवचन्द्र! क्या तुम्हें मेरी पहचान है ?
ज़रा बताओ कि मैं कौन हूँ ?
जी....! मेरा मन गवाही देता है कि आप मेरे खाविंद हैं। बस, मुझे इतना ही पता है।

बस,,, सिर्फ
इतना ही जानते हो। तुम
अपने आप को भी पहचानते
हो या नहीं कि तुम कौन हो ?
कहाँ से आए हो ?

नहीं...! मुझे और कुछ
नहीं मालूम। बस, मुझे इतना ही
पता है कि आप ही मेरे धनी हैं।

बस, तुम इतना ही जानते हो। अच्छा तो आओ। मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं कौन हूँ और तुम कौन हो ?

न तुम राधिका रानी हो और न ही देवचन्द्र, बल्कि तुम परमधाम की स्यामा जी हो और मैं तुम्हारा प्रियतम हूँ। मैं ही ब्रज और रास में कृष्ण बनकर तुम्हारे साथ खेला था। मैं ही उस अखण्ड परमधाम का स्वामी हूँ, जिसे वेदों में अनादि अक्षरातीत के रूप में लिखा है।

तुम मेरी आनन्द अंग स्यामा महारानी हो। मिथ्या माया की लीला देखने के लिए जब तुम ब्रज रास में आए थे, तब तुम्हारी इच्छा पूरी नही हुई थी। इसी कारण से यह तीसरा नया ब्रह्माँड बना है, जिसको देखने के लिए यह देवचन्द्र नाम का तन तुम्हें मिला है।

परमधाम में तुम्हारी ही अंग 12000 ब्रह्मसृष्टियाँ हैं। वे भी तुम्हारे साथ ही यह माया का खेल देखने इसी ब्रह्माँड में आई हुई हैं और यहाँ आकर सब भूल गई हैं। अब तुम्हीं उन सब आत्माओं को मेरी पहचान करा कर अपने घर परमधाम में वापस लेकर आओ, क्योंकि तुम उन सब की सिरदार हो।

ठीक है धनी,
तो फिर आप कहाँ
जायेंगे ?
अरे..! जाना कहाँ है। मैं तो तुम से कभी
जुदा ही नहीं हो सकता। बस तुम्हारे अन्दर
ही आकर बैठ जाऊँगा।

ठीक है धनी, फिर मुझे और कुछ नहीं पूछना। जब आप ही अन्दर आ जायेंगे तो मुझे कुछ और जानना नहीं है।

इस वार्तालाप के बाद जैसे ही श्री राज जी का आवेश स्वरूप श्री देवचन्द्र जी में प्रविष्ट हुआ,वैसे ही श्री देवचन्द्र जी को योगमाया की सारी अखण्ड ब्रज और रास का ज्ञान हो गया। उनकी सुरता सारे अखण्ड धाम में घूम आई। भागवत के सम्पूर्ण रहस्य उनके अन्दर खुल गए। बस फिर भागवत की कथा कहाँ सुननी थी? कान्ह जी को आखिरी प्रणाम कर तुरन्त घर वापस आ गए।

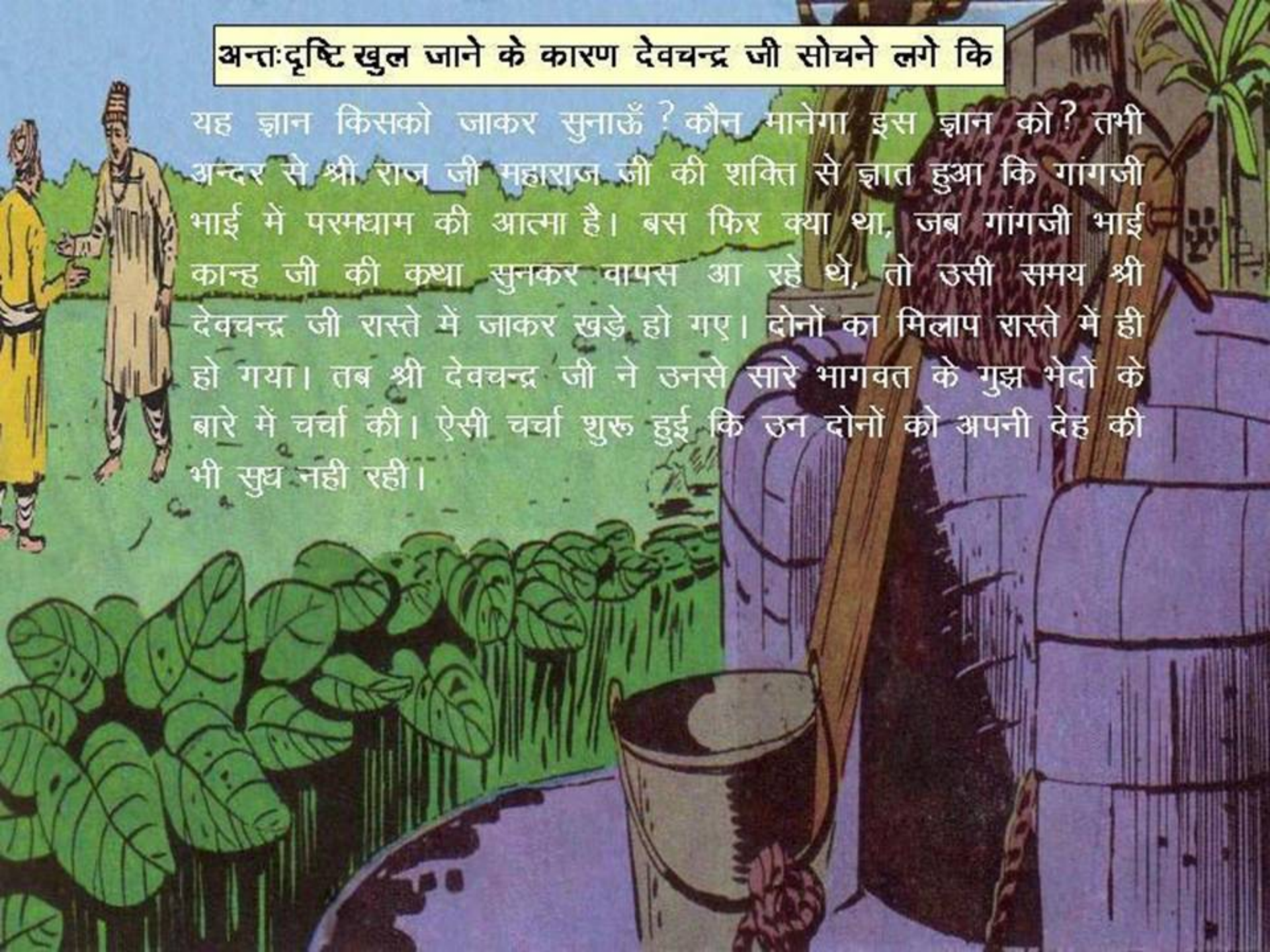
अन्तःदृष्टि खुल जाने के कारण देवचन्द्र जी सोचने लगे कि
यह ज्ञान किसको जाकर सुनाऊँ ? कौन मानेगा इस ज्ञान को ? तभी अन्दर से श्री राज जी महाराज जी की शक्ति से ज्ञात हुआ कि गांगजी भाई में परमधाम की आत्मा है। बस फिर क्या था, जब गांगजी भाई कान्ह जी की कथा सुनकर वापस आ रहे थे, तो उसी समय श्री देवचन्द्र जी रास्ते में जाकर खड़े हो गए। दोनों का मिलाप रास्ते में ही हो गया। तब श्री देवचन्द्र जी ने उनसे सारे भागवत के गुझ भेदों के बारे में चर्चा की। ऐसी चर्चा शुरू हुई कि उन दोनों को अपनी देह की भी सुध नही रही।

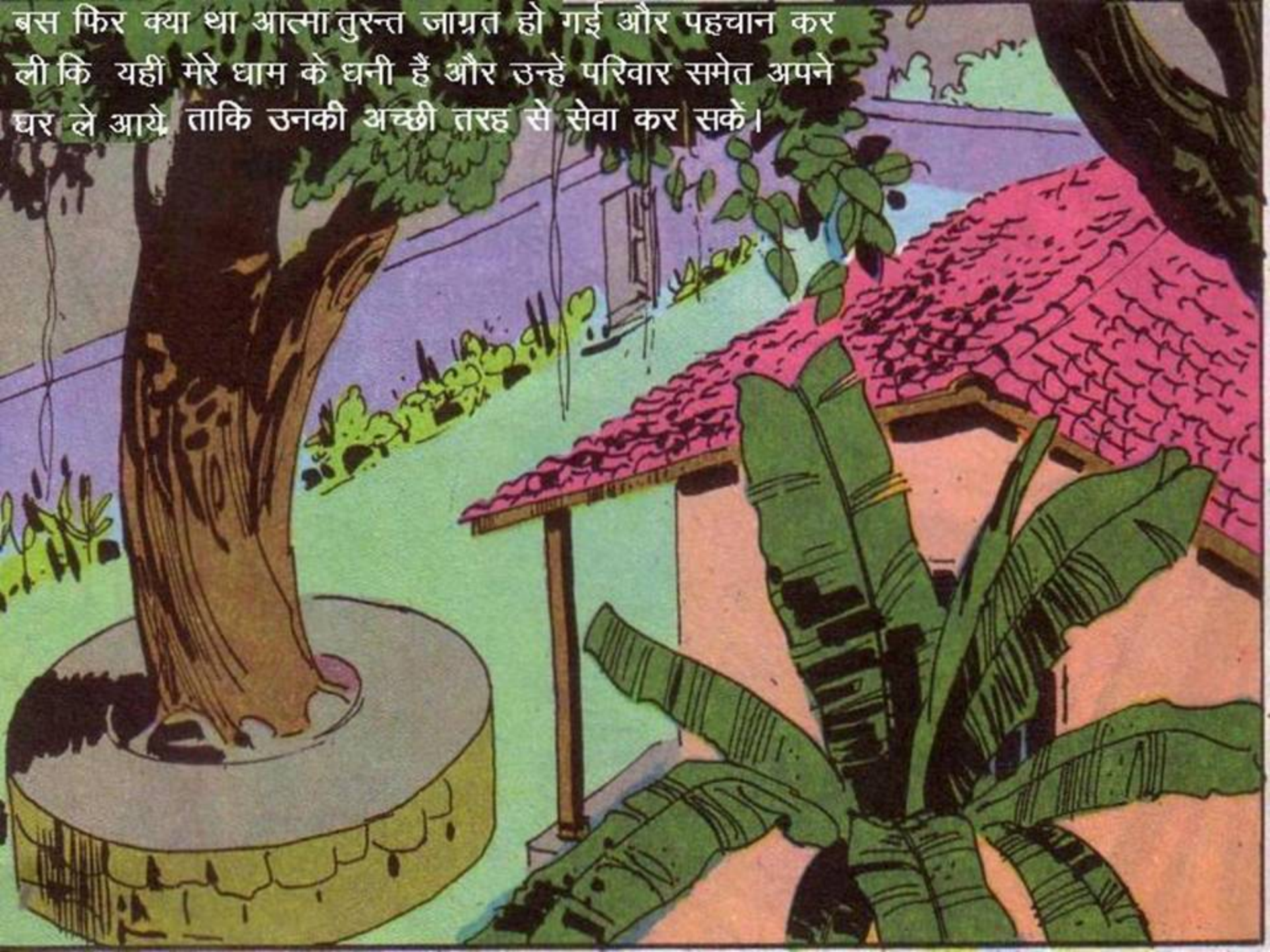
बस फिर क्या था आत्मा तुरन्त जाग्रत हो गई और पहचान कर
ली कि यही मेरे धाम के धनी हैं और उन्हे परिवार समेत अपने
घर ले आये ताकि उनकी अच्छी तरह से सेवा कर सकें।

धनी श्री देवचन्द्र जी द्वारा श्री गांगजी भाई जी के घर मे हर रोज अखंड की चर्चा होनी शुरू हो गई।

हम आत्माओं ने मिलकर श्री राज जी से माया का खेल माँगा,,,,,ब्रज रास देखने के बाद भी हमारी चाहना पूर्ण नहीं हुई थी। हमारी जिद्द की वजह से हमें फिर से दुबारा इस कालमाया के ब्रह्माँड में आना पड़ा। यहां आते ही हम सबकुछ भूलकर अपने कबीले बना कर बैठ गए हैं।
हम यहाँ अपने कबीलों एवं देवी देवताओं में फँस गए है। धामधनी हमें जाग्रत कर परमधाम ले जायेंगे और सारे ब्रह्माँड को मुक्ति देंगे।
कबीले बना कर बैठ गई।
दोनों बड़े हैरान थे, क्योंकि ऐसी अलौकिक चर्चा पहले कभी सुनी ही नहीं थी और न ही किसी ने आज दिन तक बताई ही थी।

इसी प्रकार धनी श्री देवचन्द्र जी की चर्चा एक ने सुनी, एक से दूसरे ने सुनी, दूसरे से तीसरे ने सुनी.....ऐसे करते करते सुन्दरसाथ सद्गुरू जी के चरणों में आने शुरू हो गए। श्री देवचन्द्र जी के चरणों में प्रत्येक वर्ण और जाति के सुन्दरसाथ थे और सब सुन्दरसाथ एक दूसरे के साथ धाम की अंगना समझ कर एक समान ही व्यवहार करते थे।

चर्चा करते करते आड़िका लीला भी होनी शुरू हो जाती थी। श्री कृष्ण लीला वहीं पर बैठे बैठे ही सबको साक्षात नजर आने लगती।

एक दिन गोर्वधन जी ने श्री निजानन्द स्वामी (श्री देवचन्द्र जी) से विनती की....

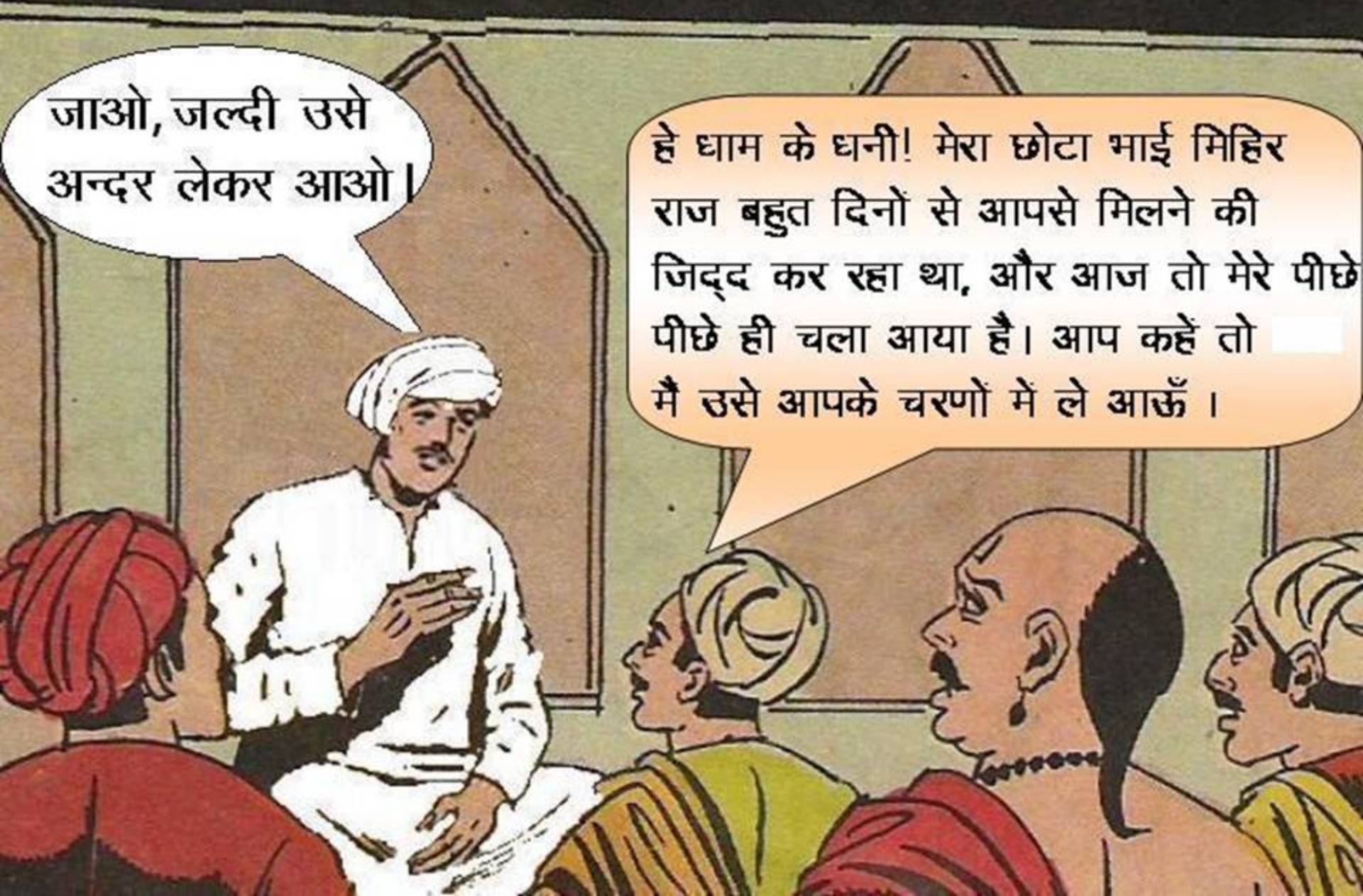

मिहिर राज जी ने जैसे ही धाम धनी के चरणों में प्रणाम किया।
तुरन्त धनी उन्हें पहचान गए कि.....

एक बार किसी चुगलखोर ने कोतवाल से चुगली कर दी कि..
हजूर, एक कायस्थ के घर मर्द और औरतें इकट्ठी बैठती हैं। आप जाकर जरा उनकी खबर लीजिए।

कोतवाल ने दो सिपाहियों को इसकी जांच करने के लिए नियुक्त कर दिया।

दोनों सिपाही भेष बदल कर रात को निकलते हैं।

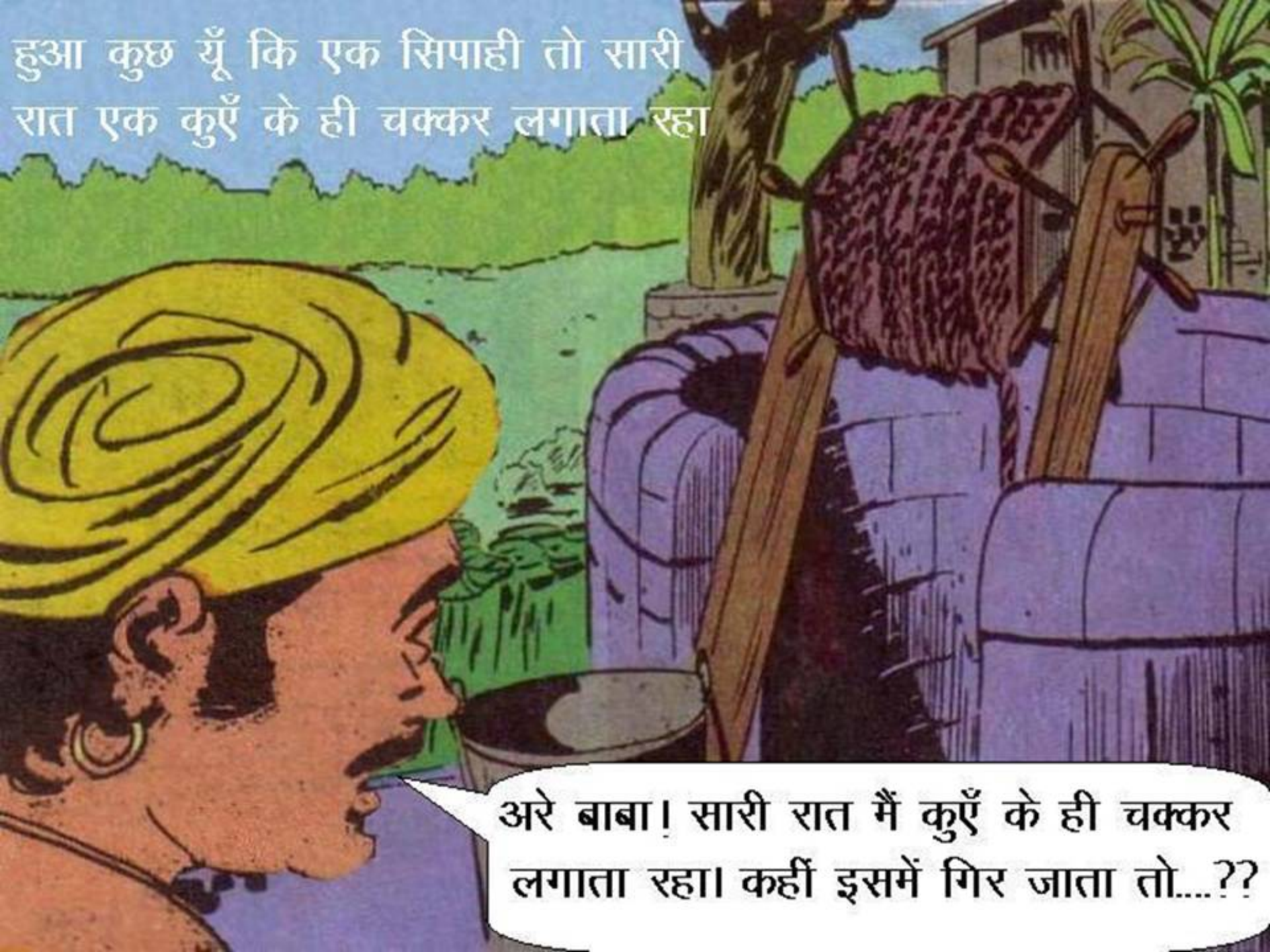
हुआ कुछ यूँ कि एक सिपाही तो सारी रात एक कुएँ के ही चक्कर लगाता रहा
अरे बाबा! सारी रात मैं कुएँ के ही चक्कर लगाता रहा। कहीं इसमें गिर जाता तो....??

दूसरा वहाँ से 12 कोस दूर
धरोल प्रान्त में पहुँच गया।
सारी रात हो गई,
दीपक के पीछे जाते जाते।
अरे! सुबह मैं इस जगह पर कैसे
पहुँच गया? उस चुगल खोर
को तो मैं अभी जाकर मार
डालूंगा।

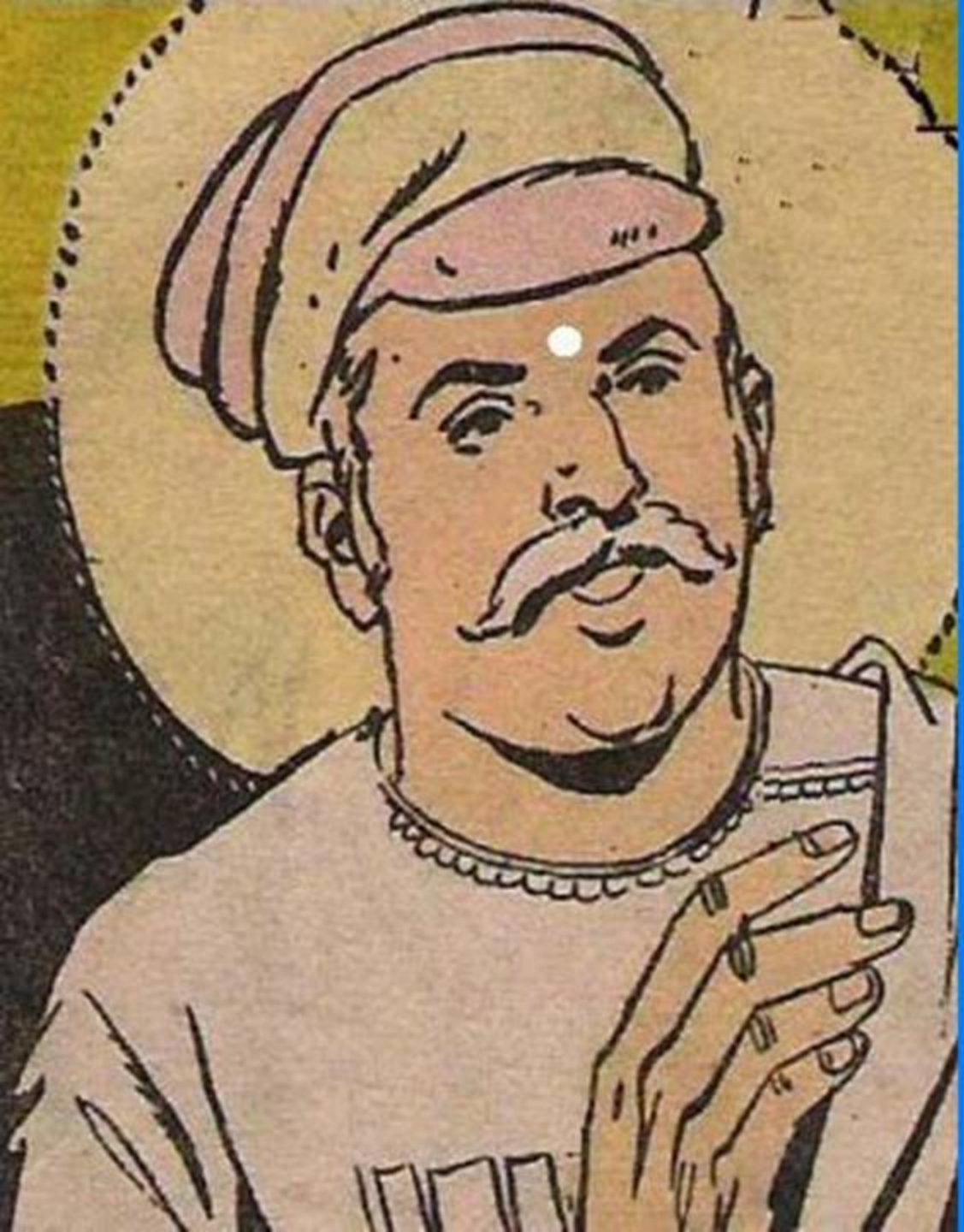

दज्जाल ने बहुत हाथ पैर मारे पर धनी के आगे उसकी कुछ नहीं चली। धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज बड़े जोश के साथ चर्चा करके ब्रज और रास के भेद सुन्दरसाथ को समझाते रहे। इसी तरह समय बीतता गया और एक दिन.....

एक दिन मिहिर राज जी और गोवर्धन जी कुछ देरी से चर्चा सुनकर घर लौटे तो बड़े भाई सांवलिया ठाकुर को कुछ अधिक घर का काम–काज करना पड़ा, जिस वजह से वह उन पर चिल्लाये कि....

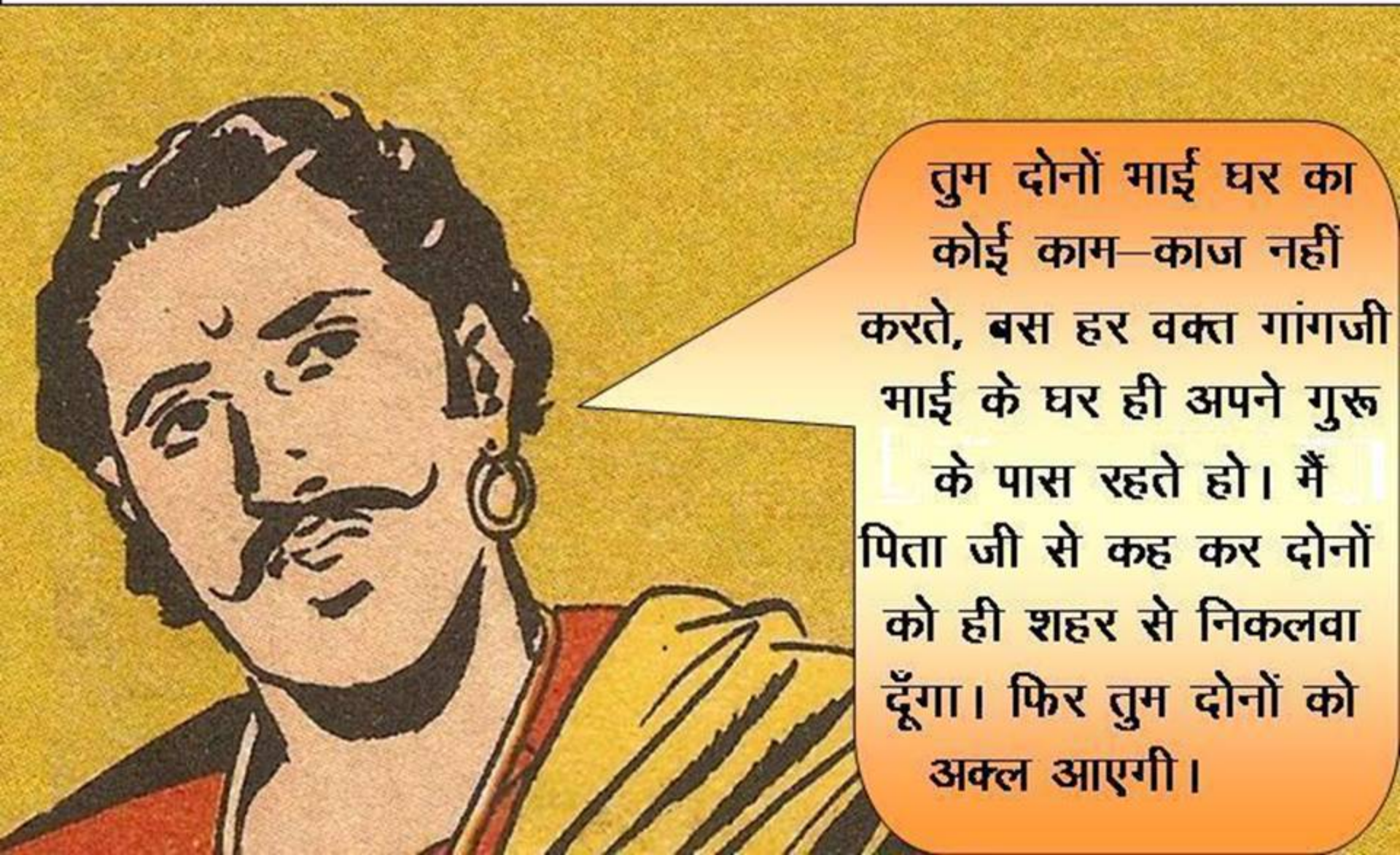

अपने सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी एवं गांग जी भाई के प्रति अपमान के शब्द सुनकर दोनों को गुस्सा आ गया और अपने बड़े भाई को मारने के लिए टूट पड़े। सांवलिया ठाकुर कूद कर रसोई में माता जी के पास चले गए और माता जी ने उन्हें बचा लिया।

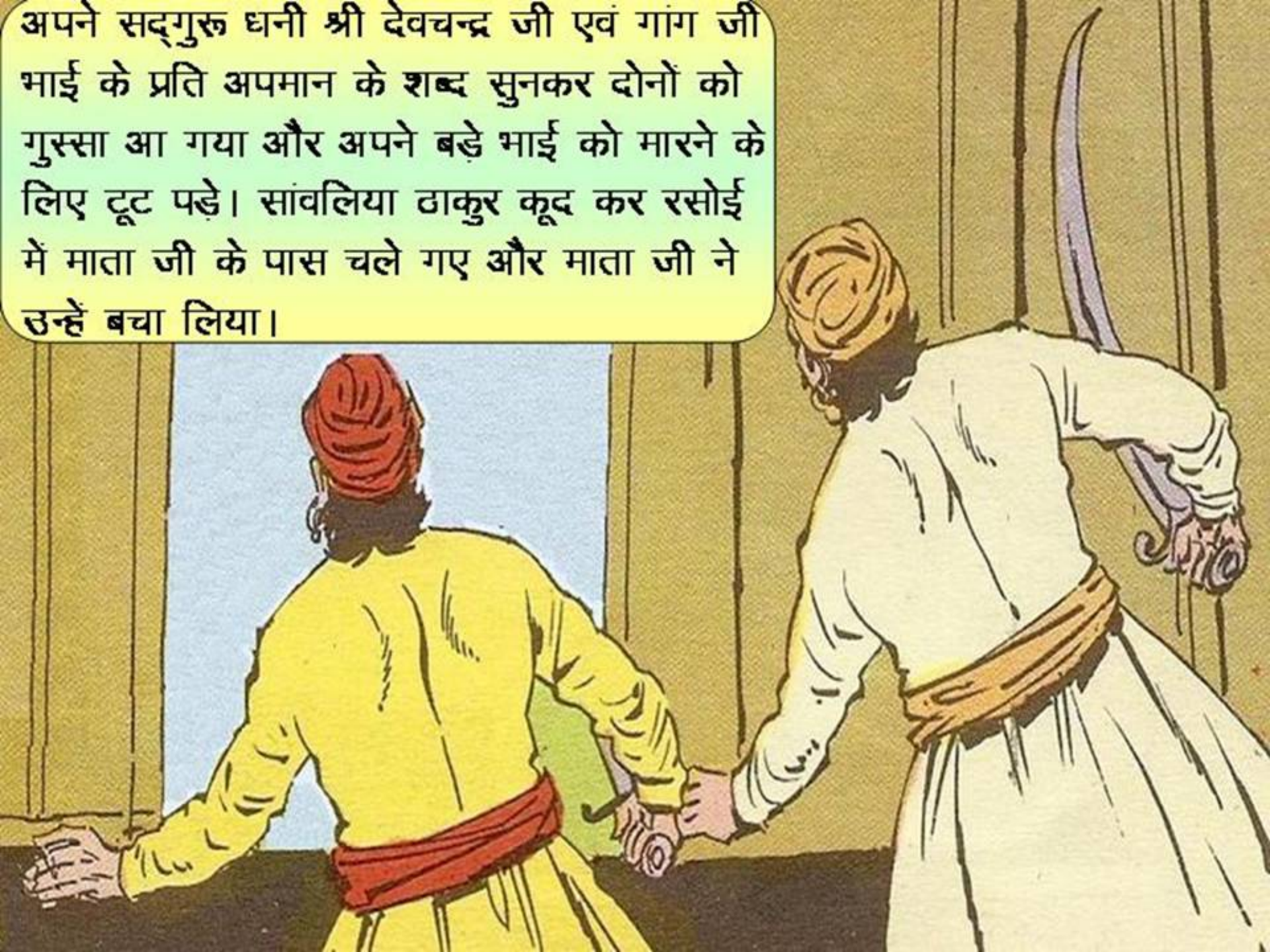

जैसे ही मिहिर राज जी के पिता जी घर आए, उनकी माता ने उन्हें सारी बीती घटना ज्यों की त्यों सुना दी।
देखिए जी! आप दरबार में सबका फैसला करते रहते हैं, आज घर में भी आपको फैसला करना होगा। आज आपके बेटों की आपस में बहुत लड़ाई हुई है।

बेटा!तुमने अपने बड़े भाईयों से झगड़ा क्यों किया? यह तुम्हें शोभा नहीं देता।
पिता जी! इन्होंने हमारे सद्गुरू के बारे में अपशब्द क्यों बोला? क्या इन्हें यह सब शोभा देता है?

केशव ठाकुर जी ने मिहिर राज जी को समझाया.....
तुम भी कान्ह जी भट्ट से कथा सुनने क्यों नहीं जाते क्योंकि 14 बरस तक देवचन्द्र जी ने भी तो उन्हीं से ही कथा सुनी थी। उनके गुरू तो तुम्हें ज्यादा ही ज्ञान देंगे। इसलिए तुम्हें सीधे वहीं जाना चाहिए।

ठीक है, पिता जी! यदि कान्ह जी भट्ट हमारे प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो हम दोनों भाई उनसे ही रोज कथा सुनने के लिए जाया करेंगे और यदि वह उत्तर नहीं दे पाए तो आप हमें हमारे सद्गुरू के पास जाने से नहीं रोंकेगे और न ही कोई भी इस घर में मेरे सद्गुरू के बारे में कोई भी अपशब्द कहेगा।

ठीक है बेटा! यदि कान्ह जी भट्ट तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाए तो कोई भी तुम दोनों भाईयों कों देवचन्द्र जी के पास जाने से नहीं रोकेगा और कोई भी घर में किसी भी प्रकार के अपशब्द नहीं बोलेगा।

केशव ठाकुर जी दोनों भाईयों को कान्ह जी के पास ले गए।
हे गुरूदेव! मेरे बेटे के कुछ संशय हैं, कृपया आप उनका निवारण जरा ध्यानपूर्वक करना।
अवश्य! जो मेरे से बन पड़ेगा, मैं जरूर करूँगा।

कहो वत्स! क्या पूछना चाहते हो?
हे महात्मन्! आप कृपया यह बताईए कि श्रीमद्भागवत के अनुसार कितने गुण है, कितने लोक है तथा कितने तत्व है और कितने प्रकार की सृष्टि की प्रलय लिखी हुई है?

तब कान्ह जी भट्ट ने कहा...

यहाँ इस कालमाया के ब्रह्माँड में सत ,रज और तम तीन गुण है, चौथा गुण नहीं है। पृथ्वी, जल, अग्नि वायु और आकाश ये पाँच तत्व है,छठा तत्व नहीं है। अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल ये नीचे तथा मृत्यु लोक, भूर्लोक, भुवर्लोक, महर्लोक, जनलोक,तपलोक, सत्यलोक यह सात ऊपर, यह सब मिलाकर चौदह लोक है। पन्द्रहवाँ लोक नहीं है। नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत तथा महाप्रलय, ये चार प्रकार की प्रलय है।

और महाप्रलय में तो 14 लोक, 5 तत्व और 3 गुणों और सम्पूर्ण सृष्टि का नाश निश्चित ही है, ऐसा श्री मद्भागवत कहती है।

तब श्री मिहिर राज जी उनसे प्रश्न पूछते हैं कि.....

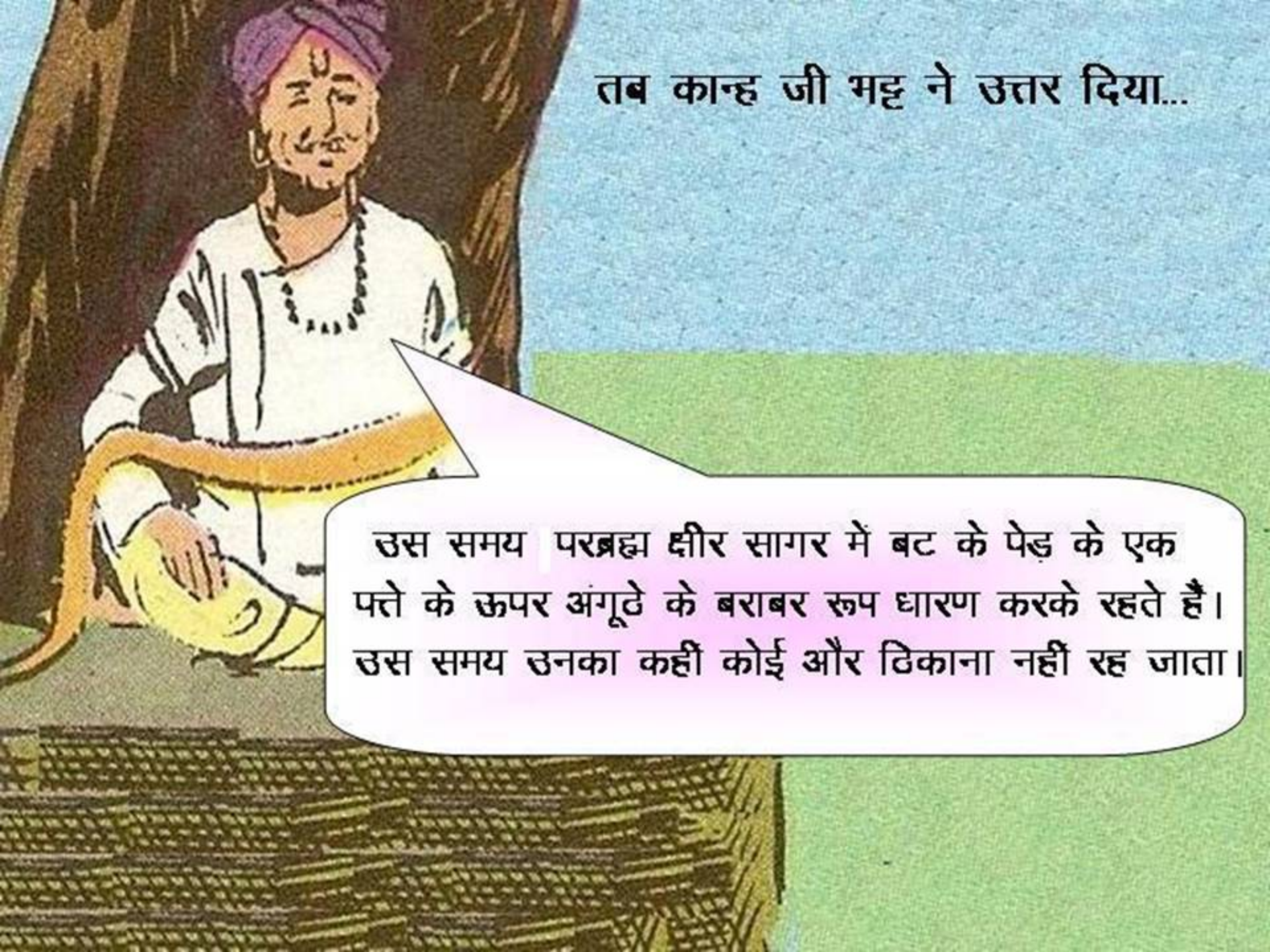
तब कान्ह जी भट्ट ने उत्तर दिया...
उस समय परब्रह्म क्षीर सागर में बट के पेड़ के एक पत्ते के ऊपर अंगूठे के बराबर रूप धारण करके रहते है। उस समय उनका कहीं कोई और ठिकाना नहीं रह जाता।

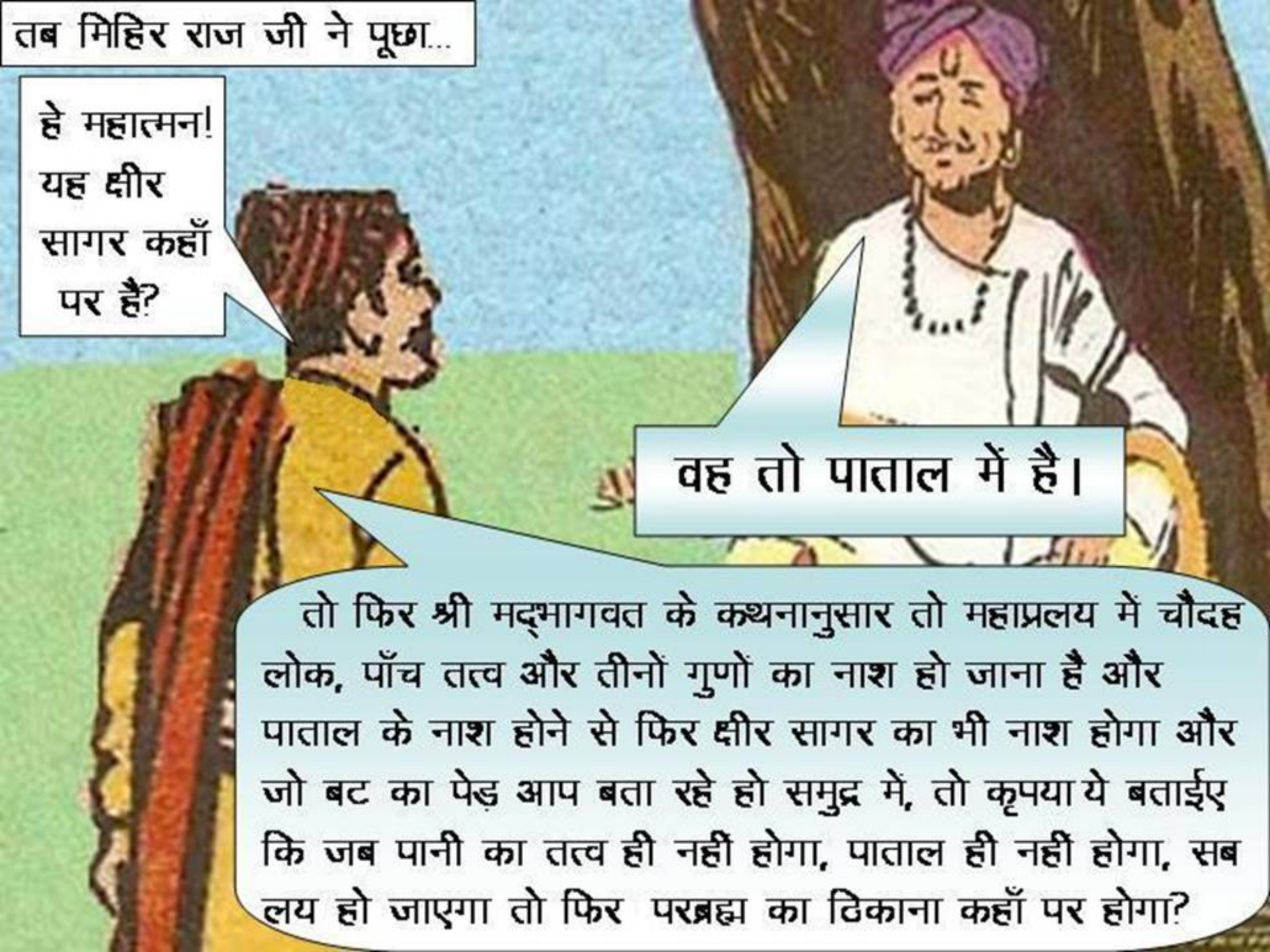
तब मिहिर राज जी ने पूछा...
हे महात्मन! यह क्षीर सागर कहाँ पर है?
वह तो पाताल में है।
तो फिर श्री मद्भागवत के कथनानुसार तो महाप्रलय में चौदह लोक, पाँच तत्व और तीनों गुणों का नाश हो जाना है और पाताल के नाश होने से फिर क्षीर सागर का भी नाश होगा और जो बट का पेड़ आप बता रहे हो समुद्र में, तो कृपया ये बताईए कि जब पानी का तत्व ही नहीं होगा, पाताल ही नहीं होगा, सब लय हो जाएगा तो फिर परब्रह्म का ठिकाना कहाँ पर होगा?

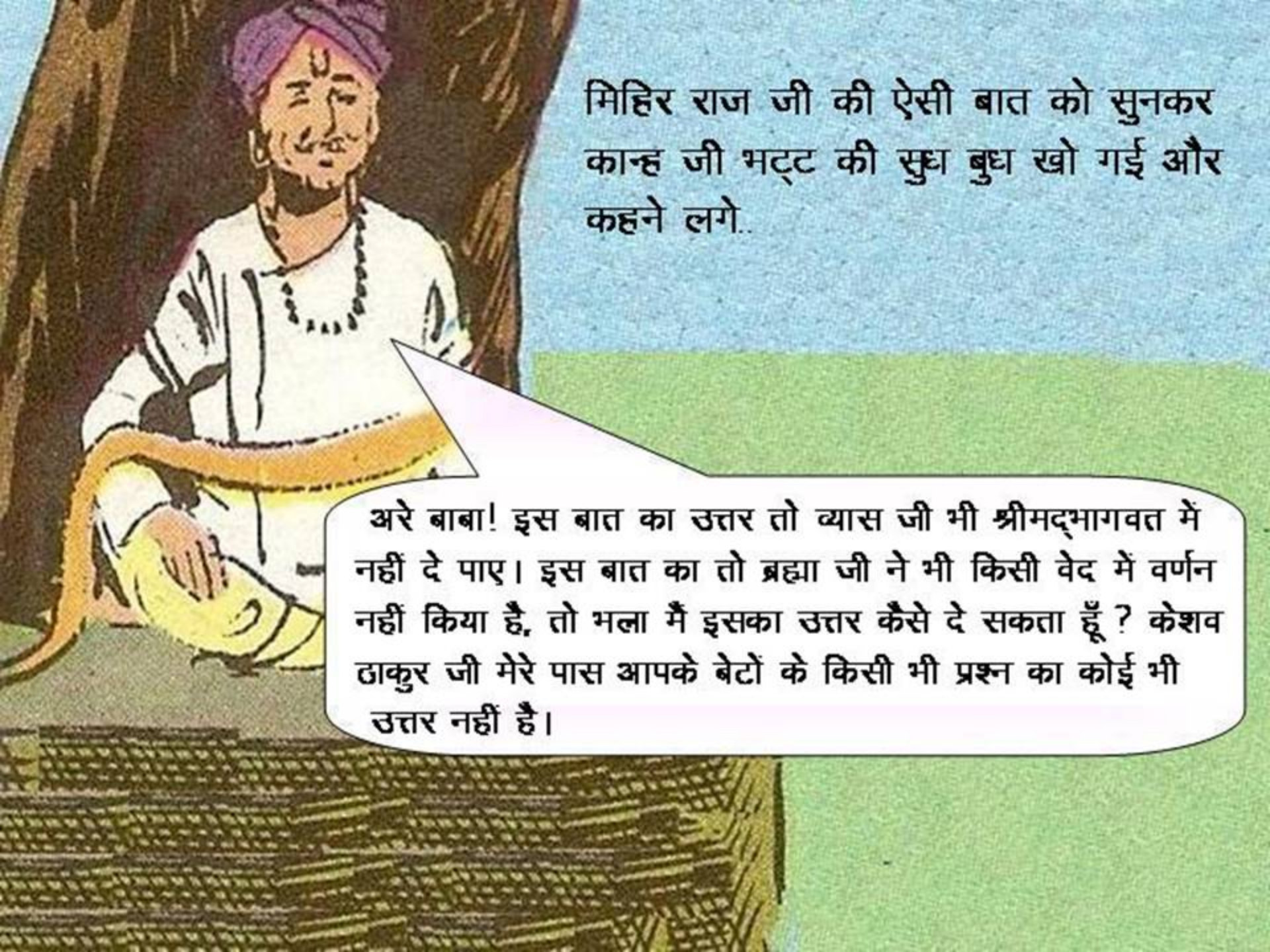
मिहिर राज जी की ऐसी बात को सुनकर कान्ह जी भट्ट की सुध बुध खो गई और कहने लगे..
अरे बाबा! इस बात का उत्तर तो व्यास जी भी श्रीमद्भागवत में नहीं दे पाए। इस बात का तो ब्रह्मा जी ने भी किसी वेद में वर्णन नहीं किया है, तो भला मैं इसका उत्तर कैसे दे सकता हूँ ? केशव ठाकुर जी मेरे पास आपके बेटों के किसी भी प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं है।

केशव ठाकुर जी ने फिर
मिहिर राज जी से कहा.....

एक दिन बाल बाई ने सद्गुरु को मिहिर राज के बारे में बताया कि.....

मिहिर राज की ऐसी हालत सुन कर धनी श्री देवचन्द्र जी ने उससे पूछा कि...

हे धाम के धनी! आप कृपया मेरे अवगुण दूर कीजिए। आप तो कहते हो कि सबकी आत्मा एक है और हम सब श्री राज जी की ही अँगनायें है, तो फिर ऐसा क्यों है कि आपको परमधाम नजर आता है और मुझे नहीं।

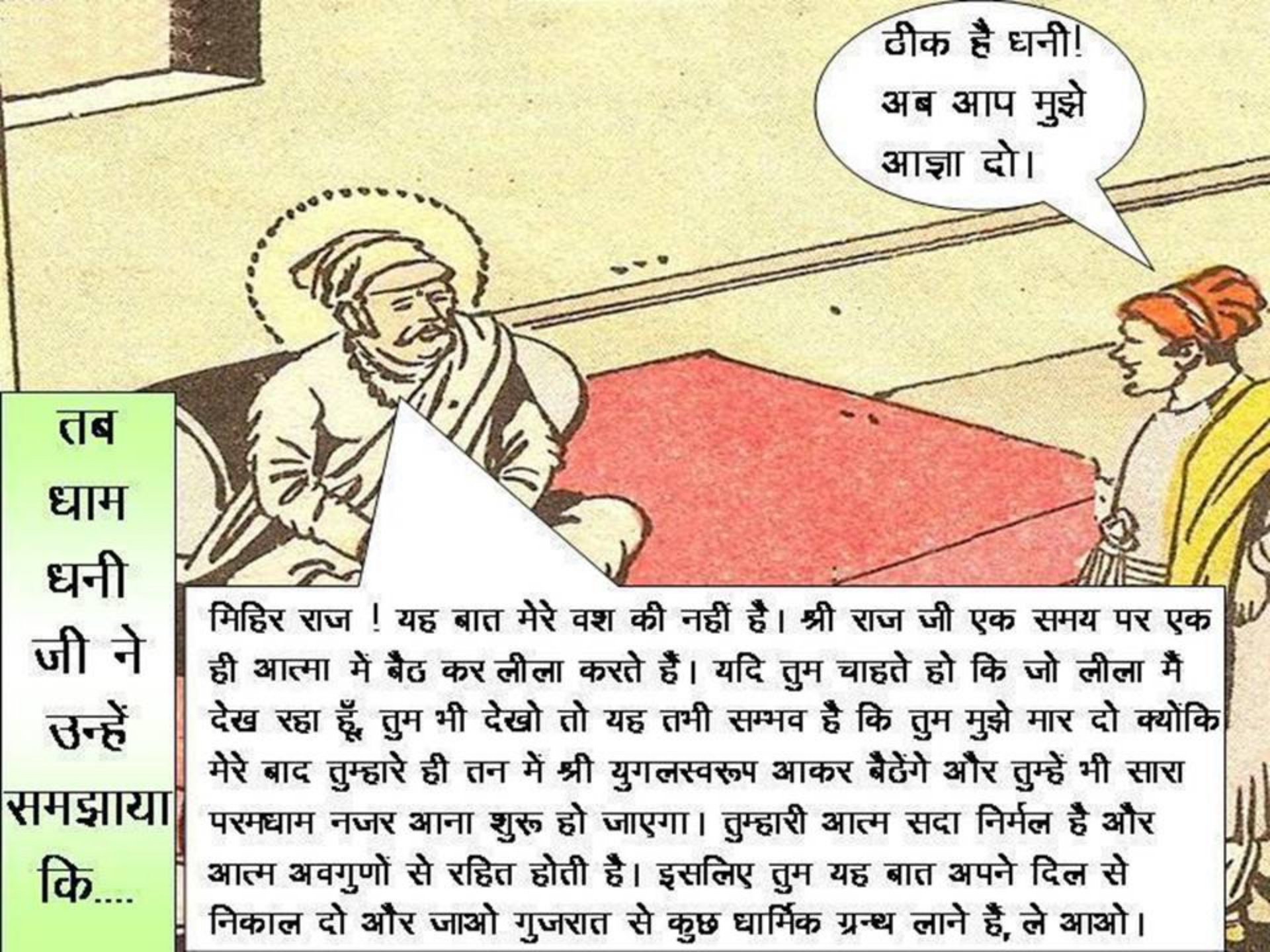
ठीक है धनी! अब आप मुझे आज्ञा दो।
तब धाम धनी जी ने उन्हें समझाया कि....
मिहिर राज ! यह बात मेरे वश की नहीं है। श्री राज जी एक समय पर एक ही आत्मा में बैठ कर लीला करते हैं। यदि तुम चाहते हो कि जो लीला मैं देख रहा हूँ, तुम भी देखो तो यह तभी सम्भव है कि तुम मुझे मार दो क्योंकि मेरे बाद तुम्हारे ही तन में श्री युगलस्वरूप आकर बैठेंगे और तुम्हें भी सारा परमधाम नजर आना शुरू हो जाएगा। तुम्हारी आत्म सदा निर्मल है और आत्म अवगुणों से रहित होती है। इसलिए तुम यह बात अपने दिल से निकाल दो और जाओ गुजरात से कुछ धार्मिक ग्रन्थ लाने हैं, ले आओ।

वहाँ से वापस आने के बाद फिर धाम धनी ने मिहिर राज जी को खेता भाई के पास उनके काम काज में हाथ बँटाने के लिए अरब में भेज दिया।

ठीक है,
धनी! जैसा आपका
हुक्म। मैं आज ही जाने
की तैयारी करता हूँ।

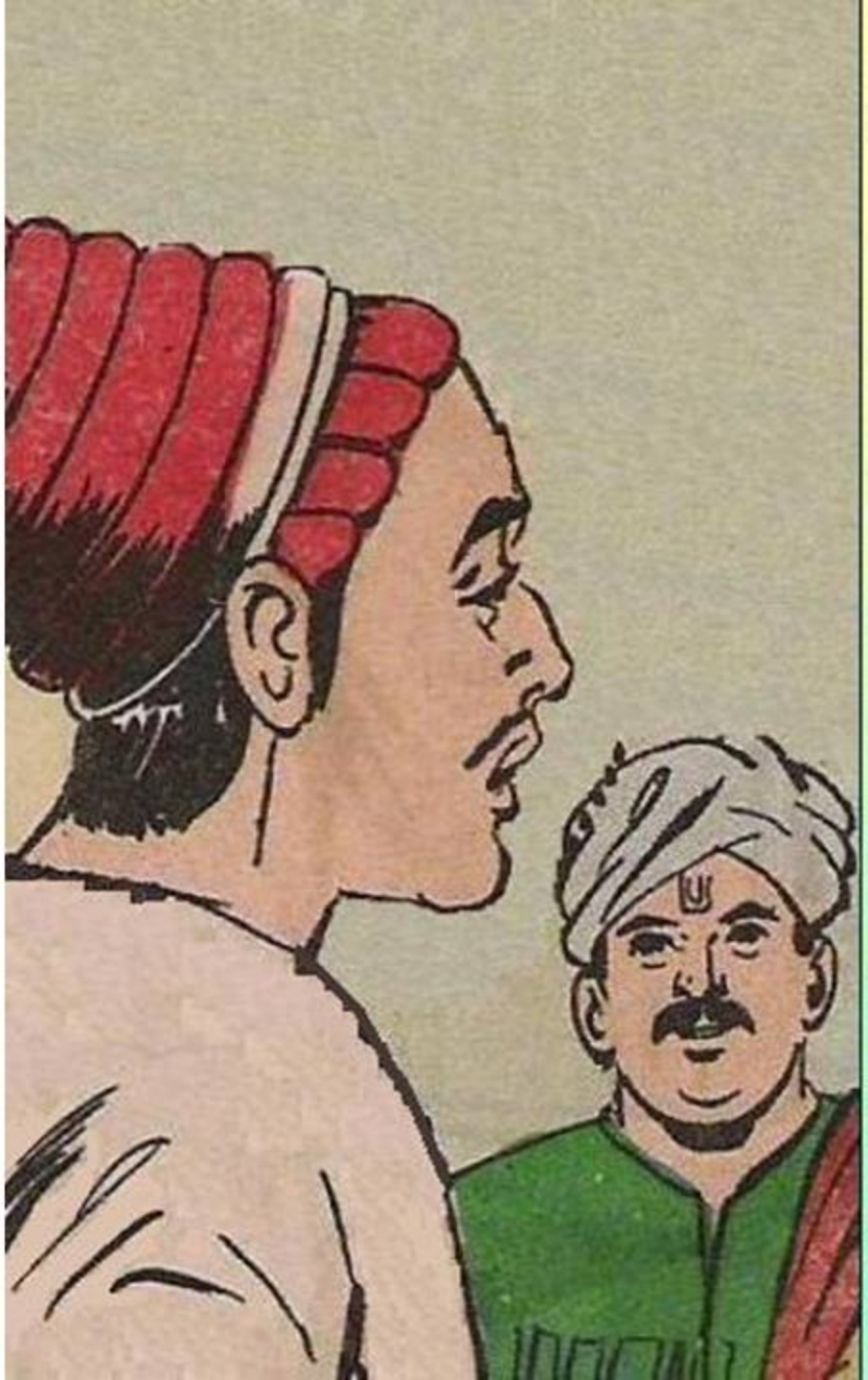

अरब में खेता भाई जी ने उन्हें अपना सारा कारोबार समझा दिया। मिहिर राज जी समय मिलने पर उन्हें चर्चा भी सुनाते, मगर अंकूर न होने की वजह से खेता भाई जी के दिल को चोट नहीं लगती थी और वह केवल अपने काम धन्धे में ही लगे रहते थे।

मिहिर राज जी भी अपनी सेवा समझ कर तन, मन से सारा काम करते। खेता भाई भी उनसे बहुत खुश थे।

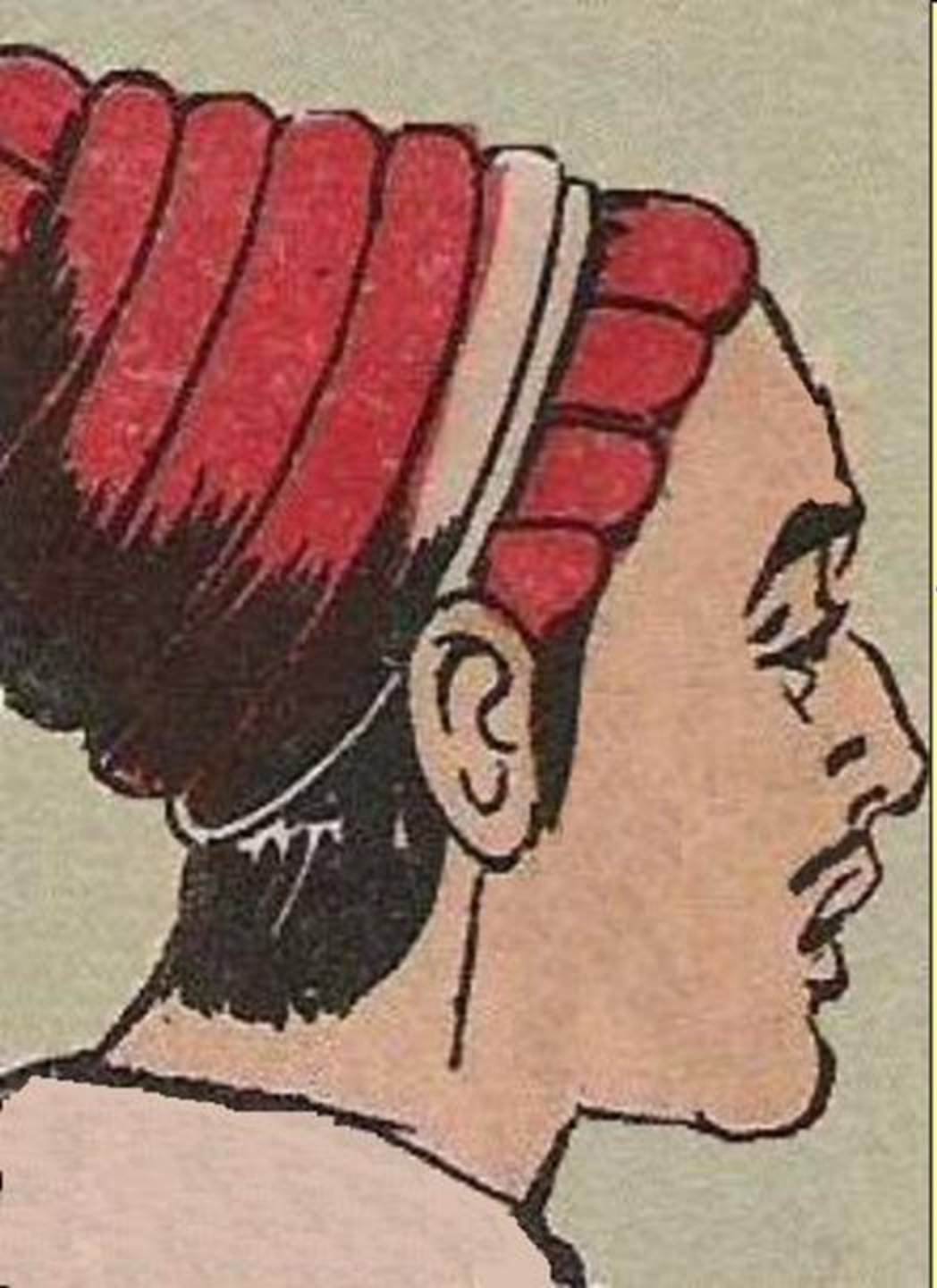

एक दिन अचानक
खेता भाई का धाम
गमन हो गया, जिससे
मिहिर राज जी को
बहुत दुःख हुआ।

उधर वहाँ के कोतवाल शेख सल्लाह ने खेता भाई जी की सारी सम्पत्ति कुर्क करने का हुक्म भेज दिया।
हे धनी!अब यह मुसीबत कहाँ से आ गई ?

सिपाहियों ने आकर मिहिर राज जी को सूचना दी।
कोतवाल साहिब के हुक्म के मुताबिक आपको इत्तला की जाती है कि खेता भाई जी के कुल गोदाम, घर और सम्पत्ति को शाही खज़ाने में जमा किया जाता है, क्योंकि उनका कोई भी रिश्तेदार वारिस नहीं है।

मिहिर राज जी ने दरबारियों से मुलाकात कर सब वापस लेने की कोशिश की, पर किसी ने भी उनकी बात नहीं सुनी। फिर उदास होकर वापस जाने की सोच ही रहे थे, कि श्री राज जी ने एक आरब का रूप धर कर उनसे मुलाकात की।
वापस जाकर सदगुरू को क्या मुँह दिखाऊँगा ? क्या करूँ ? कुछ समझ में नहीं आ रहा।
ए खुदा के बन्दे! तुम किधर जा रहा है ? ओय! बहुत उदास लगता है ? अमको भी बताओ।

फिर सारी आपबीती मिहिर राज जी ने उनको सुना दी।

ओय बच्चे! मायूस मत हो। तुम किधर वापस जाने का सोचता है। तुम ऐसा करो, जैसा मैं तुमको बताता हूँ। जब सुल्तान नमाज़ के वास्ते मस्जिद में जाएगा तो गोशे तुम घबराना नहीं। तुम उसका पल्ला वहीं पर झटक देना। इन्शां अल्लाह! वह तुम्हारी फरियाद जरूर सुनेगा। ओय! हमारे ईधर नाइन्साफी कभी नहीं होती।
इतना कहकर आरब रूपधारी श्री राज जी चले गए।

मिहिर राज जी मस्जिद के बाहर खड़े हो गए।

जैसे ही सुल्तान जुम्मे की नमाज़ पढ़ने आया.....

श्री मिहिर राज जी ने दौड़ कर
उनका दामन झटक दिया।

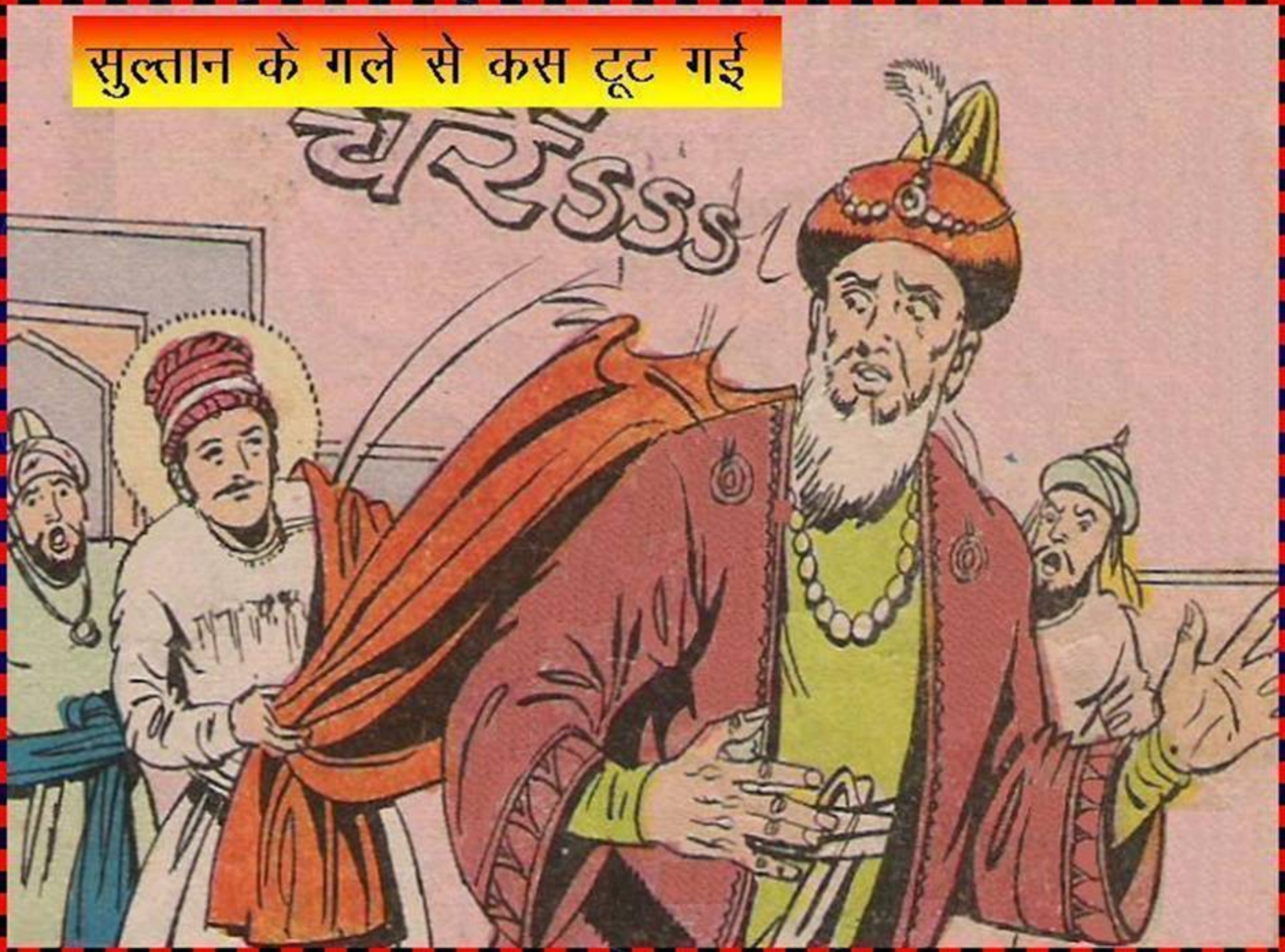

सुल्तान के गले से कस टूट गई

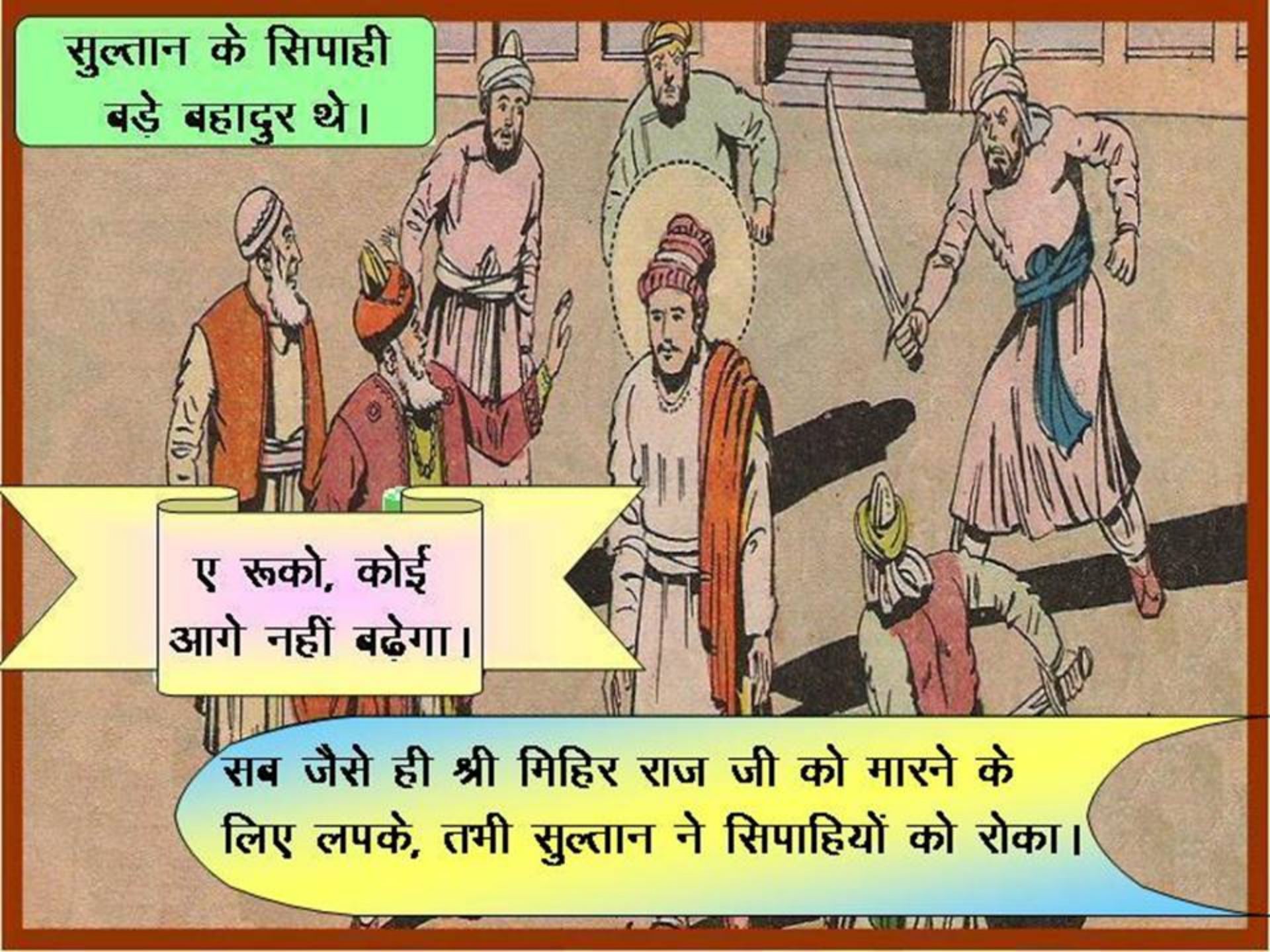
सुल्तान के सिपाही
बड़े बहादुर थे।
ए रूको, कोई
आगे नहीं बढ़ेगा।
सब जैसे ही श्री मिहिर राज जी को मारने के
लिए लपके, तभी सुल्तान ने सिपाहियों को रोका।

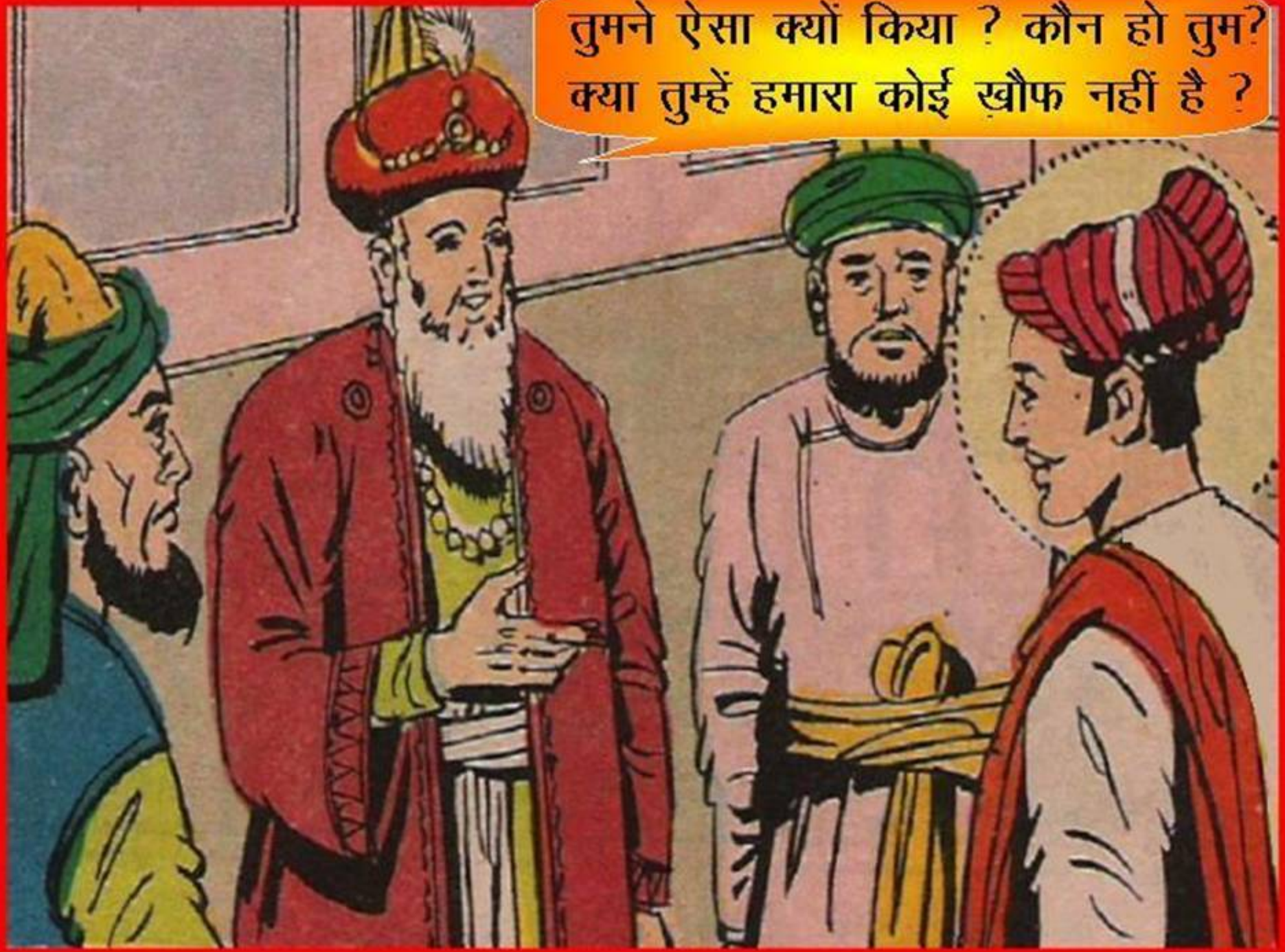
तुमने ऐसा क्यों किया ? कौन हो तुम?
क्या तुम्हें हमारा कोई ख़ौफ नहीं है ?

फिर आरब रूपधारी श्री राज जी ने जैसा कहा था, वैसे ही मिहिर राज जी ने सब सुल्तान को बोल दिया कि.....

हे बादशाह! मैं खुदा के हुक्म से आप से इन्साफ माँगने आया हूँ। मुझ पर आपके राज में बहुत जुल्म हुआ है।

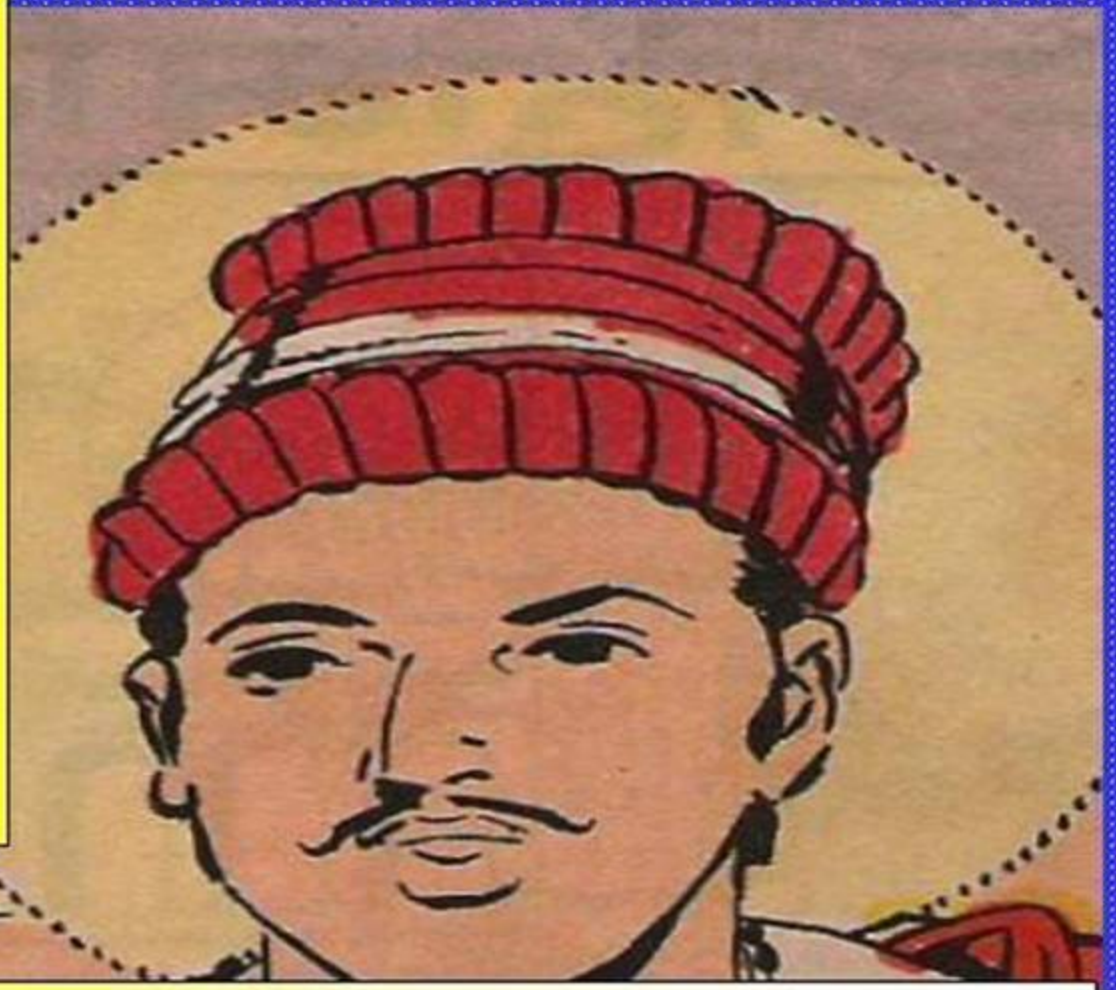

चाहे तो आज इन्साफ दे दीजिए, नही तो वक्त आखिरत को जब खुदा–तआला इन्साफ करने तख्त पर बैठेंगे तो तब मै वहाँ आपका दामन झटकूँगा और आप खुदा के सामने गुन्हेगार बन कर खड़े होंगे।

सुल्तान अन्दर से घबरा गया।
क्यामत की ये बातें तो कोई खुदा का नेक बन्दा ही कर सकता है।

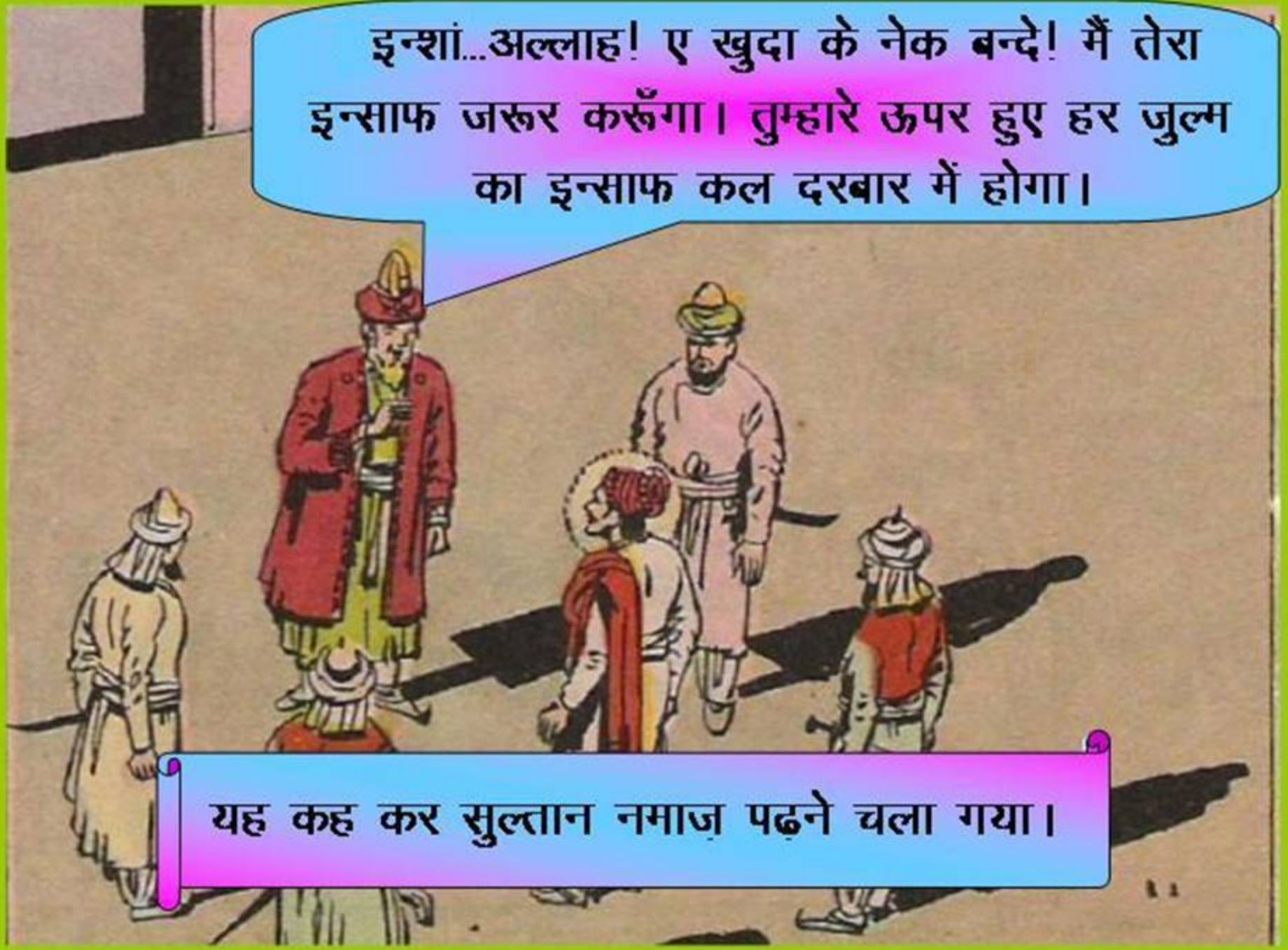
इन्शां...अल्लाह! ए खुदा के नेक बन्दे! मैं तेरा इन्साफ जरूर करूँगा। तुम्हारे ऊपर हुए हर जुल्म का इन्साफ कल दरबार में होगा।
यह कह कर सुल्तान नमाज़ पढ़ने चला गया।

जब अगले दिन दरबार लगा तो.....
अरे! मैंने उस शख़्स का नाम तो पूछा ही नही। अब उसे दरबार में बुला कर उसका कैसे इन्साफ करूँ ?

सुल्तान चोपदार को बुलवाता है।
जाओ! उस शख़्स को ढूँढ कर लाओ। जिसने बीच रास्ते में कल हमारा दामन झटका था।

चोपदार शहर में
मुनादी करवाता है।
जिस किसी शख्स ने कल सुल्तान का दामन
झटका था, वह सामने आए। दरबार में
सबसे पहले उसी का इन्साफ किया जाएगा।

मिहिर राज जी आगे निकल कर आते हैं।

दरबार पहुँचने पर.....
ए खुदा के नेक बन्दे! क्या तुमने पहले हमारे दीवान से फरियाद की थी ?

मिहिर राज जी ने यह कह कर दीवान को बचा लिया...
"जी नहीं, हजूर! मुझे पता ही नहीं था कि पहले फरियाद दीवान को करनी पड़ती है।"

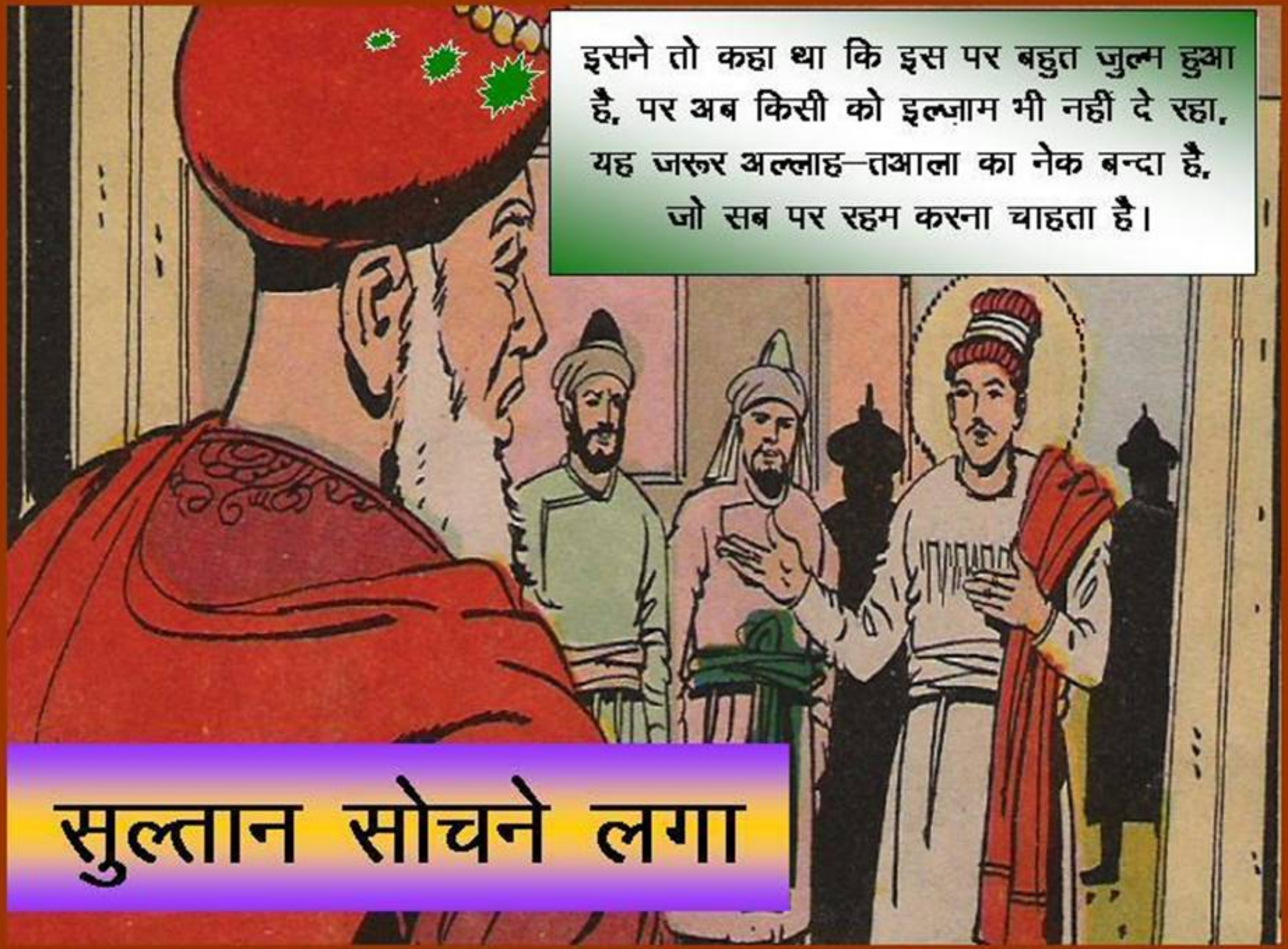
इसने तो कहा था कि इस पर बहुत जुल्म हुआ है, पर अब किसी को इल्ज़ाम भी नहीं दे रहा, यह जरूर अल्लाह–तआला का नेक बन्दा है, जो सब पर रहम करना चाहता है।
सुल्तान सोचने लगा

सुल्तान ने फिर सारी बात विस्तार से मिहिर राज जी से पूछी।
खैर चलो, अब विस्तार से मुझे बताओ कि आखिर सारी बात क्या है?

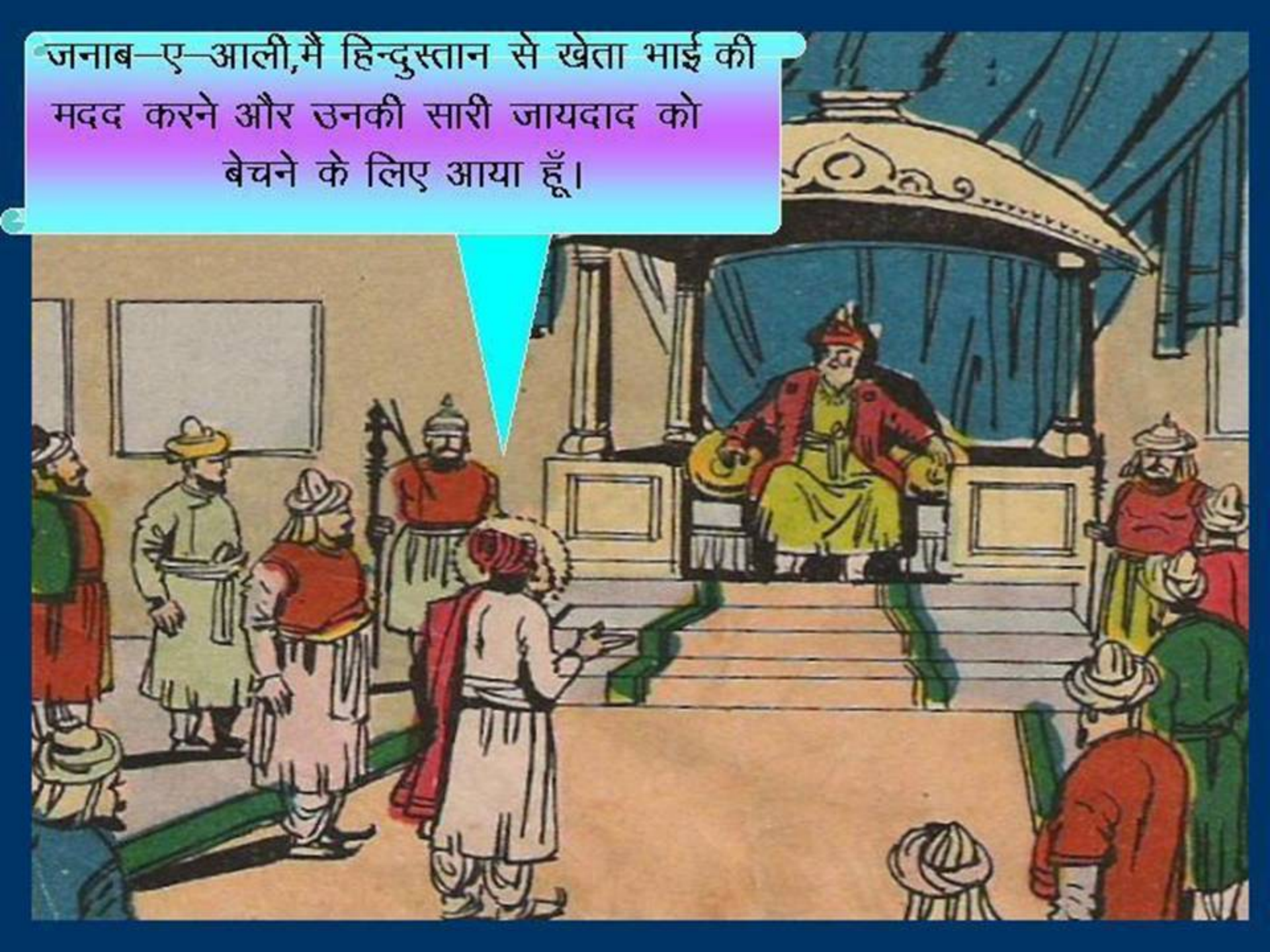
जनाब–ए–आली,मैं हिन्दुस्तान से खेता भाई की मदद करने और उनकी सारी जायदाद को बेचने के लिए आया हूँ।

वे हमारे खानदान से हैं।

यह सब काम
निपटाने में चार साल लग गए और
जब सब निपटने को आया तो खेता माई
जी अचानक गुजर गए।

मै इस सदमें से अभी उबरा भी नहीं था जनाब कि आपके मुलाज़िम शेख सल्लाह आए और उन्होंने सारी जायदाद अपने कब्ज़े में ले ली।

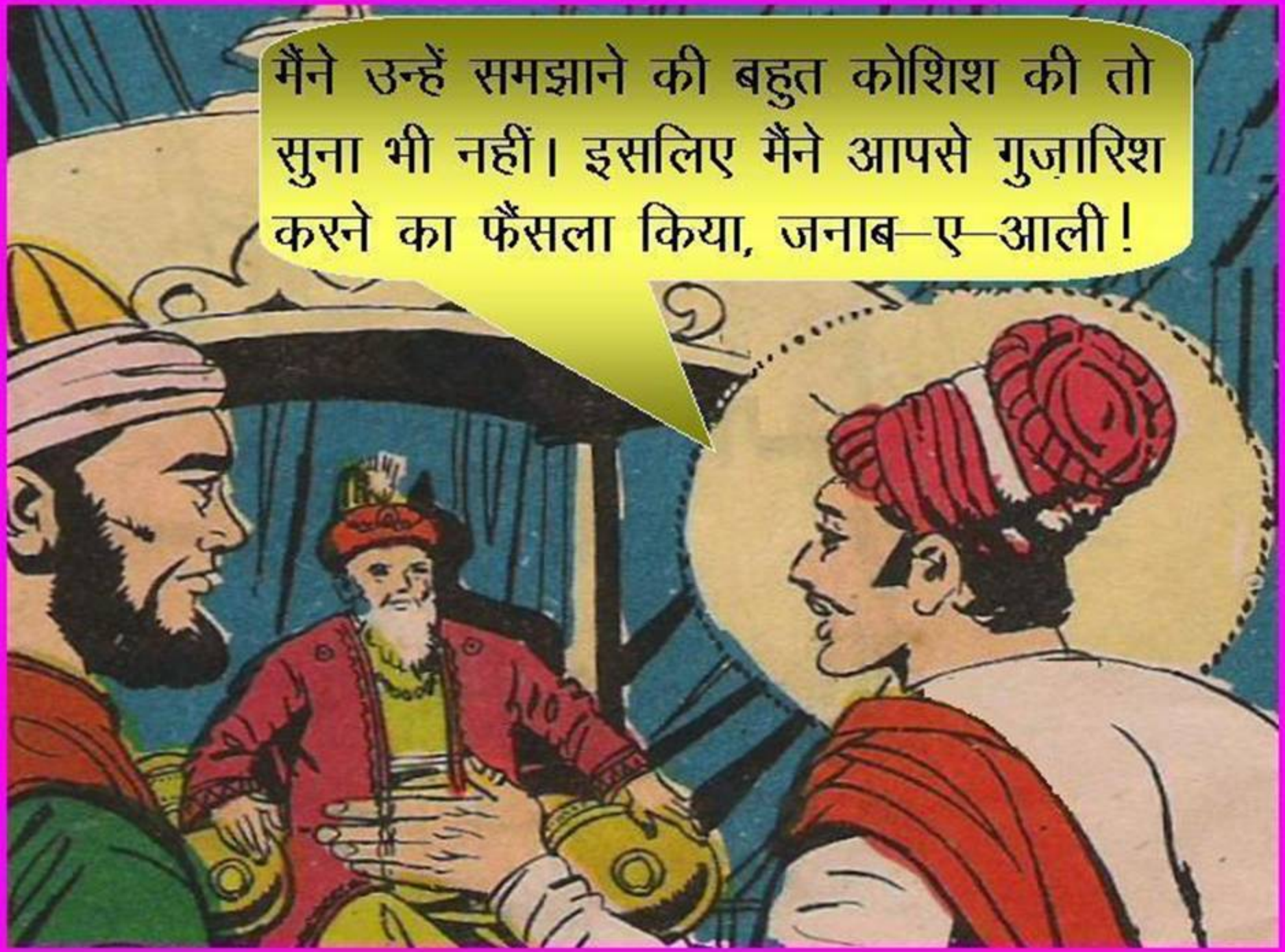
मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की तो सुना भी नहीं। इसलिए मैंने आपसे गुज़ारिश करने का फैंसला किया, जनाब–ए–आली!

तुम बिल्कुल सही जगह पर पहुँच गए हो। मै तुम्हें खेता भाई की सारी जायदाद हिन्दुस्तान ले जाने का हक देता हूँ।

तभी सुल्तान ने शेखसल्लाह के नाम फरमान जारी कर दिया
शेख सल्लाह! फरमान सुनते ही तुरन्त इनका जो भी सामान है, वह इन्हें वापस दे दो, नही तो तुम्हारा सिर कलम कर दिया जाएगा।

सुल्तान के सिपाहियों को लेकर मिहिर राज जी
शेख सल्लाह के घर पहुँचे।

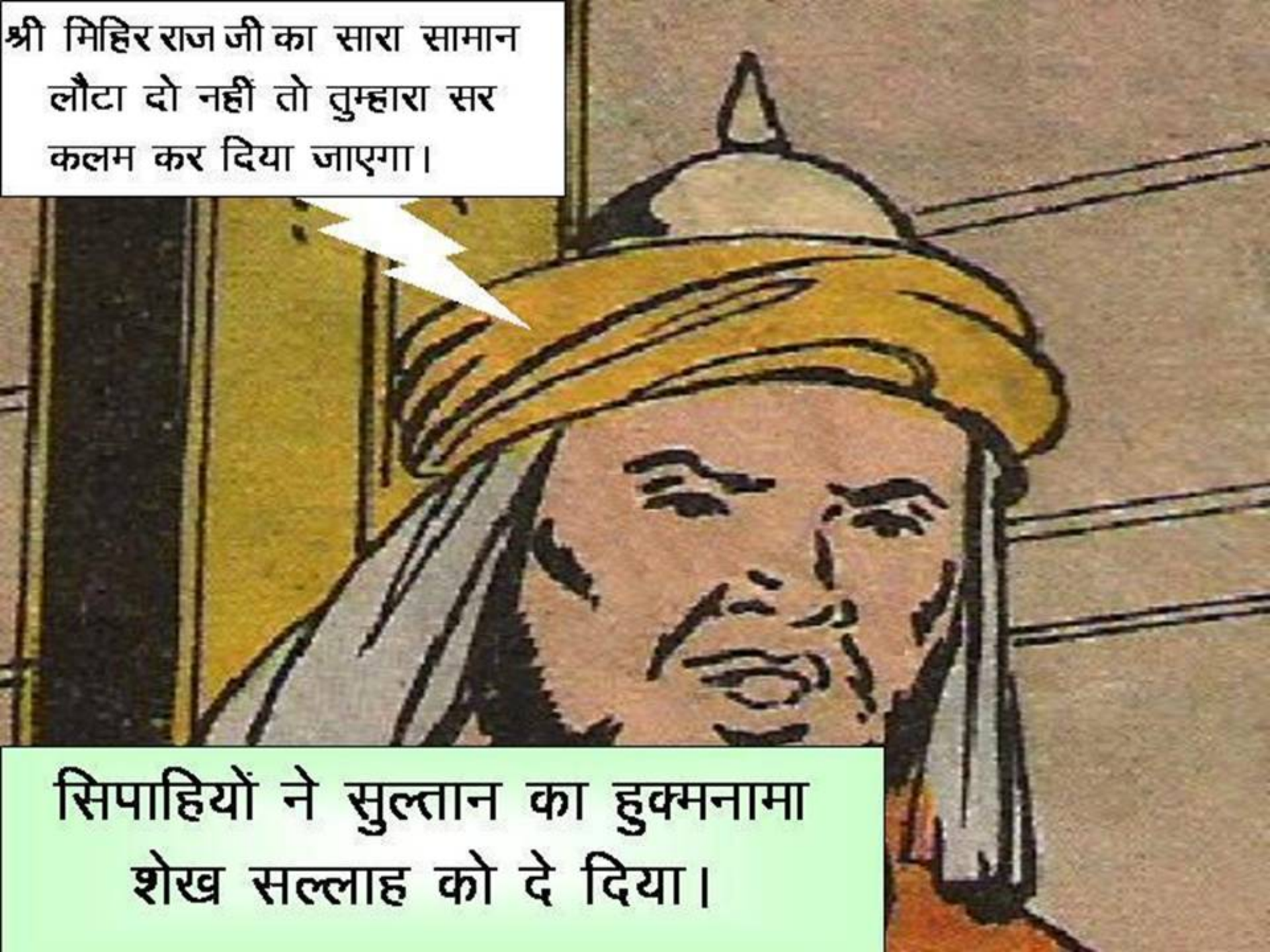

सिपाहियों ने सुल्तान का हुक्मनामा शेख सल्लाह को दे दिया।

शेख सल्लाह ने ऐसा सख़्त हुक्म पढ़ते ही तुरन्त कुल गोदामों की चाबी मिहिर राज जी को सौंप दी।

सब काम निपटा कर मिहिर राज जी घर पहुँचे।

शेख सल्लाह अपनी बेईज़्जती सहन न कर सका और उसने रातों रात सारे गोदामों को और मिहिर राज जी के घर को आग लगा दी।

अरे! अरे! यह आग कैसे लग गई ?
मिहिर राज जी आग को देख कर घबरा गए....

मिहिर राज जी सावधानी पूर्वक घर से बाहर निकले।
आग!

हे राज! जैसा
आपका हुक्म।

आग के हादसे के बाद मिहिरराजजी ने सारी हकीकत हिन्दुस्तान भिजवाई
सुनो, खेता भाई जी के धाम गमन की सूचना धनी श्री देवचन्द्र जी को हिन्दुस्तान भिजवा दो।

ऐसा दुःख भरा समाचार सुनते ही सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने अपने पुत्र बिहारी जी और गांगजी माई के सुपुत्र श्याम जी को मिहिरराज जी के पास भेज दिया।

दोनों बिहारी जी और श्याम जी
मिहिर राज जी के पास पहुँचे।
आईए बिहारी जी और श्यामजी! आपके दर्शन
के लिए तो मेरी आँखे तरस गई थीं।

मिहिर राज जी ने सारी बीती बातें उन्हें सुना दी कि कैसे शेख सल्लाह ने उन पर कितने जुल्म ढाए और कैसे उन्होंने सुल्तान से फरियाद की ?
देखिए न! यह सारी माया की मुसीबतें एक साथ ही घटित हो गई और मै बेबस होकर कुछ न कर सका।

बिहारी जी! खेता भाई जी की अपार सम्पत्ति के छोटे हिस्से को छोड़ कर शेष सब नष्ट हो गया है।

दोनों के मन में कुफर आ गया।
श्याम भाई! मिहिर राज झूठ बोल रहा है। इसी ने ही खेता भाई की सारी जायदाद हड़प ली है।

जब दोनों वापिस हिन्दुस्तान आए तो उन्होंने
श्री देवचन्द्र जी के सामने चुगली कर दी।
पिता जी! मिहिर राज ने तो खेता
भाई जी का सारा धन ही
हड़प लिया है।

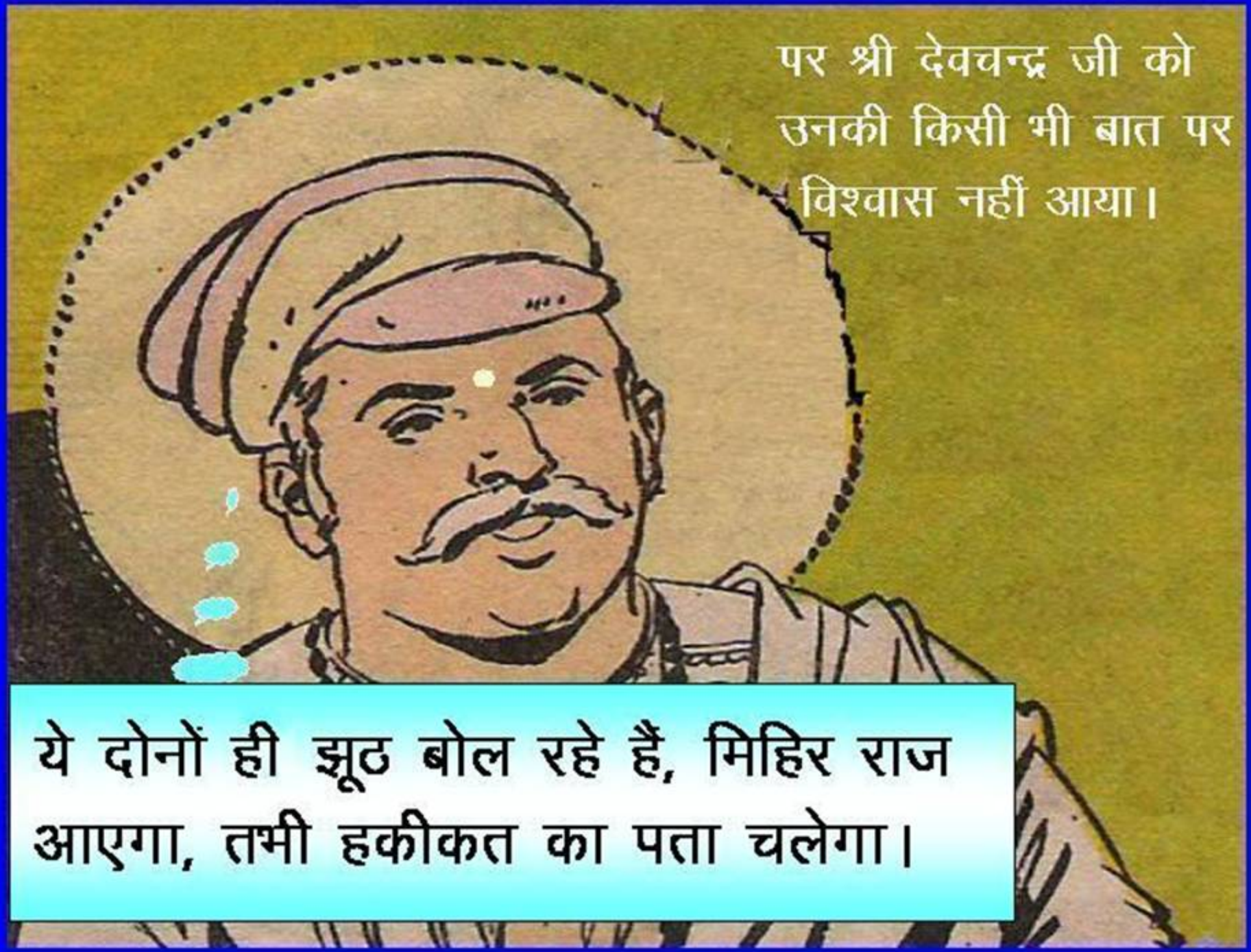
पर श्री देवचन्द्र जी को
उनकी किसी भी बात पर
विश्वास नहीं आया।
ये दोनों ही झूठ बोल रहे हैं, मिहिर राज
आएगा, तभी हकीकत का पता चलेगा।

जब यहाँ बात नहीं बनी तो
दोनों खेता भाई जी की बहन
बालबाई जी के पास चले गए
चलो श्याम! पिता जी को
तो उसी पर ही विश्वास है।

बालबाई जी तो बात सुनते ही भड़क उठीं और राजा के पास जाकर मिहिरराजजी की शिकायत लगा दी।

ठीक है। मैं बन्दरगाह पर चौकी बैठा देता हूँ। जैसे ही वह लौटेंगे उन्हें पकड़ लिया जाएगा।

हे महाराज! मिहिर राज ने मेरे भाई की सारी सम्पत्ति चोरी कर ली है, कृपया मुझे इन्साफ दीजिए।

जैसे ही मिहिर राज
बन्दरगाह पर आए...
वह देखो, मिहिरराज आ रहा है।
जल्दी से उसे पकड़ लो।

मिहिर राज! तुम्हें महाराज के हुक्म के अनुसार और बाल बाई के कहने पर खेता भाई की दौलत चोरी करने के इल्ज़ाम में हिरासत में लिया जाता है।

भाई! मेरे पास तो यह गठरी ही है। तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है।
बाकि जो यह सारा सामान मेरे पास है, वह सब तो श्री खेता भाई जी का ही है, मेरा नहीं है।

राजा के सिपाही मिहिर राज जी का
सारा सामान ज़ब्त कर लेते हैं।

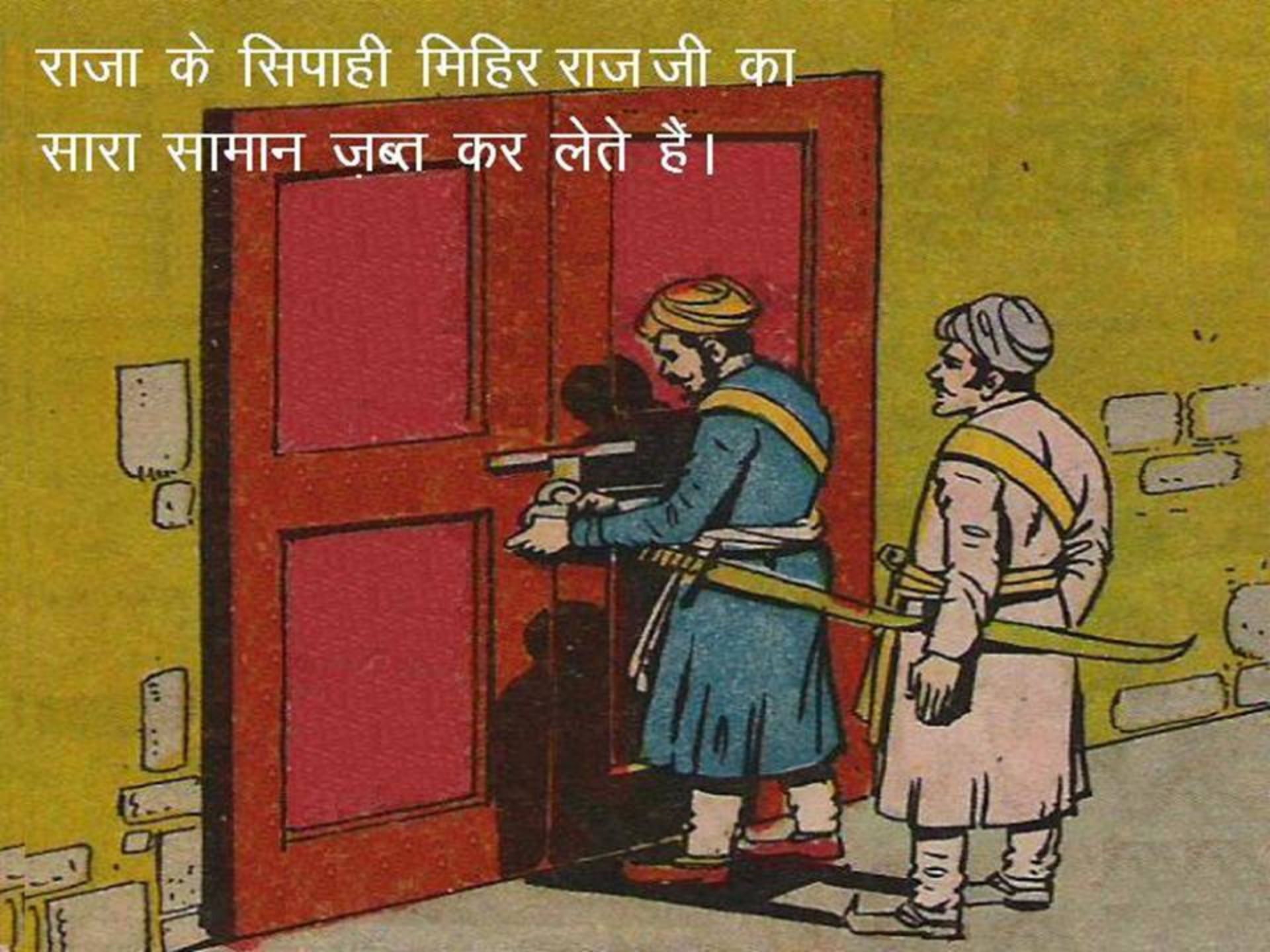

मिहिर राज जी दौड़े
दौड़े सद्गुरू के पास
गए कि कहीं वह भी
उसे गल्त न समझ ले,
पर....

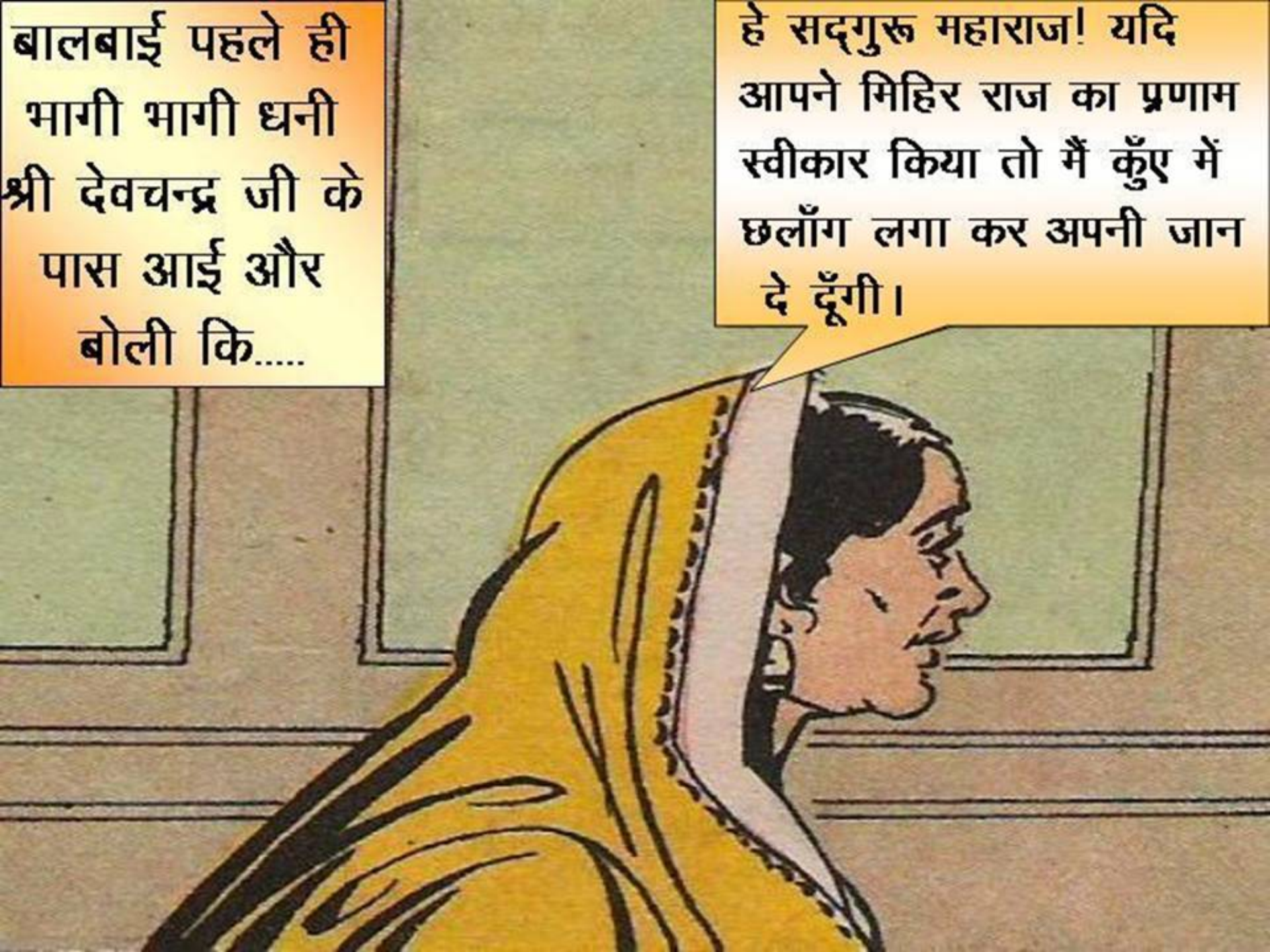
बालबाई पहले ही भागी भागी धनी श्री देवचन्द्र जी के पास आई और बोली कि.....
हे सद्गुरू महाराज! यदि आपने मिहिर राज का प्रणाम स्वीकार किया तो मैं कुँए में छलाँग लगा कर अपनी जान दे दूँगी।

धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज बालबाई की यह बात सुनकर बहुत असमंजस में पड़ गए।
अब मैं क्या करूँ?
और जब मिहिर राज जी आए तो धनी श्री देवचन्द्र जी ने उनका प्रणाम स्वीकार नहीं किया।

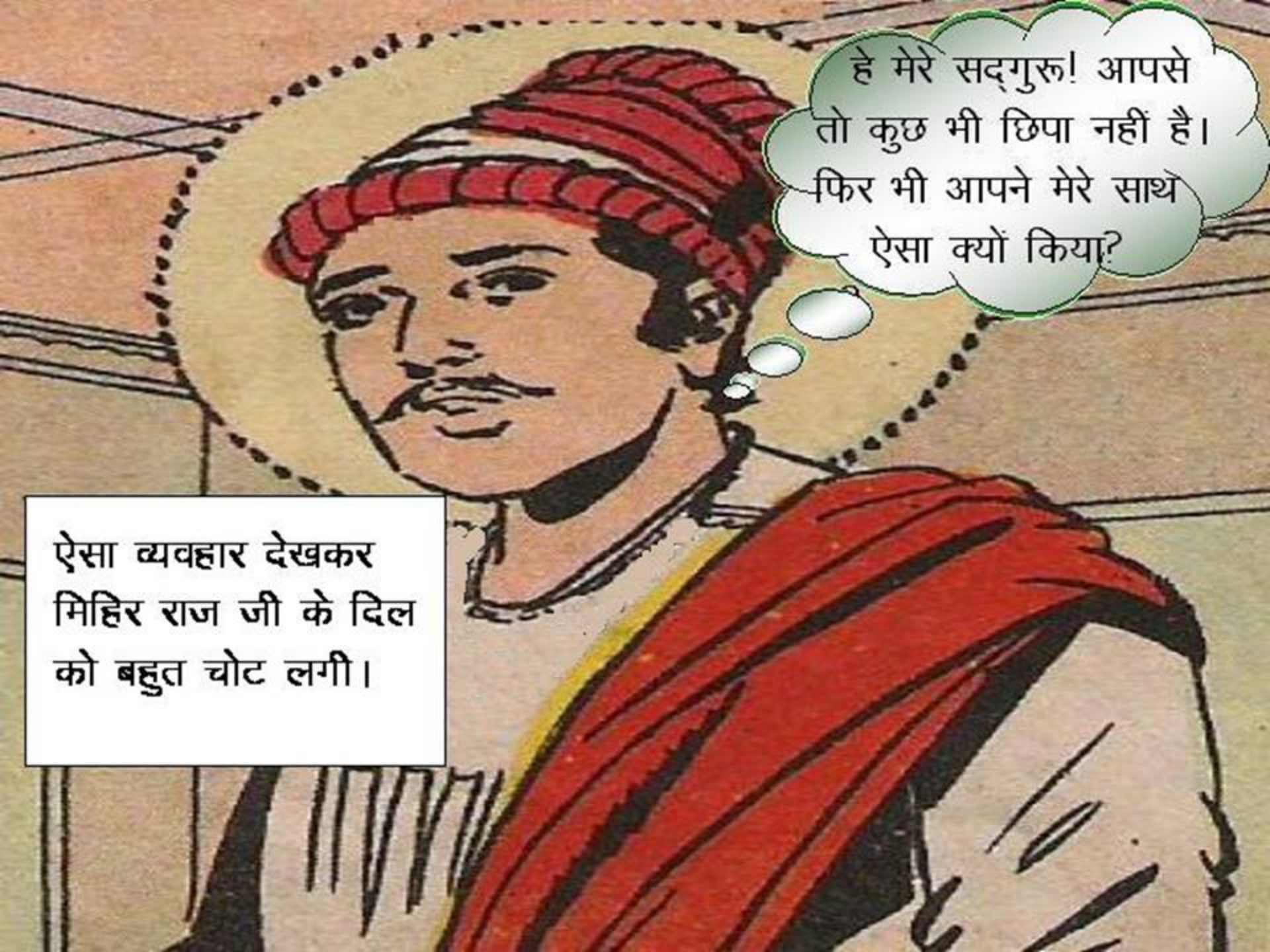
हे मेरे सद्गुरू! आपसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। फिर भी आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?
ऐसा व्यवहार देखकर मिहिर राज जी के दिल को बहुत चोट लगी।

जब मिहिर राज जी निढाल होकर वापस आए तो
माता पिता जी ने उन्हें हौसला दिया कि...
कोई बात नहीं बेटा, अपना जी छोटा मत करो। जब सबको एकदिन
हकीकत का पता लग जाएगा, तो सब ठीक हो जाएगा।

मगर भाभी ताने मारने से बाज़ नहीं आई।
और जाओ, उनके पास...। इन्हीं के लिए ही तो तुमने अपने भाई पर तलवार उठाई थी न। यह उपहार मिला है तुम्हें.....।

इतने में धरोल के राजा का पैगाम मिहिर राज जी को मिलता है।
आप शीघ्र ही धरोल पहुँच कर दीवान का पदभार संभालिये.....।

मिहिर राज जी ने तुरन्त कला जी से मिल कर वहाँ का दीवान पद सम्भाल लिया।
करीब दो बरस यहाँ बीत गए, न तो सद्गुरू की तरफ से कोई संदेश आया और न मिहिर राज जी ही प्रणाम करने गए।

पर दिल में एक टीस थी...इन्तजार था....तड़प
थी... कि कब यह लम्बी दूरी मिटेगी.....?

इतने में श्री देवचन्द्र जी का धाम जाने का समय आ गया।
उन्होंने बालबाई से मिहिर राज को बुलाकर लाने को कहा...।

हे मिहिर राज! जल्दी से चलो....। घनी श्री देवचन्द्र जी तुम्हें बहुत याद कर रहे हैं। तुम अभी मेरे साथ चलो।
ठीक है, आप चलिए। मैं काम निपटा कर आता हूँ।

जब मिहिर राज जी नहीं आए तो फिर बिहारी जी को भी धनी ने संदेशा देकर भेजा, पर उन्होंने सही सन्देशा नहीं दिया।
हे मिहिर राज! पिता श्री अम्बर कस्तूरी मंगवा रहे हैं।

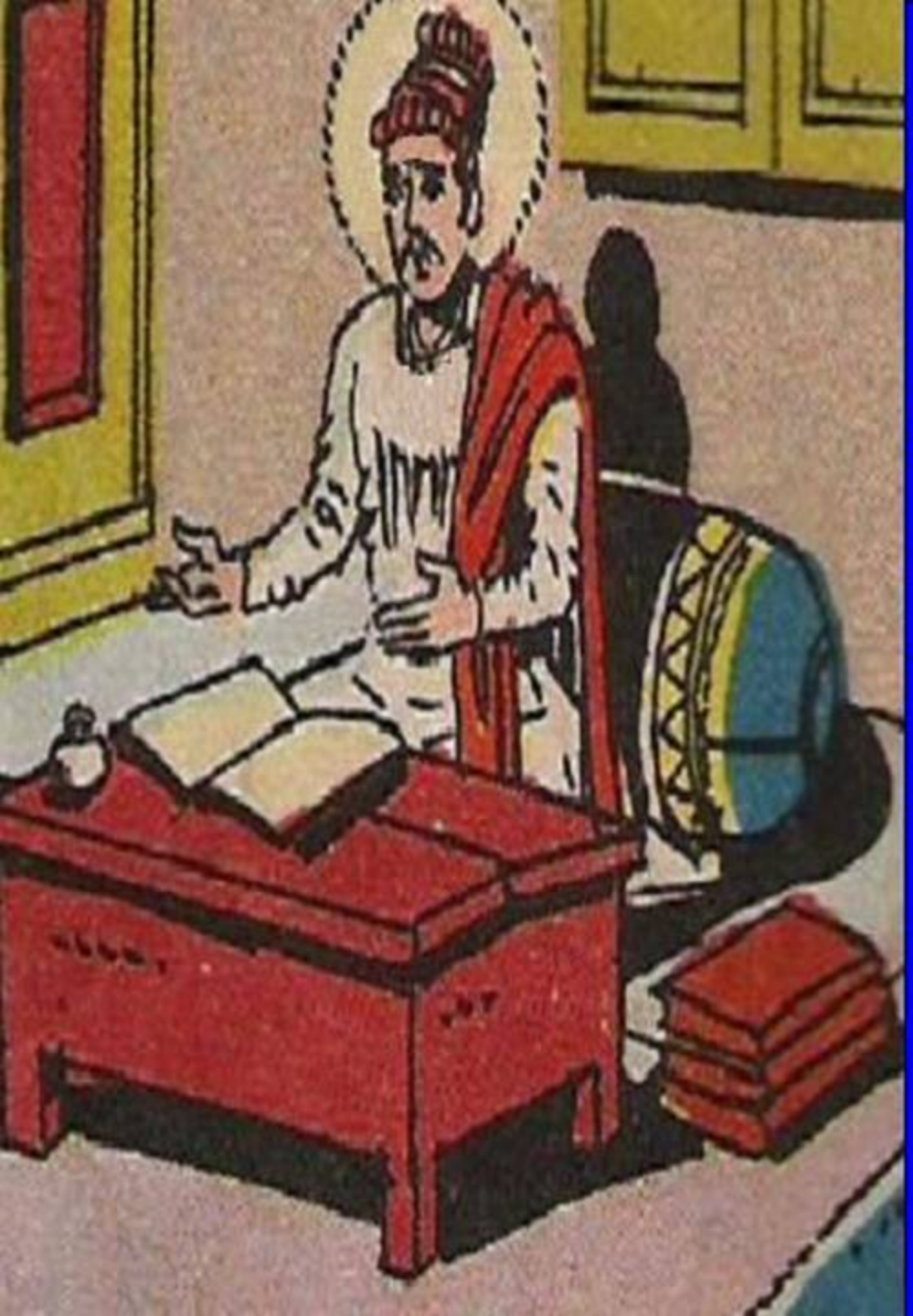

राजा ने मिहिर राज जी को कोई उनके जैसा ही शख़्स ढूँढ कर लाने को कहा था, इसी वजह से मिहिर राज जी को काम निपटाने में काफी वक्त लग रहा था।

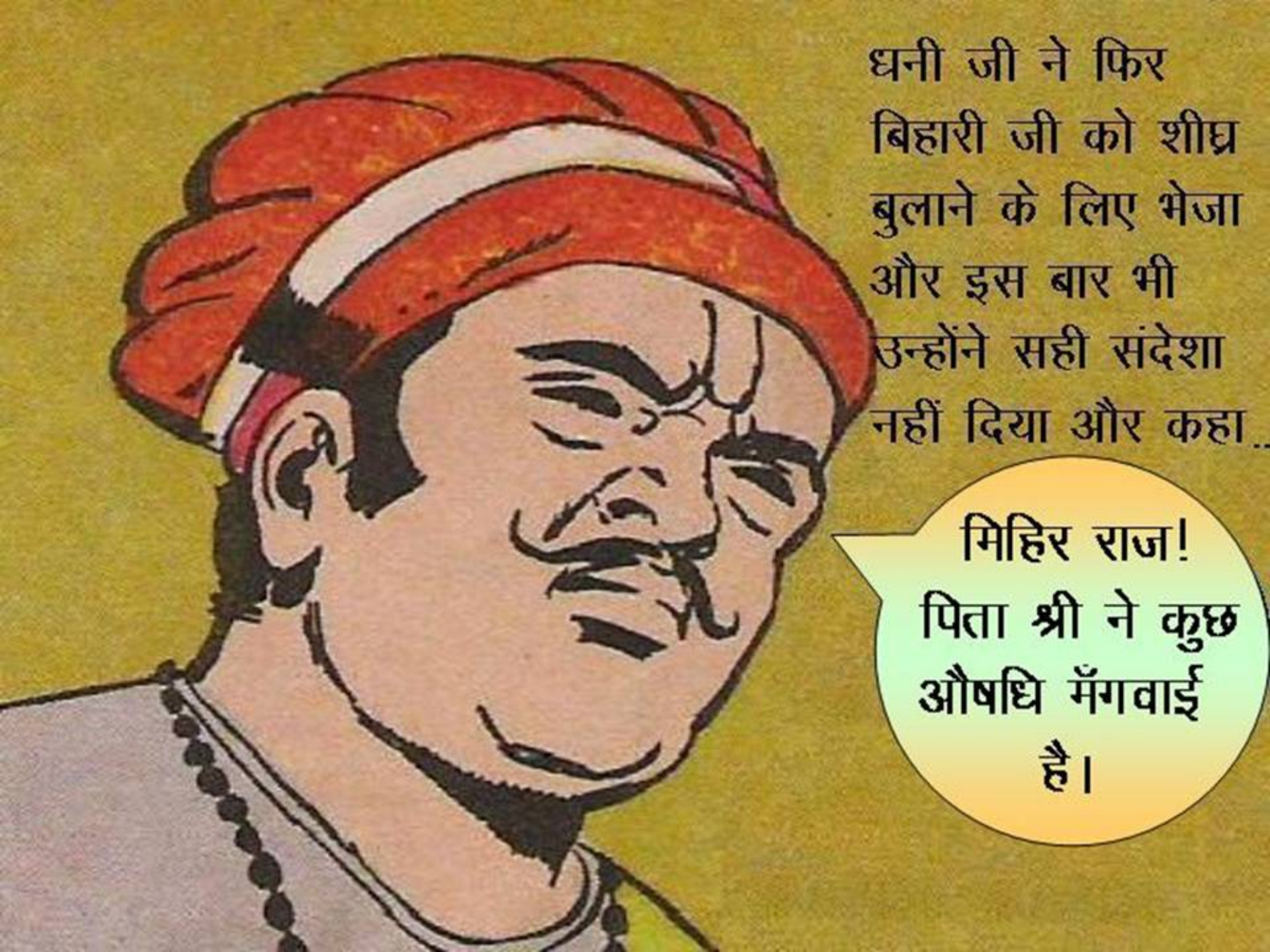
धनी जी ने फिर
बिहारी जी को शीघ्र
बुलाने के लिए भेजा
और इस बार भी
उन्होंने सही संदेशा
नहीं दिया और कहा..
मिहिर राज!
पिता श्री ने कुछ
औषधि मँगवाई
है।

लीजिए, बिहारी जी!
आप औषधि ले जाईए।
बस मैं भी काम जल्दी
खत्म करके आ
रहा हूँ ।

जी, अभी लाई

इतने संदेशे भेजने पर भी जब मिहिर राज जी नहीं आए तो धाम धनी बालबाई को बोले...

मिहिर राजको जल्दी बुलाकर लाओ। मेरी आत्मा धाम में प्रवेश नहीं कर पा रही, क्योंकि उसकी आत्मा धाम दरवाजे खड़ी रुदन कर रही है

पर मुझे तो बिहारी जी ने इस बारे में कुछ भी नहीं कहा। नहीं तो मैं उसी वक्त उनके साथ चल देता। बल्कि, उन्होंने तो अम्बर कस्तूरी और औषधि मांगी तो मैंने दे दी। खैर चलिए, मैं अभी आपके साथ ही चलता हूँ।

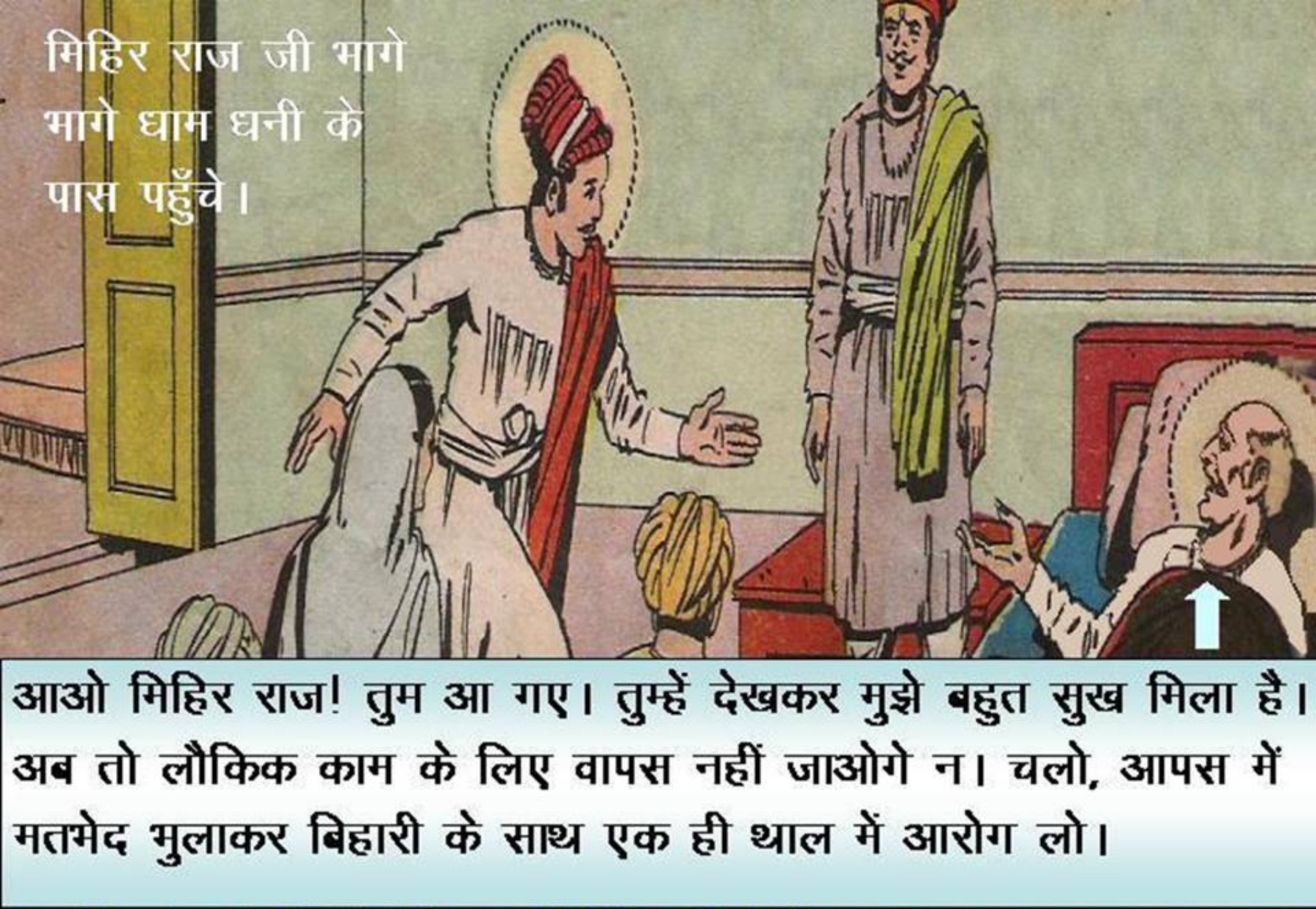

आओ मिहिर राज! तुम आ गए। तुम्हें देखकर मुझे बहुत सुख मिला है। अब तो लौकिक काम के लिए वापस नहीं जाओगे न। चलो, आपस में मतभेद भुलाकर बिहारी के साथ एक ही थाल में आरोग लो।

सुनो मिहिर राज! अब आगे की सारी जागनी की लीला सब तुम्हारे तन से ही होनी है। इसलिए सारी जागनी का कार्यभार मैं तम्हारे ऊपर सौंपता हूँ।

ऐसे ही बाईस दिन तक सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज ने श्री मिहिर राज जी को आगे की जागनी के बारे में सारी गुझ बातें बताईं कि कैसे शाकुमार और शाकुंडल की जागनी करके वापस परमधाम चलना है।

इसके बाद फिर श्री देवचन्द्र जी ने सम्वत् 1712 को बुधवार भाद्र शुक्ल चतुर्दशी की रात को जागनी का सारा कार्यभार श्री मिहिर राज जी के कन्धों पर डाल कर अपने नश्वर तन का त्याग कर दिया और उनके धाम हृदय में निराजमान हो गए।